





(335)

- (१) शीयुत दर्यपुर नगर के ५ठ नंदलालजी की तरफ से सालाजी साहिय केसरीलालजी (दर्यपुर)
- (२) , . भेठ चंदनमली पीत्रलिया छहमदनगर
- (३) , जौद्री सेठ मुनीलालनी सक्लेपा जयपुर
- (४) ,, वर्षभाणजी पीतालेवा रसलाम
- (५) , सेठ पन्नालाकजी कांकारिया नयानगर
- (६) , मास्टर पोपटलाल केवलचंद राजकोट
- · (७) ,, प्रतापमलजी बांडिया शीकानेर
 - (=) ,, फूलचंदनी कोठारी भोष स
 - (६) ,, नन्दलालजी भेइता बदयपुर
 - (१०) " इंदर गाद्मलकी छादिय लोदा अजमेर

पश्चान भेटारी केसरीचंदकी साहित (देवास) ने माह्र देशावरों के क्विने ही स्वयंसरों के, जो स्निनार्य कारणों से न प्रधार सके थे, उनके तार तथा पत्र पट्ट सुनाये, उन्हें यहां सविस्तर न लियते सिर्फ नानमात्र प्रकट किये जाते हैं—

(१) श्रीयुव अनरल केकंटरी चेठ बालमुकुन्रजी साहिब मृया, सवारा

- (२) ,, वाडीलालजी मोर्वालाल शाह मुंबई
- (३) ,, वामदार सुजानमलजी साहिय वांठिया प्रवापगढ़

शीयत सठ वर्दभाणजी ने विवेचन करते शीमान आधार महाराज साहिष तथा भीमान् युवाचार्य महाराज साहिष ने इतने परिधमपूर्वक यहां पधार कर रतलाम पावन किया तथा ऐसे मह-त्कार्य का नाम भी रतनाम को ही दिया इसके लिये शी संघ की चीर से उपकार जाहिर किया तथा शीमान रतलाम नरेश तथा ऑफीसर वर्ग, जिन्होंने इस कार्य में पूर्ण सहात्रमृति दिखाई है उनका ४१कार प्रदर्शित किया तथा भीमान पंचेड ठाकर साहिय तथा प्रधारे हुए भाविक, भाविका तथा अन्य महाश्यों का संघ तरफ से उपकार प्रदर्शित किया।इस महान् कार्य में यहां के स्वधमी सङ्जनों ने तन, मन, धन से लाभ चठाने के वास्त आये हुए साहियों का आदर सत्कार, उतरने तथा भोजन कमेटी बनाकर वालिस्टयरों के समान जो अपूर्व सेवा बजाई है तथा रतलाम संघ को महान् यश प्राप्त कराया है चन्हें भी धन्यवाद दिया, पश्चान् जपत्रिनेन्द्र की दिव्य ध्वनि के साथ व्याख्यानसभा विस-र्जित हुई। इस छमय यहां के संघ तरफ से प्रभावना बांटी गई यी।

दोवहर के दो यजे सीयुत जातिमसिंहजी कोठारी इन्दौर राज्य के जावकारी कमिश्रर साहिद का व्याख्यान हुआ, जिसके ध्यसर से जैन महाविद्यालय खोलने यादत वह ददार मृहस्यों की जोर से बड़ी २ रकमों के बचन मिले, परन्तु ने स्हीम मंजूर होने याद प्रकट किये जायेंगे। उस दिन नचेनगर निवासी सुज्जनों ने जास्त्रभीन



जंदरा के चातुमास में सागर वाले सेठ पांदमलकी नाहर सक्टुम्य पूच्य भी के दर्शनार्थ पथारेथे। उनकी पत्नी ने वहाँ फठाई की थी, इसके उपलद्य में भादवासुरी है की उत्सव मनागा गया था, जिसमें ३० प्राप्त के करीब २००० मनुष्य वाहर के आये थे।

पंचेड़ के भीमान् ठाकुर साहिष चैवसिहली व्याख्यान का खोस लाभ लेने के वास्ते पांच वक्त यहां पधारे थे |

इस चातुर्मांत में पूच्य शी को खनेक उपसर्थ सहन करने पड़े, परन्तु आप स्वयं कभी नाहिन्मत या निराश न हुए, न कभी घवराये, परन्तु सत्यपथ पर कायम रहे। और घवरानेवाले सावकों को हिन्मत देते कि खतरय की मत्त्रक बहुत समय तक नहीं 12क सक्ती, साथ ही की झंत में जय होती हैं। इसिजये सत्य को प्रहुख करो, सत्य को खंतुनोहन दो, किर स्वयं सत्य प्रकाशित हो जावना।

इस समय कान्क्रेन्स आफिस दिल्ली थी। समय भी संघ की आफिस और प्रकाश पत्र का सास कर्तक्य सो पद्दी हुई होटी दशड़ अन्द्र ही मिटाना था। जो बन दिनों का प्रकाश पत्तरात में न पैठता, समाधान करने बादत सपना सुप्रयास प्रपत्तित रसता और जलते में यो न होनता से पह बाद द्वने से ही बंद हो

अधाय ४= वाँ । सवालाख रूपयों का दान ।

وببعثوية الزياهيده

जावरा से मालवा मेवाइ की ओर के विदार में कोटीसाद हों में सेठ नाधूलाल भी गोदाबत ने सवालाख कर यों का दान प्रकट किया था। जिस रकम के ज्याज में कभी सीतोदाबत जैन खाभन होटीसाद हो में बजता है। एक तो रास्ते से दूर एक कोने में कोटासा प्राम, दूमरे कातमभोगी कार्यकर्ताओं की जुटि, इन दोनों कारणों से इस कालम का लाभ चाहे नैसा हम नहीं बठा सकते। जम्बक स्वार्थत्याणी कालमोगी काम करनेवाले नहीं निकतमें वहां वक दान वगैरह का सदुषयोग नहीं होगा।

इस विदार में पुत्रशत भी शामिल थे। सब मुनिशत नेय शहर प्रयोर खीर वहां करनेत दिन ठहरे। देनों मुनिशत सूर्य खीर चन्द्र की तरह जैनथमें की व्योति का मर्पुत प्रकाश कैता रहेथे।

पंजाद में से पीले आये हुए जावरे वाले संतों की प्रेरण। से आगरा, जयपुर और भजनेर के सावकों ने नेपेशहर लाकर पृथ्य भी



'शिधिलाचार की पहें बड़ी में टँका है ए साधु शारि को तो में सिंद को चमड़ी में सब्ज हुआ सिवाल ही सममता हूँ, विचारे दूसरे जानवरों की वो क्या वाकत परन्तु कुए म प्रतिदिश्य दिखाकर लिंद को ही वह फंसा देता है | ऐसे सिवालों को हूं ह निकाल में भी संघ जितनों वेपरवाहों, आलस्य और टालमट्टल करेगा उतना ही समाज का किला पोला होता चला जायगा | किले का एक आध गुम्मज ढीला होजाय और जल्द ही उसे दुत्रत कर दिया लाय तक तो ठील नहीं तो वह गुम्मज ही दुरमतों को राह दे देता है | ऐसे रोगों को निमृत करने की संजीवनी मात्रा एक ही है वह यह कि ऐसे सिवालों से समाज को होशियार रखना और इस रोग के चेप का प्रसार फैलावे हुए रोकना' |

प्राचीन संस्कृत विभूति खाँर गौरव के अमूल्य तार्वों से प्रका-शित थी सेप का यह खंग अपनी अस्वस्थता समझ गया है। स्वस्थ यनना चाइता है उठकर खड़े रहना मांगता है, परन्तु पत्त-यात के पाँचाट प्रयत्नों की सफलता में दिलन्य करते हैं। अप आलस्य स्वाग खड़े हो जागृत होने का जमाना है। संगर पर से इह बर खाती हुई लहरें मेलने को वैदार होने का समय है। चारों खोर पर्यटन कर, विहार को राह है, पत्तपात को निर्मृत कर, आ-लस्य, कमदा और कुसन्य का निवारण करने के वारते काटियदा



क्या का वर्ग जब कराकि राजा ने स्थापित किया तम हिन्दूस्थान की बनावट हो सकी | स्थाधमं जब राजकुमार पाल ने स्थापित
किया तम गुजरात की स्थादारे हुई | स्थापमं जब राजी विक्टोरिया
के जमाने में प्रारंभ हुझा तम लोन सेतियों बनने लगे, परन्तु अपना
धर्म आज स्थायीं, कूर कीर स्थम बनता जाता है | पहिले अपने
को इसका स्थाम करना चाहिये, द्या से शांति होती है किया का
कुछ गुन्दा हो तो इस पर स्था करनी चाहिय, इनकी राहा करेंने
जमी आहमाबना का राज्य स्थम में जहर हो सकेगा |

ग्रेन, दीन, निर्देष और मूक प्रालियों पर जुनन करना या धन पर तेज तुरी पलाना निर्देशता है जिसका प्रास अपने को भी सहना पहता है इसलिए अपने को सब जगह दया का प्रपार करना पाहिए।

रात से पूर्य भी केकिन प्रयारे, बहा वे एक सप्ताह वक टहरे ये | वहां शीशों के दर्शनार्थ निकटवर्ती मामों के सेवहां सादक आते ये | वरीब १००० वहारों को असनगर में सामयदान मिला | वहां से विहार कर जावाड़ वहीं है के रोज क्ष्म भी लांबीया प्रयारे, वहां के टाइर साहिद कुछ भी के व्याययान में साथे | बनके हहत पर पूर्य भी के व्यादयान का फल्चेत ही सासर हुआ | टाइर साहिद ने विदेने ही नियम वद्या प्रयादयान किये सीर पार बहतों हो सम-पहान दिया। दुबरे भी बहुत से लेगों ने नानप्रहार दी शिंटहाई ही

(338)





करमाहर इलका रहस्य संमन्ताना प्रारंभ कियां । इतने में फिर चकर द्वाचे घोर दर्द का लोर बद्गाया । तब दूसरे साधु गब्यू-लालकी को न्यास्थान देने की खाद्या देकर खाप खंदर पथारे और सुनि भी मनोहरतालजी इत्यादि के समन्न कहा कि " मैंने आशे ज्ञानी बद परपों के मंह से ऐसा सना है कि देंते ? षांख की दृष्टि एकाएक बंद हो लाय तो मृत्यु सभीप आगई है ऐसा सम-मना पाहिये | इसलिय मुक्ते अब संधारा करादी और मुनि भी हरकचंदती साताय हो में बालोबना करतं " ऐसा कह पूज्य शी ने चतुरसिंदनी नानक एक साधु को आझादी की तुम स्त्रमी नथे-नगर की जीर विहार करी । शावकों की यह खबर मिलते ही इन्होंने एक शहत को रेल में नयेनगर की तरफ खाना कर दिया। बद बाभुजी के पहिले शीघ पहुंचगया और मुनि शी हरकचंदजी महाराज की सेवा में सब इकीइत निवदन की। शीमान् इरकर्ष-दत्री महाराज यह सुन कापाइ सुदी १ के रोज बारह कोस का विदार हर नीमाज पथारे और वहां चिंतामस्त स्थिति में सात्रि निर्गमन की । दिन पदय होते ही नीमाज से विदार कर चाठ बजने के समय जेतारण पहुंचगए । उनसे महाराज भी ने कहा कि " मेरी आसे तुन्हारी मुंहरति नहीं देख सबता । खब मुक्तेशीप्र संदारा कराची। जीव और काया भिन्न होने में घाद विशेष विलम्द नहीं है। " मूलवंदती महाराज ने कहा कि महाराज ! संयारा

से भाई चुनीतातनी के चल्याएनी भी काये। में मोरवीया, वहां तार काया, परंतु दिना पंत्र के इतनी दूर कैसे पहुंच सकता या। चुनीतातनी ने महाराज की से बंदना कर सुखसाता पूछी, उद से होसे कि "भाई! मेरा कांतिन समय-संयारे का समय का गया है हुन्यात दुःदा दे रहे हैं।" इस समय दूनरे भी कई कावक कोर सासु पूज्य की से पास देंठे थे। उस समय की महाराज ने ' धोरा सुहुता कवने सरोरं ' इस उत्तराज्ययन जी सूत्र का वास्य कहकर सबको इसका महत्रव समन्ताया।

भिन्न २ मावक भिन्न २ झौपधियां सुचावे ये, परंतु पूच्य शी ने फरमाया कि भ बाह्योपचार करने की खपेसा आब आंवरोपचार करने दें। और आरंग समारंग निर्माद झौपधियां न सुचाओं १

वत समय सुवराजती हातिर होते तो पूच्य भी को विरोध समा-धानी रहतो, परन्तु दिन्मत बहादुर, महामटवीर अचानक साई हुई मृत्यु से तनिक भी न दरे । शिष्य-सनुदाय को शैष्या के पास

द इन दोनों बाप देशों ने कामी संयम कांगीकार कर कात्म-सायन जीवन सार्थक करना प्रारंभ किया है, उसकी माताजी कोर कहिन ने भी संयम तिया है, बन्य है पेसे वैराग्य कीर त्याग को ।

भी न हो सहा या । पूर्वित हार २ फरनाते ये कि 'मुक्त से नित्यनिवन न हो उम दिन समस्त्रा कि मेरा कंत्रज्ञात समीप है इस
पर से उनके । रिष्यों को बहुत खिंता हुई और द्वितीया के दिन
उन्हें सामारी संयारा करा दिया तथा रात को महाराज भी को
जावजीवका संयारा करादिया गया, उसी रात के पिछले प्रहर म
करीव ५ इते इस निष्टी के कच्चे घड़े की नांई की दारिक देह को
न्याग प्रवसी का जानर ज्ञात्म स्वर्ग विषया। जैन शासन रूप
जाकार में से एक जाव्यत्यनान सूर्य करत होगया। यतुर्विय संघ का
महान् जाधार स्वंभ ट्रग्या, उस समय साधुनी के १२ थाने
की जी की सेवा में उपरियंत थे।

पूज्यभी के शरीर में रहा हुआ प्राण बनका हो नहीं परन्तु सब्त श्रंप का था। राजा महाराजाओं की भी न होत के ऐसी बनकी चिक्तिसा की गई। वह स्थान पर तप्रवयो प्रारंभ हुई, दान दिया गया, प्रतिज्ञाय सी गई और पूज्य भी की धाराम होने की प्रारंगाएँ की गई, परन्तु उस खात्मा को परमात्मा के खामंत्रल की प्रारंगाएँ की गई, परन्तु उस खात्मा को परमात्मा के खामंत्रल की वेज्रस्वाही न करना होने से खर्मक्य सावकों को शोकसागर में मूच्यों में काल समाज का सितारा खरूरय होतया। संस्थार दवना योहा न होता सो इस म्युनहोत्सव को दियान के लिये होग हमराने और सालों स्वयं खर्म कर देते।

जर ने विराजते थे सब तो ने धनका लाभ न से सके, और

मुझे नेशों से तो उनके स्मितपूर्ण सुराचंद्र के दर्शन नहीं कर सकेंगे, विशातमालराचित सुराक्षमल में से मारते हुए मधुर प्रोत्साहक धमृत के पान से पवित्र न हो सकेंगे, परन्तु हो, उनका निशान यही उनकी ध्वारना यी । ध्वपन उन भी के सद्विचारों को प्रहरण करेंगे वो वे हरएक के हृद्य-भिंहासन पर धारुदृहुए हृष्टि-गठ होंगे।

पूरवभी के देह का नाश हुमा, परन्तु वन भी के प्राण्ह्य कर भी के सात्मारूर सारवधर्म का ध्येय वो विशेष वित्तृत ही होगा। यह ध्येय खुब फेंने, पूज्यकी की समर आत्मा समाज के कोने २ में प्रवेश करें सीर पूज्यकी सा आवनवल सब संवों में ग्लुरित हो।

त्तीं परे दिन बीकानेर, व्हबपुर हत्यादि वह प्रामों के शावक वक्तित होगए और द्वाचार्य भी का निर्वाद्योत्सव बहुत ही धूमधान से क्टिया गया।

चंदनारि सकड़ियों से विवा वैयार कीगई। विवा में जाग रखने का बहुवों की हिम्मत न हुई। जेत में पूज्य भी का मानुपोदेह भस्मी-भूत होगया। सावकों ने मुनिशालों के पास जा जाखासन दिया जौर

कीयुत ढाह्यामाई के शन्दों में यह प्रसंग पूर्ण करवे हैं, जिन्होंने इमारे क्षिये इतना कष्ट चठाया और इम उन्हें जीतेजी विशेष स्नाराम न दे सके। इनके द्वःस्य में इनके जीवेजी हमने कुछ भाग न तिया, जिनकी तप्त घारमा को छुद्र भी शानित न दे सके। उनके गुरागान करने की शक्ति भी इन बाहिर ज दिखा सके......िकसी कुत्वच्नी ने तो उनकी न्यर्थ ही टीका की । इन महात्मा, इन संत, इन नरम हृद्य के दवालु पुरुष का धापना भेग करने बाने सुकृत्यों का त्याग कर दिन दुस्नाया यह सब यार आते हृदय फर जाता हैपरन्त अहोभाग्य है कि षाप महारथी की जगह एक इसरे संव महात्मा ने स्वीकृत की हैं। श्रीर सम्प्रदाय के सेनापति का जीखिन भरा हुन्ना पद स्वीकार किया है, उन्हें यश मिले !

लगभग बत्तीस वर्ष वक चारित्र प्रयक्षां पाल कीर हसी थीय बाँव वर्ष वक चाचार्यपद को सुरोभित कर क्षतेक मन्य लीवों को प्रतिवोध दे पूज्यक्षों ने जीवन सार्थक किया; व्यापका जन्म, आपका रासीर, व्यापकी प्रवच्यां, व्यापको व्यापायंपद यह सब प्रतिदल जनसमूह के कल्याण के लिये ही या, व्यापने व्यपनी नेवाय में एक भी शिष्य न करने की प्रविद्या करती थी, परन्तु यहुसंस्वक मनुष्यों को हीत्ता दे उनका उद्धार निया कीर कई सुनिवरों पर व्यवर्णनीय स्वकार दिया। व्यापका चारित्र क्षत्यंव ही

(PRR)

द्याचाय ४६ दी ।

शंकि-प्रदशंक समाएं.

अप्रयान आक्षम, भेक्षान, अभ्यान, अर्था गामान, के इस्. भोगाम द्वार्मीद भागिक भागों के भागेक द्वार है भी का है, के नुक्त भी के कर्मामास का का मार्थ (भागों कि द्वार एक करें, होते के ह भी भागत विद्या भाग भीत सामने के बच्चे प्रीकाण के के के के जब विदेश की के द्वार है का मार्थ के के कर भाग का दुवर के स्टूर्ण कर्म के के के के सामने के के के स्टूर्ण कर्म के के के सामने के के के सामने के स्टूर्ण कराया मार्थ करता, का का का सामने के स्टूर्ण कराया मार्थ करता, का सामने कर के सामने करता है कि स्टूर्ण कराया मार्थ करता, कर का का सामने के स्टूर्ण कराया मार्थ करता है के सामने के स्टूर्ण कराया मार्थ करता है के सामने के स्टूर्ण कराया मार्थ करता है के सामने के स्टूर्ण कराया सामने करता है के सामने करता है के सामने करता है के सामने करता है के सामने के सामने करता है के सामने करता है के सामने के स

शार्थः रश्ची तृतत् सदा राष्ट्रात् दश दश्की कर ।

The transfer of this to the transfer of the start of the

make the exist of the transfer of a second of the exist o

तीन चार व्याख्याताओं ने सद्गत् पूज्यक्षी का जीवनचरित्र कह सुनाया। पूज्य महाराज श्री के ष्यकरमात् वियोग से समस्त संघ क्षी भारवंत खेद हुआ क्षीर निज्ञ ठहराव पास किये गए ये।

प्रस्ताव पहला ।

शीमान् परमगुणालंकत, समावान्, धैर्यवान्, वेजस्वी, जगद्व-क्षम, महाप्रवापी, आषार्यपद्धारक परम पूज्य महाराजाधि-राज भी भी १००= भीतातजी महाराज का आपाद शुक्ता ३ शानिवार को मु॰ लेवारण में अकस्मात् स्वर्गवास होगया, यह अत्यन्त खेदजनक और हृदयभेदक खबर सुनकर इस रत-लाम संघ को पूर्ण रंज व दुःख प्राप्त हुवा है। इन महात्मा के वियोग से सारे हिन्द्रस्थान में खपनी समाज के लोगों के षाविरिक हजारों अन्य मतावलान्वियों को भी अलंत रंज हुवा है। खारी जैन-समाज ने एक अमृत्य रत्न खोदा है और ऐसा फिर प्राप्त होना दुर्लभ है। इसलिये यह संघ सभा पूरी रंजी के साथ खेद जाहिर करती है। इसी मजमून का तार मुम्बई संघ का भी यहां पर श्राया हुआ सभा में सुनाया गया । यह समा संवर्ध संप का उपकार मानती है । सौर शीमान् वर्तमान पृथ्य भहाराज शी भी १००= भी जवाहिरलालजी महाराज साहित को और संप को मुंबई और रतलाम संघ की तरफ से क्यायासन देने के लिये भीकाने र वार दिया जाने का ठहराव करती है व वर्तमान पूज्य महाराज शी -

वासियों की एक जाहिर सभा हुई या । वस समय सभापति महो-दय तथा अन्य वक्ताओं ने पृत्यक्षों के राजकोट के चातुर्मास में किये हुए खबर्ग्यनीय बवकारों का अत्यन्त ही। असरकारक भाषा में दिवेचन किया या और पृत्यक्षी के स्वर्गवास से शोक प्रकट करवे गीचे मुजिद ठहराव सर्वोजनत से पास किये गए थे:—

ठहराव १ ला-

राजकोट के निवाधियों की यह सभा भी स्था॰ जैनाचार्य पूज्य महाराज भी १००% शी भीतातजी नहाराज के अवस वय में स्वर्गवास हो जाने से खंदाकरणपूर्वक अस्यन्त सेद प्रकट करती हैं।

सं. १६६७ का पातुमीत निष्मत जाने से सेवन् १६६० के पातुमीत में छासकर जानवरों के लिये बड़ा भारी हुएताल पड़ा, उस समय पातुमीन में पूज्यभों के यहां के निवास में पूज्यभों के यहां के निवास में पूज्यभों को दवा खौर सेवा धने का सट्या आर्थ समम्त कर लोगों में दवा का बड़ा भारी जोश पैड़ा किया था और पूज्यभी के सद्वोध से राजकोट ने इस हुएकाल में यहां से तथा बाहर देशावरों से बड़ा भारी कंड एकतिय कर मनुष्यजाति एवं जानवरों के प्रति बड़ा भारी वसदा काम कर दिखाया था, ऐसे एक सट्ये महान् विद्वान् पविव

वाधियों की एक जाहिर सभा हुई थीं। उस समय समापति महो-दय तथा अन्य बक्ताओं ने पृत्यक्षों के राजकोट के चातुमीस में किये हुए अवर्णनीय उपकारों का अत्यन्त ही। असरकारक भाषा में दिवेचन किया या और पृत्यक्षी के स्वर्गवास से शोक प्रकट करवे नीचे मुनिय ठहराव सर्वानुमत से पास किये गए थे!—

ठहराव १ ला-

राजकोट के निवासियों की यह सभा श्री स्था॰ जैनाचार्य पृथ्य महाराज श्री १०० म्ह श्री श्रीलालजी महाराज के अपक पय में स्वर्गवास हो जाने से कंतः करणपूर्वक आत्यन्त रेश्द प्रषट करती है।

सं.१६६७ का चातुर्मात निष्कत जाने से संवत् १६६ के चातुर्मास में खासकर जानवरों के लिये बड़ा भारी दुष्काल पड़ा, उस समय चातुर्मान में प्रथमों के वहां के निवास में प्रथम की ने यहां के तथा बाहर मान के लोगों को दया खीर सेवा धन का सच्चा धर्म समझा कर लोगों में दया का यहा भारी जोश पैदा किया था और प्रवस्तों के सद्वोध से राजकोट ने दस दुष्काल में बढ़ां से तथा चाहर देशावरों से बड़ा भारी फंड एक जित कर मनुष्यजाति एवं जानवरों के प्रति पड़ा भारी वसदा बाम खर दिखाया था, ऐसे एक सच्चे महान् विद्वान् पिष्व

दिन को जैन नया किनेन ही भन्य शासों के भनुसार पाहुने ह की परवी का है तथा जन-नियम थारण करने का एक पवित्र दिन है, इस दिन महाराजभी के तरक मीतभाव रमने वाले लीग भयना २ वाय-धंधा चेह रम है। सके तो अपवासादि कर धर्मधान में क्षितारोंने कौर इमतरह स्वर्गस्य महाराज भी की तरफ भयना मिल-भाव अद्गित करेंगे। यह तहराव भी महरवान सभावति साहिब की मही से प्रद्रारा पीकानेर तथा रतलाम संच की तरफ भेजना नियर हुआ।

डोषपूर ।

€:0 3.6.30

पूच्य महाराज को के क्वांग्वास से संप में पड़ा भारी शोक रहा । पंडित की प्रजानातजी महाराज ने वस दिन व्याख्यान येद रक्तो कीर भारी बदासी प्रकट की !

कत्तकचा ।

तार द्वारा समाचार मिलते ही समस्त मावक भाइयों ने मार-वाही चेनवर्स की सम्मति के मातुमार बालार का सब कामसाल दर्ब रक्ता। इत्योतापाट का बालार भी बंद रहा । सेवर पीवम, तथा दान पुरूष बहुत हुआ।







में इन दिनों लब्दिश न होड़ सका, इसलिये मेरी यह क्रमित्या क्रपूर्व ही रहीं।

मेरा दक्षे माथ प्रत्यक् परिषय नहीं होते. से मेरे मन पर दिन गुक्ते की द्वाप पक्षी है वह मात्र परोप्त है।

सीरही में पूर्व महाराज का का नमन मंदन १६६७ के देशात गुला ६ गुरुवा के २१ ठाएं। में दूधा। हव वे बहां के हार्रामुख में हहरे था। बनहे स्वारतान में यहां के बाहुर सहिद ब्राप्टिन नविद्य है ने ये । स्वतंत्रत के लोग सद वदारदान का राम र मन् रम वर केट का मानिह हाइम क्रम दिया था, निसंस को २५ ९ व व ब के कार इन्ट्रह समुद्दाय का समाव त्र 🕻 राज्य । पृथ्वत के स्वरत्य की है ही कादन काहर्षह राधानमार कार रहा काल इ. दन्यान यादनाओं हो दे दह थै।} रान प्रश्नित पर मान की। न्यत हो प्रचेह लाउँ हे बहुत्त्व सरता-६ कर ६ साम सन ६ ई । उन्हारतह दानत् हो हयत सरकार ह परन्हिंस सम्बद्धान द्वारात है स्वरू अर्थन ९ वट ९ व. सम्बद्ध ६३ छ। इत्यहर छ। छ या इस राहे प्रदेश करते व ५ जनमा में रह शालद शामर दहेर FOR BURN ESTERNIC STREET BY NOW YOU



ाजपूराने की कोर के कावकों एवं साधुकों की प्रकृति में न. बा। वहां सिर्फ निर्दोप चारित्र का शौक था। दुखि की लीलाएँ दारों कोर पुजाने लगीं कौर इनमें से क्तिने ही साधु भी धीरे २ हिंदि-वैभव को स्रोर मुख्ने सगे। पहले तो सद को यह अन्दा त्या । पिर चारित्र चौर मुद्धि में परस्पर युद्ध प्रारम्भ हुना । यह इस लम्बे समय तक टिकना चाहिये । दोनों एक दूसरे की तवल ता २, पर भन्त में पारित पुद्धि में चौर पुद्धि पारित्र में समा जन्यनी । चर्यात् युन्ति चौर पारित्र से परे पेथे ''चाप्या सिद्ध भान'' में दायिल हो जायते । हहय और दुद्धि होनों एक व्यक्ति के माहिक हे समान हो भवकर है परंहु दयकी के साधन-राख के समान हर्ययोगी हैं। इयातु चीर विद्यान हुएयी हैं। प्रमातु योगी। कि जो रदय और एदि के सध्य में होकर उस सीमा को पर दर गया है दर एक सुखी महाराजा है कि जिसके देखी तरफ हरवा छीर वित हाथ कोड़ हुक्स की काशा सामनी सहती हैं। इस स्थिति टक ब्रुंचने के निवे इदय की कल्यान टांगे कौर मुद्रि की बद्धताई हरूद करती ही पहेली।

जैनपथ-प्रदर्शक, ञ्रागरा ।

भीषण बज्रवात

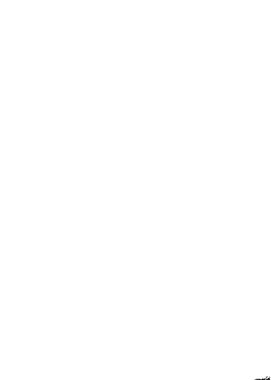
जिस पे सब को दिमाग था हा ! न रहा । समान का एक चिराय था हा ! न रहा ॥

च्यान चारों चोर से इस जैन-पर्स पर चायाते की पनपें पटायें पिरी देगकर किस जैन-पर्स के नेसी को दुःग न होर होगा। जिस जैन-पर्स के सुरुयोद्दा " महिना पर्सा पर्धः " के कारण पर दिन मारे नमोधकत में व्यक्ती पूर्ता चौनती थी, वर्षत्र वर्षा का प्रचार था, चान बही पर्म-हा सोट दें कि वर्धों के सतु-यारी नमका अनुकरण न करके क्यकों सर्थाति में पहुंचाने की केशिस कर दे हैं।

धमें हो होतहता है बबात सामीत दिवा मोता की शुरही में दूबने बाझी नीटा की फदर कराने के निये, बधे वार करते के किए हो आबु महानाओं ने महर्नित मबन्त दिया, दिंतू के ही है 'स्टिहिमा एस्टें पड़िस्त क्षारक जैन घर्ष सात सापने साधाओं से मी संचित होता जाता है। हाई मध्यम जैननमर्ग के स्वन्म, धापाय्यं प्रवर, विद्वानमण्डली के रतन, एमा के भूपण, द्या के धापर, शांति के घपासक, धमेंप्रेमी, निर्मीक, श्वष्टवादी, राज्ञिन्दिदा जैन-धमें का प्रचार करने वाले परमंदद प्राप्त पूज्य श्रीकालजी महाराज के धापाद गुक्ता १ शनिवार सेवत् १६७७ जयतास्य शहर राजपूताना में स्थानीह्या दा धमाचार गुनते हैं वद दलेंजे के उद्दे २ हो जावे हैं।

चापाट सुदी ३ शनिवार जैन-पर्म के शिवहास में बाले चलारे में लिखा जायण । जिस बात की कुछ भी सम्भावना न थी, वही चाँखों के चारे पटित होगई ! जिस पोर चापति की चारांका र े । सबीर हो बठता है बह खंत में इस दक्षिया जैन-समाज की चापते के सामने चा ही गई । चनेक ब्राशाच्या पर पानी पेर पर नगान स्थानस्थानी ही नहीं सेविन खनेकों सीकी को आबाह शीकतागर में विमानकर एस दिन निरहर काल ने क्यानक्वामी जैन-वाटिका में बजुधात करके जिस प्रशासित क्यौर दियात तक कीरम दियें दा बरने बाले सुनन को बसकी गीरहर शाबिनी हुन। वी कोई ने में बटा लिया । देखेंडे २ दिना दिक्तींबे र्रत में पहिले के इस बाद बा सदात भी कार्य हुए और दिला विद्या बहान कर के पृष्ट क्षेत्रक की हतिक सार्गर की भी दर्श में क ११६९ चरने गुरूत यह जांदन में महामुख्या दौरानी



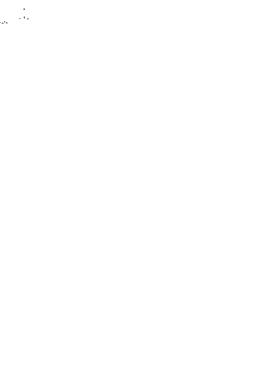


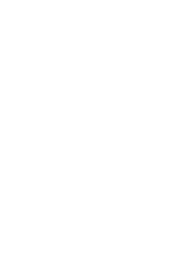


कि. जो उन्होंने जैन-धर्न की रक्षा, मेवा और अभिवृद्धि के किया अपने त्यारे जीवन को तुरुद्ध वस्तु की तरह बस्तर्ग करने में समर्थः किया। खरेश, जाति और समाज की दलति एवं योगसम के लिये: जो भागी से भागी विरुत्ति केत्रने और अध्यन में सन्पूर्ण सुली को क्षमायाम ही दिलदान करने की तैयार हुए । मृत्युशय्या पर येवमी में पहे. हुए भी रापने प्राप्तिय धर्म की हित कामना के उद्या विवार जिनके मिलाक में पून्ते रहे लो दीन दुश्चियों के अकारण पंघु ये, जिनके पतन पर एकः स्रोर शोक की कालनिशा, दुःख की वरंगे तथा हृदय-विदारक हाइ।कार ध्वनि और दूबरी तरफ उमस्त नरनारी, बुद्दे यहे और सर्व साधारण के मुंह से यहा:-सेरभ का पटहनाद चारों और गूंज रहा है दनका देह और प्राप्त समयसर्ग गहुउर में विरकात के लिए हुप-लाने पर भी वे चिन्त्री वी हैं इनकी मृत्यु हिसी प्रकार भी हो नहीं सकती । यमशत का शासन दृष्ट करती विमल-कीर्त की आहेता पहान से दबर कर है हुए है। जाता है - दुइड़े २ होइर गिर जाता है। मनुष्य यह ने कर यर रहेन पर भी उनकी पूजनीय जातमा विचरण बरावर करका रहते हैं। गरने के बाद भी उनका पविज्ञ-कौर कार्या जोवन इडनर सनन करने वालों के जीवन की पानित कौर दश करने का महान दवहार करता रहता है 1

कात शोक्षकृत कौर निराधार समूद् के मुंह से ऐसे पाक्स









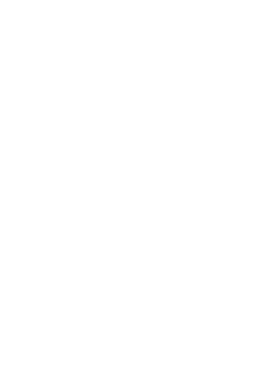


पक्सी समक्त समस्त जीविषर समभाव रख स्वकार्य में तरपर रहते हैं भीर धर्मान्ध न वन जैन और जैनेतर प्रत्येक जीव कमों से इलके हों ऐसा सीचकर उपदेश देवे और अपने धारित्र को समुन्वल रख लोगों धीर जगत् पर महान उपकार करने के सिवाय स्वकान्ता। के कल्याण करेन में भी सन्दूर्ण आराधक होते हैं ऐसे ही चपकारी गुण पूज्यशी में प्रधानता से ये। यही कारण है कि, पूज्यशी में प्रधानता से ये। यही कारण है कि, पूज्यशी में ने कारण वी साननीय और पूजनीय होगये थे।

'मा इचो, किसी जीव को मन, वचन और कर्म से दुःस्त मत दो, यह पूज्यभी का व्यतिषिय और मुख्य चपदेश था। किसी जीव को तनिक भी दुःख होता देख या सुन वे मन में यहे दुःखी होते ये और कभी २ उन्हें उनका वह दुःस्त सहन भी न हो सकताथा।

संवत् १६६७ के साल में पूज्यभी वाठियावाइ में विचरते थे। इस समय वर्षा न होने से संवत् १६६७ में भयंकर दुरकाल पदा; दया और इमा की मूर्ति के समान आषार्य भीने लब देखा। कि, हजारों विचारे प्राणी सिर्फ घास के दिना मरण की शरण में दजा रहे हैं तब उन्हें आत्मन्त दुःश पैदा हुआ। परिणान यह हुआ कि, दुरकाल पीदित दुखा जानवरों की रक्षा से सेवित लाम और पु-यपपर ऐसा सचीट सपदेश शास्त्राचार से दिया कि, इसके प्रभाव







जान जगत जाल इन्द्रबाल को सो ख्याल,
जाने बालापन ही से मद मोह को इटायो है।
स्रीधर हुकन वंद्र मांहि अवतंद्र समो,
जाको जश-बाद मत छहुन में छायो है।
दे दे उपदेश देश देशन में स्रीप भाति,
भव्यों के हृदय में सुबोध बीज बायो है।
स्यावि जीवा की सुबोध देन काज राज जाय,
जय-सारण जगतारण स्वर्ग सियायो है। व

(स्वर्गीय श्री श्री १००८ श्री पृज्य श्री श्रीलालजी महाराज का गुणगान) कंत्रक:-पंटिन एरमीनासम्ब चुवेंदी समदस्याला.

> शीलालबी महाराज पूज्य घरनारी।
> हुए बंत जाति में घर्ष पानिसत-पानी।। टेक ग य पुर्वालालबी सेट पिता के पर में । य गुण पर्टा उत्तरत मुन्तिक नगर में ॥ जात तथा गुण माथ थोड़ी दगर में । पाएकी 'गुण एक था, जो सागत मन में ॥ जय म होता है हाति, पन की मानि । दह म ति है किस, पनेपाळ-पानि।।



को पुष्ट करने वाली कई बातें, कविवार्ष और कहाववें चाहे जिस धर्म की हो उसे याद रख ज्यारुयान में कहते खीर सब शोत-समु-दाय को खानंदित करते थे।

एक कवि की भाषा में कहुं तो आहिंसा इनके जीवन का मुख्य मंत्र था चौर यह उनके जीवन में साने, बाने, की तरह फैल गया था, सत्य उनका मुद्रालेख था, तप उनका कवच था, महाचर्य ननका सर्वस्व था, सहिष्णुना उनकी स्वचा थी, उत्साह जिनका ध्वज था, चानुट स्मा-बल जिनके हृद्य पात्र या कमंहल में भरा था, सनावन योगी कुल का यह योग मालिक था, राग द्वेष के संस्थानल से यह श्रलग था, शेरे खेरे के समत्व-भाव से परेथा, सब जीव क कल्य ए का यह इच्छुक था, इतना ही नहीं, परन्तु सबके कल्याण के उपदेश में वह सदा गरकूल था ऐसा जैन भारत का एक वर्तमान महान् धर्म गुरु धर्माचार्य शासन का शुंबार, परोपकारी मनर्थ बक्ता, सनर्थ कियापान, बर्सस्यिनिष्ट सन्द्रःचिपति ४१ वर्ष की क्यारियक वय में बालधर्म बरा हमने एक धनुतन धमृत्य धाव ये सीया है |

राज्ये.ट कीर काठियाबाड़ से उन्होंने जगह २ जीव-इया की जय घोषणा १८व स्वर स सभरक रक रंति से की भी । बाउस-टिये दुरहाल को कावेदा सुरस्तिया दुरहाल काथिक विषय था, तोसी हुएसनिया में जांब-रणा या गो-रणा के लिय जो हुआ था समस्ते

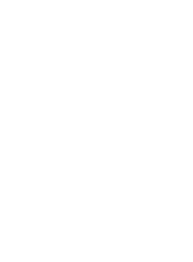


(35.4)

र्वादोड्नार ।

· 對於相信計。

mund fiefe wirm, niteriore neres nere, राष्ट्र काल अधारमधारी, स्थाप्त स्थाप । हाजा 相對自身聯門 用門的 知明 机电流发光电流 ष्ट्री क्षेत्र सर्वेशक, श्रेष्ठ होते केल्पा का वा 林中机工程15个人的统一新型门建设设备,作 聚籽等的 网络二重有利 斯斯 经税 解性 肥大 好 東部 "我似乎他"是"亲""女子 我们没有一个人 医动脉反射 化邻苯二酚 14,4. 4. 2 King 44,52 c BRI CO STANGER CO. L 1 1 474 47



हमारे देशके रज्ज सचमुच ये पग्न हैं, हमारे देशकी दोलत सचमुच ये पग्न हैं, हमारा यल खोर मुद्धि सप फुछ ये पश्न हैं, हमारा उसति का सुदद पाया ये पग्न हैं.

"All are murderers the man who advise the killing of a creature, the man who kills, the man who plays, the man who purchases, the man who sells, the man who cooks (the flesh) the man who distributes and the man who eats."

—Manu

पशु भारत का धन है, प्रभु की विभूति है चौर चापने लगु सांधव है। धर्मशास्त्र, चर्मशास्त्र, चौर चारोग्दशास्त्र, की ति छ छ पशुवध करना यह चर्यत दानिकर चौर महा चन्धेकारी है। प्रश्चेक धर्मधर्वतक ने पशुवध का-प्राचीनात्र की दिला का निषेत्र दिया है। चर्दिया, दया चर मनुष्य का प्राचनिक धर्म है दिन्दुकों के दांच यम, दोहों के पाय महाशास्त्र हम सह में चर्दिश धर्म है। धर्म पर महाशास्त्र हम सह में चर्दिश धर्म हो धर्मन पर पर चाक्य है।

पर्धतानि परिशासि नर्देषां पर्म चारिताम् । चारमा मन्यमन्तेषं स्थागे मधन चर्नम् ॥

च दिया, करा, चान्तेय, स्थाग चीन वैश्वन वर्णन इन पाणी है प्राप्ति प्रमे वालों ने पवित्र साने हैं इसके रिवस्य



करते कि इन कार्यों से देव देवी तुष्ट होंगे या रुष्ट होंगे ? वनकी ही सारप्रशासुमार देवी जगदाननी दें समस्य जगन् की कार्यान् प्राफीतात्र की बद माटा है इस हिसाब से मनुष्य मात्र कसके क्षेष्ठ पुत्र हैं क्षीर पशु उसके कशिष्ठ पुत्र हैं । सालाकों का प्रेन इमेग़ा होटे वर्षों पर क्षविक रहता है यह स्वामाविक है । माजको रिक्षाने के बारत कस के हैं। होटे २ वर्षों के गले पनके समझ है इ राहता बट विमना बेट्टा भीर मृत्येता पूर्व कुर बर्भ है र इससे को माहाएं प्रमन्न होहा हाँ हो वे माहाएं ही नहीं हैं। देव देवियाँ को राजी करने के लिये बलिदान देना है। हो हो सापनी प्यासी से क्यारी बन्तु का देना पाहिये । स्वाधी बपासक १७ वस्तुकी का वियोग महत नहीं कर सकते. इसलिए निरंपराधी पतुक्तों पर र हिराहते हैं। देव-देवी हो चिक्र बामना के भूखे हैं। तुम्हारी इनवर वेंगा आक्तार है यह पोलना मुन्दारी बमेंग्टी की है जो हुम रखते हो दे हो। इसे लेते ही गई।, दनकी द्यानाँ टाएँ से बह दाक्त होगदा देशा समग्र क्षेत सुच बादिस लेक्ने हो, कटा क्र्य-सब, श्वाची पुरारियों संगुपन के बाल में शांताहार प्राप्त करते की यह युक्ति हुँद किशाली और धर्म के नामवर भीने भारत की उपना Riter fer :

जनत्व काय न समया जादतन्त्र हो हो गाउरे जाने हैं, साय रहत्य स्थम दे हे साथ ही। सोग चावसे सून, से होते हुए चामधे



ऐसी प्रार्थना कर होक देना चाहिए कि दं जगदर्भ ! चापके दर्शन के पिन हुचा यह पक्श भी निभय होकर विचरे चर्याम् के है भी मांमाहारी उमका वप न करे, ऐसा मंकरपकर उमका को होड़ देना चाहिए! जिससे पुरुष हो, मचगुन में पृजा की यहां विधि है यह पहाति कई स्थानों पर प्रचलित है और क्षेत्ररे के कान में कहां पहाना कर उसे निभय 'चारा' किया जाता है उपदेशकों ने धमोंपदेश हारां चौर राजाचों ने राज्य सत्ता दारा इस करव विधि का प्रपार करना चाहिए!

जनाना ज्यों २ जाते बहता जाता है त्यों २ ऐसे पातकी करहे ह भी कम होते जाते हैं। किनते ही दयालु और धर्मनिष्ठ राजाओं ने अपने राज्य में इसतरह होते हुए पशुवध की देशकी जावनति का और कालेरा सेन क्रत्यादि रोगों की उत्पत्ति का कारण समक्त राज्य-कत्ता से उसे बंद कर दिया है यह अत्यंत संतोप की बात है।

सभी हो। मिहियर राज्य के नामदार नरेश ने जिस पुरुषमय प्रमृति द्वारा प्रतिवर्ष हजारों जीवों का वध होता हुझा पेद कराने का प्रशासंनीय कार्य किया है उसे सुन दय लु मनुष्यों के हृदय स्थानंद से सहस्ये विना नहीं रह सकते।

महियर यह बुरेलखंड का एक देशी राज्य है । वहां खाति प्राचीन समय से एक ज्वय टेक्सी पर शारदा देवी कास्थान है । इस क्षोर की



रहा । विचार ही विचार में समस्त रात बीतगई दूसरे दिन यद-याण में मेरे एक मित्र सौग्रुत भगवानदास नारासाजी बोरा सरक से एक पत्र मिला जिसका सारांश यह या कि:—

" महियर स्टेट में प्रतिवर्ष देवी को भोग देने के लिये इजाओं इन्हों का यथ होता है ! वसे बन्द कराने वास्ते प्रयस्त करना कावस्यक है की रुक्त १५००० वहां दोस्पिटल का मकान वंधाने वास्त्र देवी को करिए किया जाय तो यथ जन्द ही वंध हो जाय।"

इस पत्र ने मुक्ते सर्वच्य पद्य मुक्ताया | सद्गत गुरुवर्ष की खटरन प्रेरमा का दी यद पत्त हो ऐसा मुक्ते हट विश्वास हो गया और इस कार्य को पार समाने बारेंत मैंने टट संबस्य किया।

महिषर स्टेट के दिवान साहित सीयुत हीरालाल वर्क छारा-भार गाँदराओं कंजारिया बीठ ए० राजकोट के खानदान बुटुस्ब के एक बहुनगरा गागर गृहस्य है | उनके साथ पत्र स्ववदार प्रारम्भ किया। चौर रठ ११०००) के लिये मुम्बई रथानद्ववसी। भैन संघ के कर्मगर बन्छ गाँदवी के रहिशासी रोठ मेघजी भाई सोभएमाई तथा इनके भाषान साहिद्यास कासकरण जेठ पीठ मे बपन लिया। प्रधान हम कस्दर्द से (मैं चौर मेरे मिन भीयुत कोरा) महिषद गये। बहा दिवान साहब की मुख्यकार से हमें कारदान कारहर हुआ चौर हमारा मनीरब वण्ड होगा



मामदार महाराजा साहब ने इस गहान पुरुवबार्य से स्ववनी कीर्ति समर करदी सीर कई मोले लोगों को पोर पाय के कार्यकी खानि में गिरने से बपाये तथा छंछवाबन्य ग्रमुखाँ को नर्क के स्विकारि होने से रोक स्ववने लिये स्वर्ग के द्वार खोलिएये हैं विद्या स्वीर कर्यों का सदुवयोग कर स्ववना सोवन सार्थक क्यिएं भारतवर्ष के स्विहिंसा धर्म के उपासकों के मन उन्हों ने इस ग्रम प्रमुखि से कीव लिये हैं. हिन्द के प्रस्वेक भागों में से हजारों सुवारक बादी के तार उन के पास जा गिरे हैं वहां के दिवान साहेब ने मी हुस प्रमुखि हे प्रेरफ यन महान पुरुष प्राप्त किया है।



(308)

गुजरानी अनुवाद I

शाईल विकीडित ।

कोटी म्होर सुवर्ण खर्च करतां, जे कार्य यातुं नथी ।
जेती वर्ष अप्रुत कष्ट अम थीं, क्षिचित् सिद्धि नयी ॥
केताओ अगित्व युद्ध कर हो, तोचे न आहा फल ।
तेवुं महान् सुकर्म साष्य सुलम, साधु ल्या किंवित् ॥१॥
जुशे महित्यर राज्य मां विलिविधि, श्री शारदा मातने ।
थातो तो वध रे बहु पशुतकों, ते रोकक्यो सङ्बने ॥
विश्वन सुत दुर्लभे अमक्तरीं, ते पाप रोकाविधुं ।
वैनावार्य भीतालडी समरक्षमां तेवंत नामें थुं ॥ २ ॥

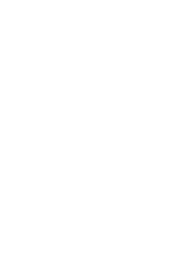
्रि: इससे सम्बन्ध रखने वाले चित्र आगे दिये गये हैं।



स्मलंती मेहता वरवपुर, श्रीयुव सागरमलजी गिरधारीलावजी बंगलोर, श्रीपुत श्रमूंमलजी गंगारामजी बंगलोर, श्रीयुव भीचंदजी सन्वाणी व्यावर, श्रीयुत प्रीमुलालजी पोराहिया व्याग्न, श्रीयुत स्व रचंदजी, पेवरचंदजी स्वजेगर, श्रीयुव मे तेलालजी कांसवा स्वजेगर, श्रीयुव कानमलकी गाट्मलजी चोराहिया स्वजेगर, श्रीयुव मिशीलालकी हाजेह वयपुर, श्रीयुव रवनचन्दजी दक्वरी वयपुर, श्रीयुव गुमानमलजी दहा वयपुर, औहरी कल्याणमलजी हाजेह स्वयुर, श्रीयुव रोपमलजी वालिया पाली हत्यादि र ।

घ्परियत मृहस्यों तथा बीकानेर और भीनासर छंप की एक छमा बाठ २-=-२० से बाठ ४-=-२० तक क्षित्र भेरूदानतीं मुलेच्दा के मकान में एक दित हुई । प्रमुख स्थान भीनुत दुलेमजी विभुवनदास जीररी की दिया गया ! प्रारंभ में काये हुए देशावरों से बदानुभूनि दर्शक तार, पत्र प्रमुख महाराय ने पद सुनाये ! प्रभात १००= भी भीलाल मी महाराज के कावस्मात् वियोग से समाज को जी हानि पहुंची है इसके लिये हार्दिक सेंद्र प्रकट किया गया !

हरियत समासरों ने एमा दिखार इडाया कि भीनान स्वर्ग-दासी पूर्य महाराज के हरदेशों की स्मृति सब के नावा मंतानों में कारोपित करने के लिये एक ऐसी संस्था कायम ना जाया कि,



- (४) इ० ४०००) या ज्यादा और इ० ११०००) से हम देने वाले व्यक्ति इस संस्था के शुभेन्छुक Sympathiser) गिने झायेंगे और दनमें से भी मंत्री कादिपदाधिकारी चुने जा सकेंगे।
- (६) २० २०००) या संधिक प्रशान करने वाले गृहस्य इस संस्था के बमासर् गिने जारेंगे झौर उनका चुनाव प्रकन्य कारिकी बमा में हो बकेगा।
- (७) चंद्रा प्रदान करने वाले गृहस्यों के नाम शिलाने हों में गुरुद्रस आभम के दरवाने पर नय चंदे की वादाद के प्रकट किये बावेंगे।
- (=) प्रदेश कारियों सभा अपनी इच्छानुसार पांच अन्य विद्वान गृहरवों को सताह लेने के लिये गरीक कर सकेगी और उनके मत गयना में आसकेंगे और उनपर चंदे का कोई प्रतिवंध न होगा।

नीट-इष गुरुड्ड का दश्स समाज की भावी संवात को भर्म प्रायस, नीविमान, विनयवान, शीलवान, व विद्वान बनाने का शेला. |

शस्ताव २ स.

भी बीकानेर संघने प्रस्ट किया कि यदि बीकानेर में सहरहै --











इन महादुहर का बस्तंन किया है वे ही उनके चारित की महिना कुछ भंशा में जान सके हैं। साधुकों में सान योड़ा हो या क्रिके हो इसकी दिता नहीं, परन्तु चारित विश्वादि तो करण होनी ही चाहिये, ज्ञानका फसही जारित हैं 'सानस्व फर्त विरिते: " जिस ज्ञान से विरित कथना चारित प्राम न हो वह ज्ञान कफ्त समस्ता चाहिये। सरवारित यही समस्त विश्व को वरा कर्ते वाला कर्मुड वशीकार मंत्र हैं। जन समूह पर दिया, सरमी, या क्रिकार की क्षेपना चारित काममान विरोध कोर्र विरस्तायी पहला है. चारित वत से ही महाला गोंधीजी कमी विरव चंदनीय हैं. पूच्य की बार बार क्यहेशा देते कि मर से नासप्त होते हैं इक्षतिये चारित्र रल का यल जीन के इन्न होने पर भी करना चाहिये।

ताषु पुरुषों का चारित्र रही स्था धन है । इस धन द्वारा स्थापि सुरा के अस्तुत सलाने स्वरीदे ला सकते हैं उसकी पूर्णया से पूर्ण-असुता की प्राप्ति हो सकती है।

सीनान् पूचारी हो सदिसान्त परिसम के हारए प्राप्त हुए वर्षेत्र प्रफीत शास के सपूर्व हान के सुस्तरूप दहार, अनुकारीय सौर सिंत पार रुट्ति पारिय की प्राप्त हुई थी। भी वीर प्रभु की साहा यही दनका सुद्रा लेख या सीर यही दनका पदिव समें या। इस साहा के पालन में वे







इंटुस्टब्स् इस भावना हा प्रादुर्भाव हरने के परिदान ने लीन होता या I Give the ears to all but tongue to the few. इस न्याय से पूच्यभी सब सुनते परन्तु विचारकर बहुत इस बोलते थे। जलरत से न्याहा न बोलते और को इस बोलते बह दिनागम के अनुकृत ही दोहते थे । पृत्यमी ना न्याख्यान अनु-पम या । विविध टापों से टम शोकाङ्गत निरास आस्माओं को यह प्रतापी महात्मा नवीन समाह देते इनकी मधुरवादी सवस करते ही कानन्दसागर बदलता । हुपुन हृदय की अन्यकारमा गुहा में जीवन व्यं वि हा प्रहाश फैतवा, शोहनव् की सात्मा जागृव हो क्रवंद्यक्षेत्र में प्रविष्ठ हे ती । इनका कार्मुत वीरत्व इनके प्रत्येक वास्य २ में ब्यक्ट होता या । उनकी मुबाव पिट्री वाली से दिश्व पर खबर्र्जाय सपकार हे'ता था। वे कर्ज़त्य पथ से आन्त पशिकों को सन्मार्ग दर्शक एडिवा एक वे थे। जिन वासी स्वच्छत से भरपूर कवि मधुर सीवनर ग मृत कर कादरों की कादरता दूर करते इसिंड का मार्ग दट'ते, विद्वार और सहिस्ता के पाठ पहाले में । क्रेंट्य पालन में प्राप्त को में पावाई न करना यह सनके उपदेश का सार मा उनके लिये केंग्र, भरता समान मा। वे ियटाझ धीर स्वस्वरूप नियंत थे। दूनका देह-प्रेम बूट गया था। इस्तिये वे सदाति दत्त सम्पूर्ण ११ नन्द्र, सद्धित स सध्येवान. कीर दिशुद्ध बरिवदान दनगए थे। नव देश यह हर समाधि हाम हमेशा इनके सर्वाद देट स्टन











्रक्त बहुत मं:बंदान रहते थे। दुरामई से दिसी विचार पोपस्टें न रहते तथा राज्य का नियम सीहत हो वहां ये मुख्ये भी नहीं, परन्तु करदावह करते थे। समाज संरष्टा की सीपी हुई जोसिम से में हमेरा। जावृत रहते थे।

शिष्यों के साथ के प्यवदार में शुमुन के बीमल गालून दीने बाला हृदय इनके खत्याया व्यवहार के समय बक्त से भी कटिन बन्दाता था। सारव के ताप का यह तेश था। मनभेद के पारण सम्बोध म दीने पर भी थे दूमरों के सद्दुद्धों की चेदरकारी न बारे थे, पान्तु धवतर विक्रमे पर हमके ग्राणी की प्रश्लीबा करते बे । पारीने पापना समस्त कीवन भी शासन देवी के शस्त में से कसर्पेत् दिया था । इसके दय के प्रताल से दुसरा कोई द्वानि माप में ही निहे, देश खबूबे सोमीचे पूछ्य भी में बहट होगाए था। एवं शान की प्रवेद्दश धने भी थी। वे सुत्र के हाद की प्रशंद प्रश्रीत विराणे दें जाने के लिये हिता समृद्द की द्वास समार बरते थे। ऐसे दिवासां त प्रतीपदत में सापद में हेरदा-इस काल कादित होते की समाम की प्रवाहर साल संबेह दर्श थे।

. १६ के शास्त्र करता, बाद देश दर हुए वार्य न नगर की से स्टूबर एक्ट र अभिक स्थापनशास्त्र होंगे हुई रहेगा



ठीक है कि लापारी के साथ अपना पहिना हुआ भेप खतारकर फॅक्ट्रे, परन्तु भेप को न लजावें, दंभ से दुनिया को न ठगें. चार चोरी करे इसमें नवीनता नहीं है परन्तु चाकी पहरे वाले, रस्म करने वाले ही भन्नचा करने लगजाँच वह असस होजाता है।

कतंवय पासन की टेवें निर्भयता का पोपण करता है. पूर्यकों का जीवन विविध पटनाओं से पूर्ण है वे कभी दुःख से दर्व नहीं, विह्मूद बने नहीं, वहासीनता से दुवसे हुए नहीं, जातमा की भूख पिडाते, प्यास दिवाने में वन्होंने जाविमानत सम किया है. पाप पुंज के मानि समान कौर अन्याय के राष्ट्र समान वे हमेशा मर्जीर कु करते रहे, कभी भी कोमलता नहीं त्याभी, सीकृष्ण को एक माहाण ने सात गारी उसे सर्लंकार की वरह घारण करती, गांघारी ने घोर साप दिया, जिसे सीकृष्ण ने माधिक सम्मान दिया, साधु सरिता की घोट होजाने पर भी भीजी ऐसे ही व्यविष्वित, ग्रंभीर आर मदाबागर बने रहें।

" आचार सिंधु महा शोधक मोती नोंते! वारी विना उदिधि ने तलीये ज्वातुं! त्यां मच्छ सिंधु मिंह, व्हाण गली जनारा! तोफान गिरि मृल तेय उखेइनारा! ते राज्योंनी उपर प्रीति राखवानी! ते राज्योंनी सहसा थव देव अंश!











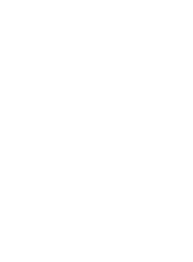












निंदा ट्रेक्टवाजी इत्यादि कई केरावर्ष के प्रवृत्तियों की । परन्तु पृत्यभी ने आनुष्य समा और शांति भारण कर निंदकों को प्रशंसक बना लिये ये. उनके साथ पृत्यभी का प्रेममय वर्ताव '' द्वेप का नाश द्वेच से नहीं परन्तु प्रेम से ही होता है " इस आत्मवाक्य की परिताई करता था। प्राथमी का प्रेममय व्यवहार जावरे वाले सुनि-राजों के निम्नांकित काव्यों से स्पष्ट सममा सायगा।

राग श्रासावरी।

पूजनी के चरनों में घोक हमारी, जाऊं कोड़ २ बलीहारी पुजजी के चरनों में धोक हमारी। टोक नगर में रेना था मुनि की, मात पिता परिवारी । गुरु मुख बपदेश सुनीने, लीनो संजम भारी ॥ पूज॰ ॥ १ ॥ आतम वस कर इंद्री जीती, विषय विकार विडारी। वैराग्य माहे जली रंगा हो, धन २ हा ब्रह्मचारी॥पूज०॥२॥ होक्स मनि की संप्रदाय में, प्रगट भये दिनकारी। क्षाचारव गुरा करने दीपो, महिमा फैली चडीदेशकारी ॥ पू॰ 🗧 ॥ नाम घापको थीलालबी, गुए घापका है भारी। चारों संग है मिल पदवी दीनी रत्नपूरी पुजारी ॥ पूज॰ ॥ ४ ॥ यीजचंद्र ज्यं कला दृश्व है, पूरण हो। उपकारी । निरखत नैना दम न होवे, खरत मोहनगारी ॥ पूज । ॥ ॥



चौषे पाट हुआ चौषमलजी महा गुणवंदा, हुआ पंडितों में परमाण आचार्य दीपंता।
कई जणा को दियो जान घ्यान और साजे ॥ हु ॥ ४ ॥
अब पंचम पाटे आप हुआ बड़ भागी.
शीलालजी महा गुणवंद छती के त्यागी,
कियो घर्म अधिक उद्योद मिध्यात्वी लाजे ॥ हु ॥ ५ ॥
ये मुनी माल रसाल घ्यान नित घरना,
हीरालाल कहे इस धर्म उन्नति करना।
जीवागंज कियो चीमासी मोध के काजे ॥ हु ॥ ६ ॥

श्रय स्तवन ।

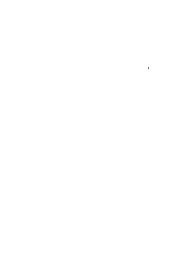
पूज्यजी सीवल चंद्र समान, देखली गुणरतनी की खान ॥ टेर जिन मारम में दीपतासरे, तीजे पद महाराज । पत्ती कालमें प्रमाट भये हो, दया धर्म की जहाज ॥ पु ॥ १ त प्रदे ६एप में घाप पूज्यजी प्रा पृष्य कमाया । धन्य है माता चापकी, सरे ऐसा नदन जाया ॥ पु ॥ २ ॥ मीठी चायी सुणी जापकी, खुरी हुए नर नार फामय सुद्र पूनम के ऊपर कियो प्रयो उपकार ॥ पु ॥ ३ ॥



कः सात और आठ स्पवास के भी नग्होंने कई स्तोक किये हैं सात २ आठ २ स्पवास के दिन भी पूर्व भी स्वयं ही स्पारत्यान करमाते थे।

वेरह उपवास का भी एक स्वोक पूरव भी ने किया था । वैयाकृत्य:—स्वयं आषायं होने पर और शिष्य समुदाय भी किया विनीत होने पर भी काप स्वयं आहार पानी लाते आर्र शिष्यों के लिये भी ला देते थे। इतना ही नहीं परन्तु पान, फोली, पक्षे, इत्यादि थोने या पानी लानने इत्यादि के कार्य में भी वे शिष्यों की पूरी मदद करते थे। इनके विनयवंत शिष्य ये लाम न करने के लिये पूच्य भी से बार २ निवेदन करते परन्तु के अपने स्वभाव के कारण प्रमाद न कर कोई न कोई धर्म कार्य में वैया- मृत्य में लगे रहते थे।

अन्पिनिद्रा और स्वाध्याय:—पूज्य भी राव को १० या १२ घोर कभी २ एक बने तक निद्राधीन न होते ये घोर एक दो या धीन बने जागृत हो जाते ये। एक प्रहर से अधिक निद्रा वे किंचत ही लेते ये। नित्य प्रति रात को हो से धीन बजे तक निद्रा से जागृत हो सूत्र की स्वाध्याय करते थे। बहुत से सूत्र, कन्होंने कंत्रस्य कर लिये थे। उसमें से दशैनेकालिक सूत्र का पाठ वो ने सबसे पहिले कर लेते थे। किर क्तराध्ययन के कितने

















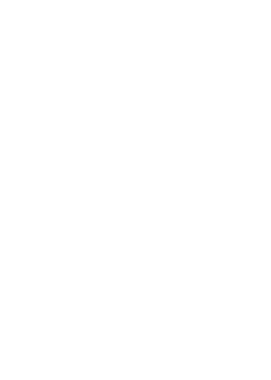






















देवेर्युवापि हि यथा शुक्तसङ्गवस्य । २४ ॥ स्वत्यागते वनशिलायिङ्गि चन्दनस्य ॥ २४ ॥

हेपूज ! देवताओं से भरी हुई भी इन्द्र की सेमा आपके पथा-रने से खुव सुरोभित हुई होगी-कारण कि, शुकादि पहिज्ञों से सुक चन्दन वृक्त की रोभा भीर के जाने तथा खनेक वृद्धों से सुक्त नन्दन कन की रोभा कल्पवृत्त के होने से ही होती हैं (यह कि दी एक्टेंस्स है) !! देश !!

> वीर ! स्वदीयद्यया मिलितः सुपूज्यः कालेन संहत (तो न जनीऽस्त्यनीशः । सस्यानुकम्पनतयाऽऽप्तसुपूज्यवर्षा इत्यन्त एव मनुजाः सहसा सुनीन्द्र ! ॥ ३४ ॥

हे बीर प्रमो ! कापकी कृता से प्राप्त हुर पूच्य थीजी को वो काल वटाकर स्वर्ग में लेगया किन्तु इस से (यह) जन नायक हीन नहीं होसका कारण कि, वल पूज्यभी एक रेसे एव्य प्राप्ति निधि को स्वस्थानायन कर गर्ने हैं कि, जिनके कृपाकटा ए से ही सर्वेस्य प्राणी सन्धनसुष्टा हो रहे हैं ॥ २५ ॥

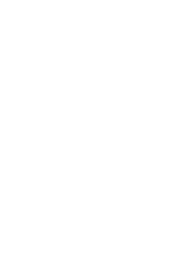
> श्रीलालपूज्य ! महिमा तव कि निगादो विभानतसञ्जितकलेखिविषाधिलीनाः ।































मांसारिक जीव ध्यान के प्रभाव का सुक्ष समस्ति है कि, ध्यान-गांव योगी ध्येय के ब्राह्म (जिसका ध्यान किया जाय वर्ष्ट्रीक क्ष्मुकार) सभीद्रकत की प्राप्त करते हैं, इसीसे ही क्ष्मूने क्षमरस्य (सहा नीरोगिता) को चाहने वाले रोगियों के लिये जनभी कम्-दमय होजाता है ॥ इह ॥

यो मासपूर्वमवदेर दहु नो हितार्थ स न्वं स्मृहोऽपि ग्रुमदो भव भव्यमूर्वे ! । तिष्टुन्यभृतोऽपि गरुडोऽहिरदस्तानां कि नाम नो दिपविकारमपाकरोति ॥ ७०॥

भाग दो मास पहिले चाप चारेव प्रवाद के दिरोपटेडा दिया पिते थे, चतः चाद समझ विचे गये भी चाप गुमदायी हो बादणदि, शेंगच्या वर्षके बाटे हुए या दिव प्रयत्त होत्वर स्टामा है हो बचा दर समझ वरते से दिव दिवस को दूर नहीं बद सहता है है।

> निन्दां तिरहर इति प्रथम त्यविन्दन् न्यायाः । स्यायाः त्याविषयिना विगवप्रभागाः । अन्दर्भित वद्योरवमानमगत्रं म्युवन्ति स्यामेर विगवनम्य प्रसादिनोदनि ॥ ७१ /

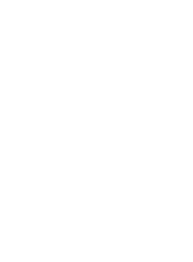
ते जुर प्रतिवादा प्रथम कापको सिन्दा दिला दर्जि देवे हैं कर कार है जहन हरता के प्रशास से प्रसादहीन हुए। कारन



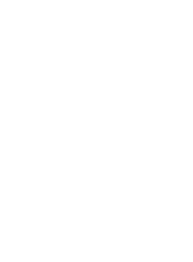






















वाले बीर स्वर्ण के नगीने स्रीखे स्थान वर्ण-पृत्यशीली को अपने देवों के बामने द्वस्थित ही देखता हूं ॥ ६१ ॥

> कारुएपनीरघरमुत्तममात्नविज्ञं चारित्र्यभूमिगुखसस्यविशेषशेकम् । इपन्ति सर्वेसुद्रनाः शरएं विलोक्य सिंहासनस्यमिह मन्यशिखण्डिनस्त्वाम् ॥ ६२ ॥

करनारूप जल से मरे हुर तथा परित्र ही। भूमि में गुराहपी यान्य को अंबित सीवित्रे सीवित्रे वाले ऐसे आत्म ज्ञानी, उनम रवक तथा बिहासन पर बैठे आपको निहार कर समस्त सजन गरी। मयूर हर्षित होते हैं। १२:॥

> ज्ञानासिमेन्य शुमकर्म वतुत्रिवं च पास्तवहत्ववहमपरं इक्तवादिश्लम्। ऋहेद्गिरं सुवि मनसमवान्द्रियार्था मालोकयन्ति रमसेन नद्वसुवैः ॥ ८३ ॥

यमें युद्ध में ज्ञान तर्तवार को पकड़ कर शुभक्तों का क्यन पहिन कर पासंड मत खंडन ग्रा, क्रीतिन्त्रय क्रांथ युक-फॉर्टर् वाली को बीरवयनों में बोलने हुए क्रापको सभी प्रसन हो होन्सर











दे गुरिनायाज्ञास्य ! कावके करसी वी भेषा सनुत्ती के जिनना सुग्र हेती भी उत्तना सुष्य सीर, सुवर्ण कीर कोही से बना हुका राजभवन भी नहीं देता है, इस प्रस्तर कविज्ञान कहते हैं । १०६॥

> बैस्तोक्यपूत ! मिनता समेव तु तस्मित् स्वजुत्पकान्तिमुप्तमा न कदाञ्डप कोञ्चि । अधाञ्चिकोञ्चि गन्तमाय ! यथा न्वमेव सास्त्रयेण मगवस्त्रमिता विमाति ॥ १६०॥

दे भगवन् ! त्रिक्षेक्यावन-पार्थनाथ ! इस त्रिदुर्ग से इस समय में जो शोभा आपने प्राप्त को भी उसे कोई भी जीव प्राप्त न कर सका नमा बैंसे ही हे गणनाथ ! आप जैसे आपही शोभने " अभीन् आप आप ही हैं. आपकी समता विवा आपने दूसरी नहीं हो सकती !! ११० !!

> देवेन्द्रमक्रिविमवाचितपादपीठ ! संस्कृत्य पादयुगलं तत्र भूरोप्ताः ! पुन्यस्य संभितदिवो बहुद्योगमाना दिव्यस्त्रोतितः ! नमन्त्रिद्यायिपानाम् ॥ १११॥

हे देवेन्द्र की मान्त्र से पुलित बरखों वाले-मुनुख ै स्प्री से















सामित्रप्रकृषिविषयाम्य प्रती स्थानक्षे द्वाने स्थाप समृत्येत्र देशस्तिकाम्बेरत् (१९२०)

कार्यन सामने बाद हैने कोने, बागू के देग बनेने कोने, तैन का एक बनेने बी इक्तुन कोने, बनायानकी बजुन्य कार्यके मीडी के श्रिमीयान , करी कवित्व है जान्यन बन्न ना ; जान्य बन सामने हम् स्वयाद बन उपाय बनेने हैं, बनना वित्तन होता है सामना हमा रामने के विद्यास बनेने के दिनीयायान नवा बनन्यन ना हमें हमें

> रिभ्याक्षेत्रकृत्तिकेत्रगातृत व्यक्षेत्रस्य सम्बद्धाः सम्बद्धाः १ द्वनः १ प्रदानते द्वित्रम्भत्ते सम्बद्धाः १ सम्बद्धाः १ १६६ प्रमुक्षकेतृत्यम्भित्रम्भित् समित् १ १६६

निव प्रदान पूर्ति के किस काचार हो रहिला हराना हुन्छ। प्रश्निप्रक्रमवर र हारम , कार्यन नवकि काच हरा है। हो हा हिल्हें प्रचान काण्या नाम की जिल्लाह कीन कीर कि बीतन हुई है के निविध के दरवाद्या की सुद्ध कीत साद्य बर्ज हेगा है। १३३ %

> मुखीनेशमगारिः म्यादिन्दिन्ते सीमेनगीतस्यादः सुद्याप्तमातः । स्ट्रीर नाद्ये द्वितादि द्याप्रेनयम सुद्यान्दिति सम्बद्धेय सुदेत यादि (१९४)



















पट्टानों से विषम तथा दम्म से बृद्धि प्राप्त ऐसे दुस्तर भवसागर में ह्वते हुए इम लोगों की रच्चा करो ॥ १३६ ॥

> विश्रासने विमलवेश्रवणेन तुल्यो धर्मादितत्त्वनिचयस्य बदान्यकस्त्वम् । शासायमानधिपसः सकले प्रतीतो मन्ये न मे श्रवसमोचरतां गते।ऽप्ति ॥ १४०॥

दान में कुपेर सदश, घर्न्नादि तत्त्व प्रदान में शासा मनान दुद्धि वाले तथा जगव्यिक्ट भी खापको में नहीं जान सदा (यही मेरी बक्रमयी खद्मता का नमृना है) ॥ १४० ॥

> संग्रामबद्धिस्तराार्णवातिस्मशत्वो स्मचेभभिद्दकिटिकोटिविपाक्तवालाः । दृष्टास्मिकटगदाः प्रत्यवे प्रयान्ति बाक्तिने तु तव गोत्रपवित्रमस्त्रे ॥ १४१ ः।

पुढ़, खिन विकास सर्व, हुन्तर समुद्र, तस्य गढ़ उन्तर हार्चे, मर्ववह मिट, बहुत सुखर, विपालित बाल, हुट्टा गढ़, सपट खीर केम ये सब उटी लग्न में तहतायहो जी हैं जिस के यह जाएका नाम कभी पार्वित मन्त्र सुनमेत्रे हैं ॥ १८१ ॥

> विज्यावियानज्ञमनण्यविमाशहरी कल्पहुमे त्वयि मुमिद्धिसम्बर्गरी



धारक, शुरू ध्यान तथा संवमादि से युक्त ऐसे किसी महापुरुष के पावित्र वरखों को जन्मान्तर में खास्मसान् करके ही खभीष्टमद, समर्थ एवं जगत्मृतित खाकरे चरखकनतों को प्राप्त किया है ऐसी हमारी प्रवत्त धारखा है ॥ १८४॥

श्रीमत्सु सत्सु न हि दुःखमत्राप चाध्मान् यातेषु खं प्रतिनिधीन् समयज्ञसुज्ञान् । व्याहीरजालशामिनः प्रदद्त्सु नासु स्त्रेनेह जन्मनि मुनीस् ! परामबानाम् ॥ १४५ ॥

हे सुनिसन ! कापके रहते हुए हमें हुःच का अनुभव नहीं हुका तथा आपके स्वर्ग सिधारने पर अवस्य देश, काल, ऐन पर्ध भाव के जानहार प्रक्त पंशिद्ध भी १००० भी जवाहीरसासनी नशराज को आप अपने स्थानापत कर गये हैं, इससे वर्तमानमव में तो हम पराभृत नहीं हो सकते ॥ १८४ ॥

> कान्यप्रयोतिज्ञनितानवकीर्षिट्न्या ब्राहृतिनीनमतिरय भवडिभृतेः । प्राप्तोष्ठ्यवादपदभागभिसारिकाया जानो निकेतनमहं मधिताशयानाम् ॥ १४६ ।

कारप मनाने से पैहा हुई नदीन कॉर्विस्पी हुन। के युन्तेन पर सम्बद रोक्स पुरुषस्पर श्लीको से विश्लोकत क निर्वारण



क्यि हुम्स है जिसमे याप ध्यान से म्यापना साज्यकार होजाया करेगा ॥ १४=॥

> युष्मत्वदानुगमने भविनां मनीपा उत्कन्ठयन्ति समयन्ति सदादिशन्ति । कृत्वाऽखिलं परिकरं गमनोत्सुकश्च मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः ॥ १४६ ॥

ष्ट्रापका ष्रजुसरण करने की इच्हा भवन जीवों को उरक्रिक्त करनी है, प्रसन्न करनी है एवं सब प्रकार से प्राण्डा देती है इसीने मैंने भी श्रापका श्रनुमरण करने की सब सरह की वैनारियें करली हैं परन्तु मर्मभेदी श्रन्थ (पाप) ही मुक्ते बारवार रोड रहा है ॥ १४६ ॥

> स्युस्त्वद्विधा वहुविधा विवुधाः सुद्गान्ता स्न्वां वीच्य मानवशिरोऽर्चितपाद्पीठम् ! । स्राहेयभोगानिभभोगभुजा निरस्ताः प्रोचत्प्रवन्धगतयः कथमन्ययैते ॥ १५० ॥

धनेको विद्वानों ने श्रापको समस्त जनमस्तरों से पृतिन चरण पीठ देखा, ये सब श्रापेक समान शान्तात्मा पनना चाहते ये किन्तु यन न नके वे सांसारिक में।गो को भोग कर सर्प के समान मूर्ण्डिन हो चुके थे, जिससे धन्हें पद्घाइ सानी पड़ी



दैवेन में हि विमुखेन भवन्तमय हत्वा हतं मम हदो वद किं न सयः । किं वाऽधिकेन मम शर्माविभित्रमम् जातोऽस्मि वेन जनवान्यव! दःखपात्रम् ॥ १५३॥

हमारे प्रतिकृत्तवर्ती दैवने जापको इरकर हमारा क्या नहीं इर लिया यह जापही कहें, आधिक क्या कहें, हमारा शर्म-कल्याण (शुभ) भिक्तमर्भ हो चुका है जिससे हे प्राणिमात्र के बन्धो ! स्राज हम दुःख के भाजन बन बैठे हैं ॥ १४३ ॥

> सम्प्रत्यसाम्प्रतबहुच्छलदम्मयुकः स्तद्धीनसाधुपधवर्षिनमाचिपन्ति । रच प्रभो ! बहुदुरचरवर्षतोऽस्मात् स्व नाय ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरएय !॥१४४॥

हे प्रभो ! इस समय कपट पटु धनेकों दंभी लोग निष्कपटी साधुमार्गो जैन समाज की हंसी उदाते हैं खत: हे नाथ ! हे दीन बन्धो ! हे भक्तवत्स ! हे शरणागवत्रतिपालक ! उन दुष्टात्रंं। के बरसाने वालों से रत्ता करो ॥ १४४ ॥

> नाय! त्वदीयचरखे विनयेन युक्ता मत्प्रार्थनेयमधुना सफलव कार्या।

स्यादस्मदादिददयं शुभभावन्तिम् सम्मान्तिया प्रतिफलन्ति न भावशन्याः ॥ १४४ ॥

है साथ शायने वरता में हमार वर्ण मिलतय प्रार्थता श्रम युक्त है-त्रिक्त है अस्टर्स अस्मान के खौर हमरे अन्तरकारुकों को गुन भावा से सम्मान-स्थापन बनावे कारण कि, भावश्चाय (अद्योविश्व मिलताम् स्त्रातिका संस्थाने हैं।

> स्वस्मित्रियात् बहु प्रय शास्त्रयमः कारुप्यशास्त्रिवस्मेन मानगर्गनः मन्मानगाऽयमदमागु रिवनवेशः : कारुप्यपुष्पवमने : बांशना वरणवः । १४३०।

दे हैंसा ! हे संयमियों से अंग्र ! ते कर राष्ट्र क्या स्थान क्यांता के समान हमाना राम राष्ट्र के राम स्थान क्यांता के समान हमाना राम राष्ट्र के स्थान हमाने राष्ट्र कर स्थान हमाने राष्ट्र के क्या क्यांता हमाने क्यांता हमाने क्यांता हमाने क्यांता क्यांता हमाने क्यांता क्यांता स्थान क्यांता स्थान क्यांता स्थान क्यांता स्थान क्यांता स्थान क्यांता स्थान क्यांता क्यांता





सन्तु प्रपूर्णमनसो बचना विनाशिष स्वात्केवलेन मननाशिष ममेदानिद्धिः । भारो न ने पदि सचेनद्रपीह सार्थो भक्त्या नते गपि महेश्र! द्वां विधाय॥ १५७॥

" तुन सर पूर्व मनोस्य होत्रो " यह आव ऐसा रहने का क्षृत भी क्ष्यकर केवल हमारे क्ष्यपुरव को आव मनमें है। विचार दिया करें तोनो दमारी क्षभिलवित शिक्षि हो सक्ती है, मालि से नस इमारे केंत्र भक्तों में द्या करना कापना कर्वव्य है कोई बोम्स नही मानलो यदि बोम्स भी है तो निष्यवीतन नहीं स्वयोतन हैं ॥ १५%!

> चेत्तियते अनमनः कत्तिखेदतथ श्रीमद्विषोगप्रभवात्परिभावतथः। हित्वाञ्चना सुस्तनिदानसमाधिमाशु दुःखाङ्करोइत्तनतस्तरातां विधेहि॥ १४८॥

विदरात बतिहार जन्य दुःस से तथा भी चरतों के वियोग से कादिर्भृत परिभव द्वार इस समय समस्त भनुष्यों के करतः वस्य पूर्व दुःसमय हो रहे हैं कत: काला का मुख माधन घरने बालो समाधी हो इहर इमारे दुःस्यक्षरों के दलन में केटियर हो जाइल 11 १४= 11



कीर कीर कार्यों में व्यम होते से तथा हुँदेव से बाधित होते से में द्वीत हीत कारके पहारविन्दों का दर्शन न कर सका अध्वा भगत न करने पाया, कटा है जगत्यावन ! मैं अवस्य ही हता गया । १६१ ॥

त्वतादिनन्तरं प्रविद्याप सर्वे मन्त्रस्थितो पदि मर्वेष्ठिहि मानवादीत्। सन्त्रत्यपि प्रतिपत्तं मवता न गुप्तो सन्त्रत्यपि वटस्वनपावन! हाहतोऽस्मि॥१६२॥

सर्वस्त का बतिहान कर मात्र कावके ही ग्रस्तागढ या परन्तु कायने भी सुन्ते निरादार होड़ दिना व्हडे वृत्ते परलोक विधार गये कद इस समय में पहि रक्ता न करोगे हो इस कनाय का सर्वेनारा अवरयंभावी है॥ १६२॥

> सर्वे मवन्तु सुविनो गद्दैन्यहकाः सक्ताः परोपक्षतिकार्यवये मवन्तु । बह्यःपरस्परविरोधमवाप्य नोदं देवेन्द्रवन्य ! विदिताऽवित्तवस्तुनार ! .. १६३ ॥

हे देवेन्द्रवन्य! हे सकत पशार्ष तन्त्र है आपको अनुत छन। से आधिन्य थि एवं शोक से मुक्त होटर अन्तर्भमात्र मुन्तर हो नहा परोशकार में लगे और प्रसन्त रहतर परस्तरिक विरोध को लोड़े ॥ १६३॥



धाप हमारे छन नधीन पूज्य श्री की रहा करें श्री अन्यकार से पीड़ितों के लिये प्रचरह मार्तरह हैं, पिपासा छुलों के लिये शीतल जल हैं, विपधरों से काटे हुआें के लिये गरह हैं एवं जिन्होंने भय पर ज्यसनक्षी जल से भरे हुए इस अपार संसारसागर से रहा की, करते हैं और करेंगे ॥ १६६॥

शद्यः प्रशाम्यति परार्मुखतां प्रयाति सिंहाहिदान्तिमहिदारचयाश्च हिंसाः । ध्यानं नितान्तमुखदं हृदये नराखां यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घिसरोहहाखाम् ॥ १६७ ॥

हे नाथ ! यदि धापके चरणकमतों का ध्यान मनुष्यों के हृदय मे दे तो निस्तन्देह शत्रु स्वयं नष्ट होंगे खयया भग छांबने छिंह, सर्प, हाथी धादि हिंसक जीव भी प्रागय पा सकेंगे ॥ १६७॥

वक्तं व्हर्पित्सकः श्नोऽपि दीनः शक्नोति ना बहुविशारदशारादऽपि । अस्मादशोऽज्यविषयस्तव ।कं गतामि मक्नेः फलं किमपि मन्ततसञ्जितायाः ॥ १६= ॥

एकान्त संभित की हुई जिस भक्ति के फल को समर्थ सुहस्पति भी मही कह सकता यहुत जानने बाली सरस्वती भी कहने को



> हिन्दा सक्षणि शहबाजिह सम्बद्धार्थि शिक्षित से। सराय सार्धी सदेव गीस्य () स्वानं विदेशि सद येन सदा अदेश साम्ब्रोद्धसम्बद्धकार चुस्तासम्बद्धारा ॥१०२०

च्छा दे हुने शाहित्य भाग इस सीधर हो प्रश्नी को सबे हैं लो को से श्रीतीशकतों से शामिदी से श्रीती राष्ट्रमा भावत वर्षे हुने भादाद अवतास शावत राष्ट्र साती है। हुस सामन एवं श्रीत शुन हीस्ट्य के बाधवारी का सबे हैं सार्थित बार्सिवीय शास्त्रह के सामी बाद ने की है से हुंचने स

> दामं रिभातु भुरते मध्यस्योद्धः शास्त्रि विना स तर दास्त्रिसम्प्य चास्ति : यद्याञ्चमदे सुन्दुस्तिः समर्थाच्यमस्या स्ट्यस्ट्रिस्सिनेसस्यास्युत्तपद्यस्याः ॥१७३॥



परिशिष्ट ३ स.

तीरपा राजा परास

केशेतना होता क्षेत्र शर्पत्राक्षी करावकी की साक है। बूटर की की श्रीत्राक्ष का पहा अवदाना दिना था, की अब नित्त की सुबंद में श्री जीका ना दिना की शांतर शाहा के साक्ष्मण हुए कीया है।

४ र्थ, सहस्य ॥

per Ita

महोरहाव है

हुर प्रवर्धि कारास्त्र कार्यः कार्यः कार्यः रंगः है। हात् कार्यः वार्यः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः के वार्तः क्षेत्रः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः क्षेत्रः कार्यः कार्यः

क्षीर भीद कर हो कारज है को उपकार को देहीदार का करते जिस को जिद हु स्वताना हाका होती के देहें के कीठ स्वीत, कहार बहार का तुरुण के बल, का नक, देशाचा आसी दिलकुत कर सहसा हो, का नका देसका होगय इस्साहस व कान्स्



ध्य

ाकत रोवकार महकारे खास य इजलास मुन्ती मुजानगढ़ वांठिया कामनार कुशलगट ता. २१—६—६ ईस्वीं ः

सिका

B. SUJANMUL Kamdar of Kushalgarh

चुंके मोसन पारिस प्रतम होने आया और जंगलमें पासभी पका होकर सुखने आगया हैं भील लोक अपनी कम कहमी से इलाके हाजा के लंगल में आग याने (दवाद) वे अहली बाती से लगाहें दें जिस से की तगाम बाध व सब किश्म की लक्ष्मी जलजाती हैं जो उन्हीं गरीव लोगों के गुजारे की यही आधारकी चीज हैं भीन ऐसा होने से राजाको भी जुक्मान होता हैं अवल भी इस आग में माकुल इन्तजाम स्वनेतिये हुकि। जारी हुवा है तगर इनिमान लायक इन्तजाम हुवा नहीं लिहाजा कवल अत गुजर जाने ऐसे बाक: क इस साल इन्तजाम होना सुनासिय शिहाजा

हुक महुवा के

एक एक नकल रोबकार हाजा सहकारे मालामे भेजकर लिख जाये के इस बक्त जनाबस्त का छाम शक्त है और हर देशन के भींज वास्ते उक्तवाने के जनाबस्थी तहकन मान ने स्थान हैं इस बास्ते हर मुख्यिया गांव से इस बता की काकी समज्ञासन हर मुखल के नायानी को प्रथम का जिया जाये के बी ज्याने प्रयाने —



कैर्स सीम में इस्स व पेरोड़ चोई मोरे नहीं ना न्याय दा दमर पीछे है भी कोई मोरे नहीं ।

> है। प्यारचेंद्र मानु का भी सदला हुरूमहुं लिखा सै० १८६५ केठ हुदी दे

शीरानजी ।

तः६ड

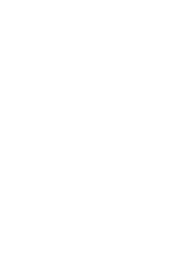
विहाना सालेका में हैं कुन्न नहीं देगा । रावतकी साहत की ब्रह्मताहिंद्रजी साहदी का पंच करत करना काया जी पर होड़ा।

कालाव में महाली नहीं मारागां गाना पगु वलावतेपर तीतर काले परायएमें कोई नहीं मारेगा सीर काल सबसे का जानवर्षों के सिवाप दिएए गेज नहीं मारेगा सीर वरर लिख्या मुजद पर नाए में कोई मोरागा दो सजादी जावेगी से ० १९६४ केठ दुद १० द० नगीं ही राजा हुल्लरा हुक्नमुं भावण कालीक देशास्त तीन महीना में जानवर मात्र नहीं मोरेगा सहीवरे सीदे नरिसंही राजी दलर सा केटा से ।

नकत रोवकार महक्तेम खात व इवलात हुंशी सुदानमल गाँठीया कामदार कुश्कार ता० २१-६-६ ई०

महार हाप

B SUJANMAL . . KANDAR OF KUSBALGARR.



पर पुरा छत्तर इस यात का कर दिया जावे के वो पाटे के सारों के दियाजं को य पुत्री छोड़कर उममें छापने पायदे का एतकार कर लेवे बनकल सारी पुजीस सुर्रास्टेन्डेन्ट की तरफ भेजकर हहरीर हो के इस यात के निगरार होके ऐना पाकान गुज़रे क्योंकि यह एक सवाब का काम है इस में इसमें हर मुलामजीय ने यादीली कोशीश छरने में इसी साल इस यात का नतीजा जड़र में छायेगा कि इस हुकम की सामीज य पायवेदी रीपाया इसाके हाजा के जानीय से या इनमीनान हुई तो निद्याय दर्ज सुर्रा का वायस होगा और एक एक नकज़ इनका बरनाय वामील मसन्दरें गोहकम पुराव छोटी सरवा को भेजी जाकर बजी नहीं पार्रेंस में रहे। फक्त

सिका

ल० कामदार कुरात्तगद्

हजुरी चेनाजी साधिन श्रमावली ई मुजय सोगन कर्या मारा द्दाय मुं जनावर पिलवुल मार्च नहीं सीर घरे कार्ज नहीं माने पारमुजारा संजन है।

इ० जासमसिंह चेनाजी का कहवासुं

हाइयां हमनायविहली बरोली साई न जनावली लागीरहार को भाई हरसा हुली, तीतर माहं नहीं राज्यं नहीं गाने पारमुलास सोगन हैं। द० लालबर्भिट हमनायां महली सा कहवासुं



हरहार बंगेरे से भी होड़ावा गया सो सादित है जानवर विगेश र मुजद सं १८६५ का जेठ वही दुंगबार !

भी रावली तरफ से

वेशास कार्तीक में कसाई जमावस ग्यारस बकरा सज नहीं . हरेगा झागे भी दंदोदस्त हो परस्तु झद भी पुल्डा राखा आदेगा ्यारा ही महिनारी अमादास ग्वारस भी माफ है कावीक वैशाख दी महिना माफ कौर माराही महिना की करपारस माफ दें साल में चेत्र मास में राष्ट्र रात देवगन बारे हैं कसाई दुकान नहीं करेगा दिखा झीलरा रोज-ग्यारस समावाय लुंदा में शिकार नहीं करेगा । द० प्रमालात गंदा भी हुद्धर का हुवन से

थीरामेश्वरदी तिक्को हे

⁽ सबहप की ठाकरां राज की १०४ भी मोतिजिहती सामावर्डग त्रैनस पापु पूत्रको महासात भी भी १००८ मी भी भीतालको महाराज मोटा उत्तम पुरपारी पपारणी बादर हुमी तरे में बादणने गया दरे हुए। मुझर सोगन विया है सी जावशीय पार्श रावसं १--शिशर में सर को नप किया दुने केई ज नगर मध्य

राधमुँ नहीं मारमुं



मारावेष कावरंष थां करण कीशी के मारवाह मुं मों के भी पृष्य जी पतुरमामी करवान कावे हैं मों बढ़ों में देवार हैं के मारो कावों ये हैं हैं निमित्त कुद उपकार बख़ी कावे हैं वास्ते काठे हुएम है के सावन काविक वैद्यास्य तीनों महिना कमाई दुकान सदेव बंद रहेगा कीर द्वावियास्य अमावन नो काने सदैव मुं पांडे हैं जो। बसे हैं हैं।

सियां हे

कंट १६६४ वा केंग्र सुद १३ वन सीयारी सिंह

----एक्तिगडी धीरामडी

भीएकतिगदी भीतम् सक्षमान गोसुन्स मेबाह

संबर की

242

महोरहाप है

श्वारीकी भद्दारात की पूरवर्षी जहारात की बीहरावकी भे इतिके में सुन्दे प्रधानते हुकी चायरत प्रकेश भी तक के कहा सक्षेत्र भी सक्ष्म से पाकी हुकी, की उत्तरेश की तक के कि कुछी सक्षेत्र प्रभाव सुन्द प्रकार कुछी चार की साथ की प्रदेश सुन्दे कि को से अपने प्रसाद का प्रकार की बाहरात की मालाईक















करवाता ठनाव ता. २ सञ्चेत्वर (२२० ना रोज राज्य तरस्वी प्रसिद्धयमो है. सने ते माटे धरे ने नानदारनी मानपूर्वक सामार सानपूर्व हो। सानपूर्वक सामार सानपूर्व हो। देवा सानपूर्व हो। सानपूर्व हो।

बन्भ टेरम संस्टरहर्दश्चे रेडि '-क्रक्ट्रे सं.४.]

मेवर्जा योगलः शांतिदास आशहरकः

सरएक पनुवाद

13)

निम्दर हीनलाल गरोपादी अंजिन्सि सहितः ही ए. दीवान नियामत महेर तारीख -२-६-१६२०

मध्य १२६७

। मही हीगदालर्वः घटारिया

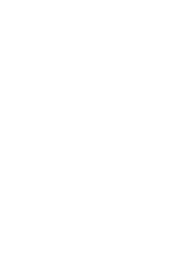
महीवर राज्यका महीगानां पत् करीने प्रकृत करा बीजा प्रा-रिविमाने बतीरान काणवामां क्षापे हो का मही असेर मही होगा भी हुएन करवामां काले हे के अप देवी शास्त्र करा महीगमानाप्राप्त



प्रत्यमञ्ज्ञानको भिन्नाभीमात्राव कृतः ए अंत्रिक्तिमात्राद्वः के से या विपाल बर्दात वर्षे । शहुन्तः हैं। हिस्स स्टब्स











परिशिष्ट ३

पूज्य श्री का मुसलमीन मक्त सैपद श्रसद्ञ्रली M. R. A. S. F. T. S. दोषपुर ।

सैपद क्रसदकती तिखते हैं कि, उस भी १००= भी पूज्य भीतास्त्री नहाराज का चौनासा डोबपुर में हुआ या, नुस्ही भीपूज्य महाराज के वपदेश के फेजरुड़ानी (फाल्मज्ञान) कहुत पहुँचा। हुमझी काँगूव्य महाराज ने अत्यन्त हुना करके नौहार मंत्र की कुपा करी और खुद शीपूर्य महासात ने अपनी हुकन फैडदर हुरान (सास भीमुख) से दुवानी नीकार मैत्र पाद कराया तो अवतक अपता हु और बढ़ा काम देता है-अनक्षम का उपेद्रा सेने के बाद उन्हीं दिनों में मृह लेगों से बड़ा बड़ बड़ाना पढ़ा. यहा दक कि मृह होगों ने हुने अन में मरवा हाहने हे उपाय हिये थे। और दो दोन जगह दूछ लोगों ने मेरे बद्दम पर बोट भी पहुचाउ यी. इस बजह से कि. मेरे भाई लम्भिट्टेंस जिसे गुड्गाव (केंग) हरियातः । में हान्टर थे । से मैंने क्यते आई हान्टर महत्त्वा ने कड़कर तमाम जिले में बराँव ३००० तीन हलार के गाँकी ही दव होने से दसाया। तद कि जा उन नरफ दंला हुआ या कोर मेरे माई हाक्टर मजकूर को हर तरह के फल्जियरण इसिल दे। इस काररवाई से रियासत जोबपुर में इस दया के काम के दावन



मार २ कर वर्गिंग करते थे. जो कि, वहां पर उस रईस ने मुमको साल उनकी गुराकिल के वक युलाया था। मैंने वहां पहुंचते ही उन रईन साहर से खर्ज करारी कि, में अब नापिस जोधपुर जाता है। आपका मुक्तते जो खास काम है वह धरा रहेगा, लेकिन वन रईस साहित का सुकते सास तौर से मवलव और गराज थी उन्होंने जल्ही से मुजाकात की और मुक्तमें पूछा कि, विगर मुंचाकात किये वापिस क्यों जाते थे। मैंने कहा कि, मैं सुनता हूं कि, खाप हजार इवार कागलों का रोज गरीह फक्त मनराजी के शकल में शिकार करते हैं।इससे आपकी बड़ी बदनामी हो रही है और लोग गालियां देवे हैं और फक्त धावकी दिललगी के लिये हज़ारों जानों का मुफुन ये नाश होता है। इस दरह उनकी धई ताह सममाया तो र-ईस ने आपन्दा के वास्त ऐसी हिंसा करने की सौगन्द केली। इसी तरह एक रईष साहब को क्षेत्रपुर में बड़े सुक्रजित हैं। वनको जनकी इस किस्न की नामवरी जाहिर कराने का बहुत शौँक हुन्ना तो उन्होंने बच्चे बाली छुतिया जंगल बग्नेरह से तलाश कराकर मंगाना शुरू किया और उनके शारीर पर चिथड़े लिपटा. जिपटा कर लैम्य के देल के पीपों में उन कुतियों को इलवा देते खुप नर करवाते पीझे दिया छलाई बढला देने जब यह बच्चे बाली कृतिया जलती कृरती उद्यलती वह रईम साहिय मय जनाना के बहुत हुंसते न्तुरा दोते और इनाम वकसीम फरमाठे इसी। तरह सैफड़ों जाने छतियों

बार गर्भों की सन्दर्भ साहिब ने ले हाली, जब मुक्को मालून हुया
में खुद कन रहेब खाहिब की 'लिदमत में गया बीर बचनी जान
तक देना मंजूर किया बीर हर तरह समका कर बनके बाहन्य।
के बाते सीगन करा दी। लेकिन इस मीके पर यह ज़ादिर कर देने
कावित है कि, उन रहेस साहिब की इस पाप के बद्धाम कत हाथा
दाय मिल गये। निसको मारवाह के दोटे बड़े। जानते हैं। ग्रुमलमानों
पे पक महाराम मीलाना रून हुए हैं। उन्हों ने भी बन की बायों में
लिखा है कि;—

तो मशोले सौफ व्यर हरूम सुदा। देरिमसो सख्त मिसो मर तरा॥

जनावेमन इसारे कक्षेत्र कांवते हैं। इसारा दिल दुवना है, इसारी कलम में जुरा ताकत नहीं कि, इस एक शिम्मा बरावर भी जोसाक इसारे बरम दयालु, वरस क्यालु, सरव धर्म की नाव, झान के समुद्र, दया घर्मको होली गार्देष, भी भी १००८ भी भी पूच मी भोजालगी महाराज का क्या लिख हो के आपने हमारे गार्थनो को सरव मार्गी जीर हमारे दिलाश है के आपने हमारे गार्थनो पर चामिल बना दिना था। सेकड़ी चौरोंने चेंग्री चा गर्थना धर्मा , होइ दिवस में, सीने बालस्थित करने थीर कमठे फेंड दिवे थे भीर , ही बाड़ी वर गुकरान करने लगे थे।

(१०५)

Indeed, I will never find each a prop-kari Guru on this world, like shri pujiya Shrilalji Maharaj again. His fatherly love & sympathy bring me into force, to weep for him once a day at least.

My Jiwan is usless now without his superium satsung, what I can write you, Sir, more than this?





एंबम् च्यौपारका समस्त भार धापड़ा खापने वीत्र बुद्धि से (सबको यथोचित संभाता परंतु सांसारिक कई अनुभवों ने आपको वैराग्य में तल्लीन बनादिया आप धंसार को असार समक बैराग्यवंत है। दीचित होनेकी तैयार हुए, परंतु आपके यदे वाप (पिताके बदेभाई) ने आपको आहा न दी । अतएव आप स्वयं भिन्ना लाफर गुजर करने लगे. वर्ष संबा वर्ष यों व्यतीत होने पर आपने सपकी आज्ञा ले महाराज श्री घासीलालजी महाराज श्री मगनलालजी के पास कायुका के समीप लीमड़ी प्राम में सं० १६४८ में मगसर सुदी १ को दीचा श्रंगीकार की. परंतु दीचित होने के १॥ माह याद ही आपके गुरुजी का परलोकवास होगया इतने अल्प सगय में गुरुजी ने आपको अत्यंत शिक्ति यना दिया था उस गुरुतर मोह के कारण आपका मन उचट गया और आप पानल से होगए, पाने पांच बाह पागलावस्था में रहे | दरम्यान तपस्वीजी श्री मोतीलालजी महाराज ने आपकी खूब सेवा सुश्रुपा की। आपके **उस समय के पागलपनेके घावों के निशान अभी तक मीजूद हैं।** आप-को भले चंगे किये और सब चातुर्मास प्राय: अपने साथ ही कराये, इसी कृतसता के कारण पूज्य जनाहिरलालकी महाराज तपस्त्रीजी की आज तक सेवा कर रहे हैं और इस उपकार के स्मरणार्थ आप के पूर्ण बहसानमंद हैं। दीचा लिये पश्चात् आजवक आपके निम्नोक्त ३१ चातुर्वास हुए हैं।



सन्य मंगों का श्रवलोकन किया है। श्राप मंग्हन के पारंगत विद्वान् होकर दिन्दी, गुजरानी, मराठी श्रादि भाषापं बोल सकते हैं। श्रीमान् लोकमान्य विक्रक शापमे श्रदमदनगर में निले थे। श्रापने जैन पर्मे के सम्दन्य में श्रवनी गीता में कई मुपार करना चाहे थे श्रीर लोक-मान्य ने मंजूर भी किये थे। जैनपर्म के सम्दन्य में जगन् प्रसिद्ध लोकमान्य विक्रक महाराज के सुवर्णाकित शब्द ये हैं—

"जैन चौर पैदिक ये दोनों प्राचीन धर्म दें।परन्तु घाँदेसाधमें का प्रलेखा जैनधमें ही हैं। जैनधमें ने चपनी प्रयत्तवा के कारल वैदिक धर्म पर कभी न मिटने वाली ऐसी उत्तम द्वाप विठाई हैं "

वैदिर पर्म में चहिसा को जो स्थान प्राप्त हुका है वह नैनों के कारण हो है। चहिसा पर्म के पूर्ण वास्ति जैन ही हैं। जहाई हज़ार वर्ष पूर्व वेद विधायक यहाँ में हज़ारों पगुओं का वध होता था. परन्तु चौबीस सी पर्प पहिसे जैनियों के परम तिर्धेकर सी महा-सीर स्वामी ने जब इस धर्म का पुनशेद्धार किया तब जैनियों के क्ष्यदेश से लोगों के पित्त ध्योर निर्देश कमें से विरक्त होने लगे और शीरे २ लोगों के पित्त स्योर निर्देश कमें से विरक्त होने लगे और शीरे २ लोगों के पित्त में झिहसा हद जम गई। इस समय के विचारशील वैदिक विद्वानों ने पर्म के रहार्थ पगुद्धिसा विल्कुल पद करदी चौर कपने पर्भ में झिहसा को सादर पूर्वक स्थान दिया और झिहसा पंडन कर स्थान दिया और झिहसा पंडन कर स्थान दिया



शिष्य मनुदाय कीर की कोटापुर माहाराजा साहिद=

से हैं है एउट समें नी दें दह दें से न न राष्ट्र के जिल्ला कि जिल्ला की जिल्ला का दे के का दे में कर दे का कर के जिल्ला का दे की की के का के के जिल्ला की जिल्ला की जिल्ला की जिल्ला की जिल्ला की की जिल्ला की

द्भ इन बार ने दियार में थे कि. जानसाल में उट्टों से धू बार मालुसीय स्वयं में दिया पहेंगे. बानसा बन्धेयान साहरद माहिर में बाना बाहिरे केंद्र कि १ कारसाल में नमें बताह मील है जर बार बर्ग हैं. चौर की माहबाल माहिर मॉलड़ि मीलहे नहीं इमानद की माल माहबाल महिर में साहित बरे !

 ३ तर्व दौर्द धेई भी चेंड करतात के बाद दें निर्देश गर्भाष

है। कारशाला का सह करते में शेलारी बनते हैं परहु सहाराज सहित्य करोड़ में शेलारी बही है में पाहिने

५६ (बूनर केंद्रे) देल्यों बहुताब सार्वे के बावरों में हो ते



हि, में भी जैनदलों को सुनना समनना पार्टा हो। इस समय महाराज साहिद के पास देशी हेन्द्रपुष्ठ मीजूर भी जिसमें उपर सेन्द्रज रलेक सीर बीचे खेप्रेडी रुख्तमा भी या। यह दिताद सादिव को दी सो साहिय ने बहुत सुर्शी में हे भी (वस पड़में बेल्हापुर के राजा साहित ने हास्टर साहब ने सास वौर पर इन रायों में शिकारस की हि, वे हमारे गुरु महाराज हैं जान कर इतका मंत्ररात बहुत तकारह धीर महरदानों से करें " इब बाव का भवर दास्टर बादिव पर ऐमा हुआ कि, जो पाउँ बाउँ जनर तिस आपे हैं उन सरहा इन्ततान महाराज साहिद के कल के अनुवार हुआ और अदेशन करते समय भी बहुत दवरतह से कान किया कीर साटारा वाते मेट मोटीलालडी को भी अप्रेशन के समय में मीजूर रहने दिया । और न्द हास्टर साहिद मी सीर असटात के कुत कर्मनाधी हिन्द अपेड बर्रेरह थी महाराज साहिद को सुद महाराज के नाम से दीलंद हैं दोनों साधु महाराज और इन लोग महाराज साहिर के पास राज दिन हाजिए रहकर बन्न के अनुसार सेवा करने पते हैं। और चाहार पानी आहि हा भी साधु नियमानुसार ही हाम बतना है।

क्रमेरान के पूर्व दिन केन्द्रापुर राजा साहिर केन्द्रापुर से सास भी ६००= भी पासीसातज्ञों नद्दायज्ञ के दर्शनार्थ केठ क्टब्लंड्झ को दमा केन्द्रापुर संस्टव के पंडित दिगनारी जैन को साम तकर निरिजन करन्याल में आपे कीर भी महास्त्र के सामने हुसी कर



3.8 "

Mie Emiliania in in

şů,

श्रीकामान् स्वरति बोल्हापुर सरेश एत प्रशेशप्रयस्य प्रतिह ी:

शीनकं मी १००८ मोशिकाणकी महाराज्ञानां पुरयप्तर भी १००८ मीकवाहिरकानकी महाराज्ञा मुशिष्यः भी १००८ प्रामी-लानकी नहाराज्ञः समर्गान स्था सरक्षात्रिय प्रामस्य मैच्छ्याज्ञेन । भागेन धुकैक्षाना-नावक सांत साला भाग्यत्वस्य मृशिक्षाहि प्रयान किन तथ्य विषयान - रमलामजासीना स्थित एवे महाराज्यानः हसा सर्व विषयानुकालारिषुवेन जनशास्त्राक्ष्यादेशांशि प्रथानोद्याविमावानु सहन्तीति सामकीनानुवाल ।

यद्य सी डनवानि स्तु श्रीस्मादिवास्त्रद्या स्वेयुर्माहत सः व नानुसाव®ा साम्य शतः सठ सामेठ गुठ द्य शनिवासेर ०२९ १८८७





इपादि दहांनों के दाय गमनाने से तथा विवादान सीर वहरू. इस ओड हीर वालोक में पाप होते वाले ग्रहान् सुन्यों से सम्बन्ध रक्षाने बाजे कासरकारक नगहेश से मदणाजा साहित कहे प्रधीन बुए चीर कई मन्त्यांन शतजान मनुष्य के हाथ गाय, चैंस कीरर बेचन की प्रतिका भी। निवाय होने करने में होते हुए गैर अप विश्व के से और को के भी संघ ने जनरज मीडींग यहा गरी तुमन से रोने कटन का रिचान बड़े धाम में बंद करने वाला द्वहराय पाप किया का नका भी कि। हरत कर कुछ कुछ भी भूके प्रवादे । सदासाम भी बन्दबन्द्रको क । स्थान सूत्र आन चीर कित्रती ही बुंडियी के भीती न काल बर वा और अपनी को शकाओं का समायाद किया - महाराज का बणवजर्ती वर पूर्व को की छात्र बुद्धि हैं वे है मनव र मा अल्लाहर देले रहन है।

ता - १३ - इ. १२.११ के होत्र पूर्वत की जुड़े बबारे की द्वार है। इस ११ करा व ट्याना में ट्राइंड ताक ठाउूर मादिव कि , तो प्रान्तव की वाजन के न्यान के पार्ट के वाल के प्रान्तव की कि की कि के प्रान्तव की कि के प्रान्तव की कि की कि के प्रान्तव की कि के प्रान्तव की कि क

न में तार के कि कर रहा में ता में शुरा नुसार इस्तापुरम के ्र , श्यापन में इस्ता, में नामक इसका भी करा, अने क्यों वा

ाव त्रिष्टि रत्यदा क्यादि वर्षे ग्रेस्टर हैं। बहुर क्यादान है त्याल

इस्ट २१ वी

रोजकोटका निर्द्यान्हीय चातुर्मास ।

दूर के राक्षे के हिए हैं होजर रोगारे दे, बांब में बादु की क्य के बहुत बहुत्ती की करता देश बद र स उद्देश हैं। हुने पन हुर्मंद रामधेह ब्रह्मा है रह के अहर है बाई से बेबसेयाद है। बाल्यक बहुद बार बरहा है। प्रमुख्य दिन्हें बाहें भी देंदे में ने में के मान्यतन ने विदने रमाशाधी पुर पर हान दित **(**' है। फलक्या, फलक्य के उस्तु में ही करें दिया है क है यह महत्रद कर है हि, मन्द के केली होते के बरते करव भार को रहत सबते हैं और बादे हमा होता सहसा विर्देश में हुब केंद्र में मान कर सकते हैं " मंद्रुत मार्थर साथ कारमार्थर क्षेत्र कहे हैं कि 'लिन्डि नाम केंद्र करण केंद्रे नकें ने बर्ग कोई करें हिंद्र नहीं होन्द्रका, बार्च के क्षिप्त करने बजी गति है साथ करता दिख्य हुई होना हाहिये।

बूचरें केई होते हो रोके स्वयं दिशा को तककील य स्कारें 'परी बारी को कर होते, परस्तु शत केंद्र में ब्यान उद्धलाई को पीन दिन करने का प्रदेशिक को निक्षय जाई एक ब्रक्ति ने स्वयं



संव १९६८ का कालुर्मीस निष्यत जाने के बढ़ा दुरबाल पराई परंग से ही मेपराज की कृत्ता देख, हुम्झात संगव समझ, द्या और प्रतेरहार दिवर पर महाराज भी ने खपनी महत हुन्य करी बा करोड प्रवाह रूप बपदेश देना प्रारंभ कर दिया। नशराल भी के हरएक रोड के ब्याखरान में स्थानकवाथी, देखदाती, लैन भाइयों के दरलंद इसरे धर्म के भी संवत्तवता महत्व दमिदय होते में और राडकेट बकीत करिस्तरों से मरपूर और सुबरे हुए देशों की पंडि में है, तो भी जनतहार की या दूसरे अप्रेसर-गृह-स्वों में शायद ही पेबा कोई निक्तेगा कि, विसेन व्याख्याय का हाम न तिया हो। पूछ की बरत परन्तु शासीय पदांत के पेता रुपेट रुप्तेरा करनाते हि, नष्य में हिसी हो हुझ प्रश्न हरने ही कावस्य रहा ही न रहती थी । ऋते र रोहाक्षी का बनायान होता भीर भनेद प्रभी दा निराद्या होता था।

पूर्व भी के प्रभाव का देश समस कारियावाड़ में बहुत दूर तक यह चुका या और राजकीर कारियावाड़ का केंद्र ज्यान होते से बाहर से कार्य हुए क्षत्रतहार इस्तार इस्तारिकों को ज्याप्यान प्रवाद करने का साम विज्ञा था। नामहारसोशकी के ठाइट स्वारित राजकीर क्यारे तक ब्यास्थान में स्वरित्त हुएथे। कुछ भी के हरी-नार्य करते के बाते करने स्वरुक्ती का कारिया सामा करने का साम प्रवेद किया गया था। विज्ञ स्वरूपन स्टर्ड के



झध्याय २२ वर्ष

परोपकारी उपेदश कृष्य 🛒 अभाव ।

गोटन के भूतपूर्व दीवान साहिए : ा प्यान कायुर बेजनती मेहरपानकी भी महाराज के व्यावयान में पराने थे, इस समय वनका स्वास्थ्य टीक न होने से एक साथ भेगूर मानिट मां वे बैठन सकते थे, तीभी महाराज शी के व्यास्थान में उन्हें इतना आधिक रस एरवल हुआ कि, वे क्रांप पीन तास तक ठड़रे और महाराज शी का द्या तथा परोपकार विषय पर जिसमें "रासकर पुष्काल पढ़ने के सर से उस समय किस तरह द्या करनी चाहिए और मनुष्य के साथ कितने और तक हर एक मनुष्य को अपना कर्वज्ञ आहा करना चाहिये " इस विषय पर विवेचन सुनकर तो उन पारसी गृहस्थ की आतों से दहदह सांस्थित तमा गए।

पूज्य थी सूत्रों के सिद्धांत समक्षा मतुष्य जन्म की महत्ता दिखा विशेष समयमें कीहुई सहायता साधारण समय से सहत्वों गुर्जी विशेष कत देने वाली है यह उदाहरण दक्तील कीर फिल्लानोकी के सिद्धान पर घटित कर प्रस्तुत समय को किस धैर्य से निमा नेना चाहिये यह वृद्ध अनुभवी से भी अभिक प्रभावीत्वादक शित से साताओं के हृज्य में विठा देते थे।

(385)

हिन्य नोग किन्न २ भोजनालय भोजन के तिये में, इसके विशय तनका किन्न ने आवकों की जात के दी पार्टी विद्वमानी इसादिमी दी तन भी। पाय औं क व्यवस्तृनी का बात करने, मैतेषहारक या ता तन की क्षांच्या ने का शाहित्य ने सा झात्रवर्षी की या पूर्वात प्रचान के बाद वाला कर को ये दूस दिनों से भार नार्टित बदन है का तुर्दात या विश्वस्त के सामाधी के सा पुरालन के नार्टी ने बोदन क्षीर सुदक्षिय की



ध्याय २० 🌣

परोपकारी उपेदश कांग्रा प्रभाव ।

गोठत के भूतपूर्व दीवात माध्य शहरा पात काहर वेकता मेहरवानकी भी महाराज के क्वाक्यात है गरा में में, इस समय दनका स्वास्त्य ठीक त होने से एक साथ प्रेंग्ट्र मिनोट मो वे बैठत सकते थे, तीभी महाराज भी के व्याख्यात में उन्हें इतना व्यक्षिक रस इत्यक्ष हुआ कि, वे क्रांव पाँत तास तक ठड़रे और महाराज भी का प्या तथा परोपकार विषय पर जिसमें "सासकर दुष्काल पड़ने के हर से दस समय किस तरह दया करनी चाहिए और मतुष्य के साथ कितने अंदा तक हर दश मतुष्य को अपना कर्वज्य अदा करना चाहिये" इस विषय पर विवेचन सुनकर तो उन पारधी गृहस्य की आयों स दहदह सांसु बहने सग गए।

पूज्य भी सूत्रों से सिद्धांत सममा मतुष्य जन्म की महता दिखा विशेष समयमें कीहुई सहायता साधारण समय से सहस्त्रों गुणी विशेष फत देने वाली है यह नदाहरण दतील कीर फिल्लामोकी के सिद्धांत पर पटित कर प्रस्तुत समय को किस धैर्य से निमा लेना नाहिये यह युद्ध अनुभवी से भी अधिक प्रभावीत्वादक गिति से शांताकों के हृदय में बिठा देते थे।



भोपा है, में पैसे का (अस यख की शांकि न होने थे) दान न किया परन्तु समस्त समाज को रूपनी देह दान में दे चुका हूं. मैंने सिर्फ मंदिर में ही प्रमु को नहीं देखा, परन्तु अखिल विश्व में प्रमु की दिव्य शीडमा मैंने पृथी है। बन्य भक्तों ने पत्यर के दुवले में प्रमु माना, मेंने हर एक मनुष्य में माना, दुनियां में दवानिधि देखे हैं कीर सेदा की है। मैंने इन वीचीं की वीर्थ चात्रा नहीं की परन्तु गरीव-यात्रा दुःखी-यात्रा मनुष्य-यात्रा की है, अर्थात् गरीदें। कीदीनता हा, मनुष्य की मनुष्यता हा, दुःलियों का दुःल का विचार किया है भगशत को भजन के बहुते मैंने ध्यपने मोले भाईयों का भजन हिया है, अली ने एक ही अगवास् माना होगा, भैने तो धनेक भग-बार् माने हैं। प्रत्येक मनुष्य में एक २ प्रतिना विशवनान है। मनुष्य के हृदय में जान्द्वी है जब, वव की शांवि है वीर्य-यात्रा महिमा है, और मोटाई है मालिक के दान का संनत गुजा पुरव भार है। रुसरों ने पारियों के लिये विकार बरसाया होगा परन्तु दे सी मेरी दया के पात्र दने हैं ··········ः चन्य के क्या दहना हो नेश धर्न है। सत्य मेरी शक्ति है कौर खेवा नेश मिंदित है।

प्रमुदी--(दीन वन्धु के बिर पर द्राप रस कर) गेरे महः! वेरी बेबा कर्या बेबा है वेरी मीडा करवी मिडा है। हुने समयह या क्ष्यपंद्र के रूप में देख, आहि दरने की प्रदेशा दक दीन





राजकीत में दल मानव बेनावाम का विद्वारण वृत्त्व करिन ने हर अन मानस्कारक होति के मानकाया था कि कान के व्यावसाय हो दिने बावडा जानन कानुवन जेते के नियं मिनवार्डिंग को से बन मान् संस्थानद बोर विना माजिङ के फिरने के श्वीतरा मेल जारण्य गर्द किन २ स्थानी वर लाम ' केंट्रबोडेस्य , प्रमृत्द को बहर वर से ब्यों ने बची फिट के साम संस्था की थी। होट और सुदर्श वर कर करहा कर बारत दार्गी से बीसार आजनों की हिन्द के कि

गत्रकाट कुक्ताट क्टब्ट क्या.











सामुजा प्रकट हो जाती है। तो किर पड़े जिले योग्य पुरुषों को सारंग से आपूर्व लाम प्राप्त ही दुवमें क्या आखर्व है।

पूच को की प्रशंका सुनकर उच इंग्लिश शिका प्राप्त वकीत वरिस्टर और सरकारी साक्तिसर इसादि उनके पास जाने लगे। पूज थीं को इंग्लिश का दिल्कुल अध्यान न या ! तो भी वे नई रोशने षाते शिवित समाज पर धपने चारित यत से अपूर्व हाप सातते ये चौर थीरे २ देश पूज्य भी के प्रशंतक, अध्यात्म मार्ग के व्यनन द्यासक सौर धर्मपर सन्पूर्ण भारत रखने लग जाते थे। वॉ पुत्र सी है संसर्ग से हई विद्वानों ने बड़ा भारी लाभ रहाया। प्रिसिद स्टीवनसन नाम इ एक पामेज पुत्रती भी पूरम भी के व्याख्यान का लाभ कुई। पर नहीं परन्तु नीचे बैठकर लेने लगी । पूज्य भी के साय पर्मवर्षी में ठवे पड़ा क्षानन्द प्राप्त होता । संवत्सरी के प्र-विकास में वयरियत हो सब विविधों की यह शाला दनी थी] पह बाई ब्याख्यान में सुंद्राचि दांधकर बैठती । ब्याल्यान के संसी को बयुगुत कर लेका । इस बिदुपी संमेज मुनशी में केन वर्ग दर Heart of Jainem सामद एक प्राटक लिखी है बसमें बसने पूच की के सन्दन्ध का रहोता वो किया है।

The present writer had the pleasure of meeting the Acharya of the Sthankwasi sect, a gentleman acmed Srikslji, whom his followers hold to be the 78th

गामुच्ये की व्यवेषा में कार्यंत गरम वर्षेश दिया। महामती बहुत एल बती. और सिद्धांत रथ की विषास थी, बन्दीने 'बदेसिन' बद्दबर वद नवदेश भिर चत्राया, येथी बदागढी बनेबान समय में होता मरादिस है। गेंग्यन भवाहे के ब्यायार्थ मी जमराताती महाराज मी उरावय में व्यशानने थ, बह ख्याभय मार्ग में होते से द्वार पर म सुदा माना पुत्र बद्द मही धर्माला । कर व्याचार्य श्री खुरा हुए से ।

मद राज जेर के स्राप्य मुनि भी द्वरानवाक्षणी महाराज ने इन च १० ल म रंग ल उपकास की सपश्चर्यों की बी क्योर उनके कांत्रिम बरवान के उन्न का करने के दिन नामदार ठाकुर साहित के हुक्य संकर्षा धिने पद स्मन 🗸 ये।

क दिएवं इ.च. रात्र हेट शहर इत्तिशा शिक्षा में सबने अधिक काग द। यह । कि शिक्षा में पार्निक शिक्षा का कामान होने से नई रशा बना ह हर्य में भार्यायने के सम्बाहन बाद की घोषता प्रशास जडर र का भीर विशेष संस्कृति के अपन कहत्त्वन दखते हैं। बाजान की शिक्षा से शिचित हुए कई नवयुवक धर्म से ्र वृत्य देव जाव दें ऐने कितने ही बुता पूर्व भी के पर्ने बदेश से ची सरवगाम स पर्मामी यन भारमोशति के मार्गास्त्र है। सब ।

4 के वारित्र और वाले।का त्रमाव ही ऐसा बाबी कि क करस-. मात् सवति दि साधुवा मजानाम् अधीत् सरवक्ष से राज प्रवर्षों में भी

संबन् १६६= के बापाद में मोरबी में बालेरा का बरहब प्रारंभ हुना । किवने ही शीमैव प्राम होत पर पार्रजाने की वैपारी में थे, परन्तु पूच्य सगद्देव के प्रयासने से यह बीमारी नरन होगई यो। एक दिन र्भवा समय विदर्श के पाप स्थाध्याय करते पदन बदहा हुआ देख ऐसे प्राकृतिक परिवर्तन का सनुभव रखने वाले पूर्य काहि । ने समीप में बैठे हुए मतुर्वों को तुरंव सगम्माया कि, यह पत्रन का परिवर्तन सुवरने की आशा दिलाटा है ऐसे समय भी शांविनाथ ती के जाप से कई जाह शांति हुई है भित्र-मंदत के छाथ पुत्रावर्ग बहुत रात तक पुट्य भी के पास धर्मधर्यां कर धर्महान पड़ाते थे। दूसरे दिन सोन-वार की रहा होने से शीशांति जाप की योजना की गई खीर पृष्ट इत्स दियों से दरी रहत में नांदे के शांव भाग में दरोदर बते १२ धामायिक प्रद्य कर जाय करने की सामग्री सुचना इस पुरवक के हेखक को मिली। परिकास स्वरूप बारह का टंका समते ही भी शांति-नाथ का जाप प्रारंभ हुन्ता चवालाख जाप होने के प्रधान सद साथ मिल कर पृथ्य थी के पान मंगतिक सुनने गये। इस जाप के समय की शांचि कीर काले किक हरव स्था पवित्र कांशेलन के फल्यारों ने दर्शास्य सद्धतों के मस्टिश्त की इतमा काधिक हर कर दिया कि. दे कापनी बिंदगी में देसा समय प्रथम ही है और सपूर्व है ऐसा कहते थे। शुभ राहन षमम सब साधकों को नारियल दिये थे, पूज्य भी के अनुमान न



स्वानं में से अपने महत्त्व करने योग्य बहुत से जाते और सोग सुतारंठ से कहते ये कि, यहां तो अभी ' चौया आरा' वर्तता है। सी जम्मूचरित्र के ऊपर का पृष्य भी का न्यास्यान हमेशा थोड़े बहुत मनुष्यों की आंख वो गीली कराताही था, चलती मां पीलती, खांडो पायह, खदयपुरना राखाओ, जीवपुर के महाराजाओ, जैपुर के महाराज पर एक कवि की लिखी हुई हुंडी, कच्छ के लाखा मुकाणी इत्यादि अभरकारक तथा ऐतिहासिक हत्यांतों से भोताओं पर वण्य भारी असर होता या और स्याख्यान का लाम प्रकृत वाले अपने कंतराय कर्म के लिए दिसगीर होते थे ! यावकों की दुकाने तो स्वाख्यान चाह ही सुलवीं थीं।

वनावटो और कल्पित क्याओं के वे कायर नहीं थे, सत्य कथा या धने वहां तक अपने अनुभव में आई हुई या ऐतिहासिक दृष्टावों से हैं। पूरवभी अपने सिद्धान्तों को पुष्टि देवे थे। उन्होंने अपने ब्याटियावाइ के प्रवास में इसके प्राचीन अवीषीन इतिहास का अप्रास किया या, भिन्न २ राज्य के अनुभवी अमलदार और विद्वानों से काठियावाइ की की पिं का पान किया या। मैं हमेशा एक पंटे भर पूज्यभी को इतिहास पहकर सुनाता या- प्रसिद्ध बकारा० रा० द्वतरों मगनलान 'सापना, नामक पुस्तक सममाते और देशाई वनेषद राज्यात अमे भीमन्त आयक दावहर की निद्रा को एक सरकरस दोवहर को १२ ये के वक दिवहास इत्यादि के पुस्तक दर्कर सुनाते थे। औ

को याद न कर पूजबंध के ब्रहाय से ग्या दोवहर में वहने में लोन हो जाते थे, उनको सुरानी चाठ कीठ नानुषाई तथा उनकी विधा-विजाधी पुजिया भी पूज्यभी की सेवा कर विविध शिते से सानकी शुद्धि करती थें, गोंकन सम्प्राय को जायोजी मुश्लीबाई ने पूजबी

को मुत्र सिखाये थे, पारवाडी आवक आविष्ठा दशैत करने आवी वनके लिये प्रवर्शी के सामने प्रथम पाति में ही जगह रिम्ह्ये रक्सी जाती थी और देशाई बनेबर माई जैसे खाने बाने शावकी है। खड़े हा मन्त्रान कर आग विद्यांते था श्रीवती नानकाईने निहर हो पुरव त्री में कह दिया थ', कि ' बारव ही शाव ही की खाप बाहे जितने इड मध्यक्त असी मिनो पश्तु बनमें सैकड़ा ६० नो मले में या हाय में या किया जगह होविया या ताबीज गायन बाले हैं, थी जिनेश्वर दब ही पदा पासस्य स्व क सादतिये ही धारण किया तो हमें इंदे हड़ना नहीं है परतुत्ता उससे के हो सो स्वयम पर उनसी पूर्ण भद्राय विचास नद है रेमा इन मानेंगे। श्रीमनी नान् वार्ट ६ ४ वस बसरोपान पुरुष के न्यूत नरकत कारण बना कर कहती और जिल्ला साम लूट महती थी लूटती वी । एउवधी मादिश ने उनके शास्त्री के पास

से मुनिश्री बाहमतानी इत्यादि हो छंन्द्रत का खन्याम कराया था। - पूज्यभी पहरू छानुच्यों सहित बाहुमीस रहे से। पूज्यश्री का शिष्य सेहल स्थाप्यान खीर च्यान में दुवना सबिक क्षीन रहता था कि इनमें से दो पार को भी कभी पहारित हो गप्प सप्प मारते या व्यर्थ हंसी दिलगी करते हमने नहीं देखा। स्वाध्याय और शाल बचनों को पुन लगी रहती थी। संध्या को प्रतिक्रमण किये याद ग्राम पर्पा और प्रश्लोत की धून मचती थी। प्रतिक्रमण पूर्ण होते ही जैनशालां के विद्यार्थी पूच्य भी को देदना करते और सद हाथ ओड़ स्तृति बोलते थे। पूच्य भी को भिय नींचे की स्तृति हमेशा की जाती थी। यस समय पूच्य भी नयन मूंद क्समें वहीं न हो जाते थे। पूच्य भी न पर्वत भूत करते वहीं न हो जाते थे। पूच्य भी न पर्वत भूत करते वहीं न हो जाते थे। पूच्य भी न पर्वत भूत करते वहीं न हो जाते थे। पूच्य भी न पर्वत भी हम स्तृति को कंतम करातिया था।

गुण्वंनी गुजरान (यह राग)

वर्षवता प्रभु बीर, घमारा वयवंता प्रभु बीर । शावन नायक पीर, घमारा वयवंता प्रभु बीर । शाख सरोवर-वरत घापनुं, तत्व रत्ते भरपूर । धेमी म्हावां तर्तां नित्ये, शुद्ध थाय घम व्हर । घमारा

त्तात्विक मावे बेह प्रकारयुं, वास्तविक तत्व-स्वरूप । कास्तिकतामां रामिये एथी, ज्ञानन्द थाय छन्त । ज्ञमारा

भाष मकाशित ज्ञान-वर्गावे, सील्या हो वह भूत । तुर्गेथी वायुनी तरत लहरथी, अने हीए मश्गूल । अमारा -



मौलाल की स्वामी हो विचा विशादि सात्य विचा प्रमु पारे पार कावन उपारी करीने कृता मुनि क्याशिवाद क्यनेक पार या । महान् सामार 'मयुरपुरी' संघ क्यापतचो स्वामी विलमां माने दरान काप तथां शिष्य-मंडली सहित ममी घर्णे पूरव दाने । एवा महरूप शिष्य संघाते चन्द्र-युल्य गुरु पूर्य-प्रकाशी । मोरवी संघ हदय छुनुदो दर्शन यी प्रमु धाय विकाशी । पाषन करी भूमि पाद —पप्रधी सहज दयालु दया दिले लाबी यमाँकुरो करो जीवित, उपदेशमृत—यारि वरसायी । एव इच्छ क्यापनची क्यापन कल्याच-कारक क्यम चर मावी । संसार-सागर तारो 'शिव' कहे क्यारिहंत श्रीरहंत मुख मजाबी



थ्यथाय २८ वाँ ।

मोरवी में तपश्चर्या-महोत्सव।

सोमबार वा रशा (अव कारा) के दिन मोर्श्वा में विराजि मुनियों के पास जैन और जैनतर विद्वान् वक्षा की स्थानतगर मिन कर ज्ञान वर्षा क्लावे के कीर देकमास्टर तथा राज वैश उपसंद महामरे पाध्याय सालरोत्तमा आधुन शंकरकाल माहेश्वर भी मर्मगोवात पूरा औं के पास कार्वे थे |

पृथ्य श्री के प्यारते से हैं जा विरुक्षत चंद दोगया दसलिये तथाय नगर निवासियों की प्रायमी की भीर पूथ्य-पुद्धि हो गई और भावाल एक मब की यह मानवता भी कि, महास्थाओं के प्यारते थे ही यह उड़ाल हूर दूधा। मार्ग में निव्यत तथा रहा महाराजा थं। को भी निव्यत तथा है। यह प्रायम के मानविक गान नव की कीर सब प्रायम के मानविक गान नव की कीर सब प्रायम के मानविक भी भी है। इस भी कि ना मानविक गान नव की भी की की मानविक मानविक में भी कि ना मानविक में मी कि ना मानविक में भी भी तथा मानविक में भी भी तथा मानविक में भी भी तथा मानविक में भी भी निव्यत में भी भी तथा मानविक में भी भी की मानविक में भी भी तथा मानविक में भी भी मानविक में भी भी निव्यत मानविक में भी भी मानविक मानविक में भी भी मानविक में भी भी मानविक में भी मानविक में भी मानविक में भी मानविक में मानविक मानविक मानविक में मानविक मानविक मानविक में मानविक में मानविक म

पारण के दिन पृथ्व भी तपस्त्रीत्री के छाय गोषरी प्रधार ये फीर पार घंटे तक किरकर बीच में किसी गृह को न टाइवे सुकता मिता यह बाहार प्रभी से सदरों साम पहुँ जाया या। दिवने ही मतुष्यों ने पारणे का प्रथम साम सुके निते को में समुक्त प्रतिसा करता हूँ पेमो पृथ्य भी से विनय की थी परंतु पृथ्य भी तो प्रस्पात त्याग कर रंक भीनेत सपके यहाँ प्रथारे से।

त्तरश्चेत्री के दर्शन करने के लिये देशावारों से कई मादक पक-तित हुन थे। वनका योग्य स्वागत हुन्ना था, तपन्नवी के पूर केंतिन दिन संवर पीषय कानेक हुए थे, कीर पारणे के दिन बरसव जैना करम था। जीवों को कानय-रान दिया गया नाने लेनड़े जानवरों को गुड़ भिलाया गया और कोन्छ प्रकार के दान पुरुष हुन। जीव-द्रवा का कंड हुन्ना था जिससे कई जीवों को सांति पहुंचाई थी।

पृथ्य भी का शिष्य-नीक्षत्र हमेशा केवन से सम्बन्ध रखने वाली विज्ञाकों कीर स्वाध्याद में दलान रहता या चौर परीशा में पत्र स्वक्ष्मर करना कक्तानिक होने से लान पदी के निवाद करन पहली में पहने या कोई कारण ही न या।

प्रतिवसस्य क्षिपे प्रधान् सात क्षेत्र या पानके प्रावधिन के लिये क प्यांग नमन हुए काद दोनों साथ लोड गुळ तदय से क्यांग जिल सुद्धि को ब्योदकी को दायनों होती को ब्योद सुद्ध जो जनकण.











क्दा हुमने गुरमुख से सुना है तो सुके पढ़ांको । मेरा यह नियम है कि, कोई भी सुब एक समय किशी से पढ़ फिर खब्द पहुं जिसमें भी चंद्रकति बैंबा शास्त्र गुरुगन से हो पड्ना रेखा मेरा इसदा है। तद मैंने बहा, देशह, सारका चामह है हो आप और इन दोनें। माथ पहेंगे। वहीं दिन से पदना प्रारंभ दिया । शास्त्र की एक २ प्रति हो हनके पास रखते हुनरी एक प्रति टीकावाली लेकर देवनहर को एक क्षेत्र से संच्या के पांच यह वह पहना प्रारंभ रखेंड थे। समझम परह दिन में पंत्रपाति मृत्र पूर्व दिया प्रामी भी समम और प्रहा इतनी हो सरस है, चंद्रनहारी से भी सह-चित्र कोई यहन विषय हो है। भी वे स्वत: खनडी तरह मनम् हें. चीर दूसरों को चमना है, परन्तु एक कामरासमूत्र मी कार स्वतः न पर पर मादना विक्ते क्रियेत क्रियेत क्रीर विवेच के मही हुई है यह महत्र है। ध्यान मेकालाता है इसीतिये बन्ही स्वति में हरूर क्षा है हि.

> '' विषावित्तदर्गाटा विनयेनवृद्धाः'' '' प्राचीन सः मर्वाचीन मच्चा है। मो मेरा ।

दिस्ते हैं। युद्ध प्राचीन पहिल्लों हो बाउरेते हैं। हे दिल्ले हैं . युद्ध नवान हो बहे भरेबाते हैं, वयनुवाने के होते सदान हीं . के भरेद्वर हैं। युनावा नवाबारे के हो बचना हो को ले हैं



हमें पेसी खुरी थी कि, पुराने तथा नये दोनों क्यों को वह द्रिन्तिर हर जाती थी। दरवार नथा जन्य भीताकों ने दूसरे दिन किर व्याख्यान के लिये कार्मवल दिया, तब दूसरा व्याख्यान कीमा भीमासी की पर्मशास में दिया गया था। दोनों व्याख्यानों का अधर खान अजा पर बन्दा दूका। सारांश सिक इतना ही कि, पूज्य भी रूटि को चाहे मान देने वोभी खांतरिक योग्यायेग्य का विचारकर रूटि से बातना के भेयाभेय विचार को खिक मान देने थे। इसी जिये नये और पुराने दोनों पद्धति को पसंद करने वाले जल्दी खतु- कुल हो जाते और पुत्र भी जिसमें मिथक मेय हो उसका अनु- करल हर सोगों को लाभ देते थे।

प्ज्यपाद का साहित्य पर शौक ।

पूज्य भी जैन-सास के समयं विद्वान् ये 1 बहुत्ती, गीनार्थी, शासवेत्ता, पागमवेत्ता ओ र हपनाम उन्हें लगाये जीय वे उनके योग्य हैं। मारवाह की क्षार मुनिवनं में संस्कृत का अध्याम करने की प्रया प्रवित्त होती तो काचार्य भी संस्कृत के समयं पंडित होते, परंतु उस शरफ इसका रिवाज न होने से उनकी यह इच्छा मन में हो रह गई थी। वाँकानेर में थोड़े दिन के परिचय प्रधात पृज्य भी ने निवेदन किया कि, अपना भावी चातुमंश साथ हो तो तुम्हारे पास हने तो चांदमलकी होटे साधु को संस्कृत का अध्यास कराजं















वर्ष से दुन्ती हूं मेरे लिये मेरे पिताने दबाई में हजारों हवये खर्ष कर दिये हैं परन्तु जाराम नहीं हुआ। तम पूर्व सी ने फेहा कि, दबाई स्वान दो नवकार मंत्र गिनो और सद्धा रक्तो । उसी दिन से उन्होंने दबाई छोड़ दी और नवकार मंत्र गिनना आरंभ किया थोड़े ही समय में उन्हें विरुद्धल आराम होनेया और वे पूच्य भी के व्याख्यान में पांच २ पलकर खाने लग गये थे। पहिल वैद्याव-वर्म पालवे थे परंतु पूच्य भी के सहुपदेश से सब कुंदुन्य जैन-पर्म पालने लग गया।

इस तरह कीयपुर के चातुर्मांस में खनेक उपकार हुए। जोसपुर के इस चातुर्मास का प्यान दिलाने के लिये कायस्य शांति के एक क्यान काक्टर रामताधनी कि, जो खभी महम्मालोर में हैं ब्यंपने स्वतः के शब्दों में लिखने हैं।

पूज्य भी १०० = भी भीलालको महाराक ्वा पालुमां छ मारवाइ के मुख्य नगर लोबपुर में हुझा, इस समय इस दास की भी आपके दर्शन व सरसंग और उपदेश मुनने का गौरव माम [का! आपको वांति, पित्त-गुद्धि और उपध्यों के परमाल का काभास इतना जरदरस्य पढ़ता या वि, भोवा लोग हुवँक्यी गुषा-समुद्र में लद्दांते हुए माना गुरियावस्था का सानंद मान करते थे।



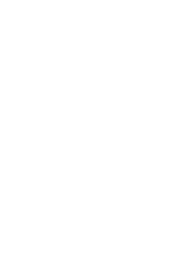
•



























झयल खाल्मण्या, बारनशक्ति का विश्वास हो और तुन परोपशार के लिए ज्ञासामीत हेने ही वैपार है। वो तुरहारा प्रयत्न क्यों न सफ्त हो ! सबस्य हो । श्रभी ही तुम यह हु प्रविद्या करो कि जबवद यह हिंसा न रहेगी हम बल पानी प्रदेख न करेंगे, सिपादी अब तुम्हारे सामने कतों पर गोती पत्ताकृति तुम निढर हो कहें दी कि प्रयम हमारे शरीर की गोली से बीच दो और किर हमारे कुर्ची . पर गोली सरहो, खगाय मनोवल और अलुट सात्ववल वाले इन महान् पुरुष के सुदारिवर से निक्ते हुए इन शब्दों ने शीवामों के हृद्य पर खरमुत प्रभाव जनाया, पूज्य की के सदुपरेशा से ऐसी सचीट खसर हुई कि उपी समय कई शावकों ने खड़े हैं। महाराज भी के पास यह हिंसा न रुके वहां तक अत्र पानी लेने का स्थाग कर दिया ब्यास्यान के पश्चान् कई मानक इकट्टे हो नदाव साहिद के पास गए और अर्ज की कि हमें जीवित रखना चाहते हो तो हमारे साधित इन इसों को भी जीने दी और हमारे प्राप्त की कारकी परवाह न ही वो हम भी कुत्तों के लिए प्राण्डेने हो वैदार हैं इस हमारी विनय पर गौर करमा कर जैसा आपको योग्य जने वैसा रुरो, नदाव साहिद के पास व्याख्यान की हकीकट प्रथम ही पहुँच चुकी थी, वे अत्यन्त प्रजावत्त्वत्त थे, बन्होंने महातनों की अर्त शांतिपूर्वक सुन जहर ही न मारने का काईर नि न





धाःयाय ३५ मा।

उदयपुर का श्रपृषं उन्माह।

-		
बद्वपुर में बचायती नोहरे क	राम संप्रमिक्षः	रक विकास
मकात है, बड़ी हर वर्ष मुनिसाना के	•	• •
भी के मध्युनीस की प्रथम अभीद स		
पूष्प भी कार्यमधी का बर्यपुर चर कोकाने से नेसपीययों न परिचा साई	-	-
लेकी की इमिलिय पूर्ण थी। इ. च प्		
कुमरा भारतीयात मकात देवने के लि		
क्यिता, कई कमराच सोगी ने हमारे म		
वेमी इन्द्रा दर्ग है, पानु १३,० गत र		
जाह व दिलत स नरवर्ग क महत्र		, .
से । वहां दर्भंड मन्या रहित में सार वह के सहस्रों के शस्त्र है। कर राज्य न		8
वह के महका के राम जा सरजान न सबके सिवे कर्ते न सरजा वर्ग		
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	18	
१८ कार्य ज्ञान सब्दान सर्व छात्र प्	17 R 5'-	सर्वद के

व्यानिवर्तन बहुरेय प्राप्ते ब्रीवरण्यतान के विदेश पू









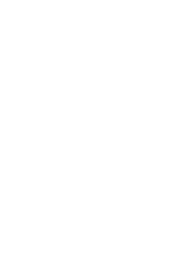




एकेन्ट से वे पूज्य श्री के दर्शनार्थ कई समय काये से और पूज्य श्री का व्याख्यान बहुत प्रेम-पूर्वक सुना करते से, इतना ही नहीं परन्तु व्याख्यान के प्रधान दूबरे समय भी वे पूज्य शी के पास काते कीर सालिक विपर्योपर प्रश्लोक्तर कथा पर्म-पर्या पताले से, इस महानुभाव क्षेमेक ने पत्ती वगैर जानवरों को न मारने की प्रतिक्रा की थी।

दूसरे एक क्षेत्रज्ञ पादरी खेरंह दो जेरस शेर्पट एम. ही. दी. ही. कि जो वर्षाष्ट्र कीर समर्थ विद्वान हैं कीर कभी जो बिलायन गए हैं वे भी महाराज भी के दर्शनार्थ काये थे । महाराज भी के साथ वार्षालाय करने से करहें क्यार कानन्द हुआ कीर वे अपने पास की एक पुस्तक महाराज भी को भेट करने कमे, परन्तु महाराज भी ने कसका स्वीकार न किया । साधु के कहें नियमों से सादिय कामर्थ प्रवित्त होगए !

इस चाहुमाँ में पक दिन पूर्व भी ने घार्मिक शिला की धावरयकता दिखाते हुए बहुत धावरकारक वनदेश दिया और लघु-यम से ही दालकों के हृद्व पर पर्म की लाग निरान की धावर-यमता दिखाई। वपदेश के धावर से व्हयपुर के सब कालकों की शिला देने के लिए एक पाठशाला कोली गई। गाई रहनतालां मेंद्रा के परिभम से यह पाठशाला बतेनान सहस में बर्द्या वर्ष



मनुष्य-जीवन में दाखल हुआं है एवं दिन्य जीवन कैसे विताना जीर एस दिन्य जीवन को विता विके जानन्दमय जीवन सन्धिट् धनानदमय जीवन केतमें किस दीतिसे प्राप्त करना, यही विसाना धर्म है !! ।

धर्म-सान प्रचार की प्रभावना में महान पुरुष समापा हुआ है इसिलिये एक लेख ह योग्य हर्गार निकालता है कि "It is the duty of the thought-ful among the Jains to see that a healthy knowledge of the valuable and basic principles of Janism is spread liberally." सर नारायण चन्दाबरकर लिखते हैं कि "सिक सुद्धि के खिलने की क्रीमत नहीं, अंतःकरण भी खिलना चाहिय । समाज, रेश तथा जगन्धी सांति के लिये हर्ग की रिाजा हर्ग के निकास की आवश्यकता है और जबतक बजा के हर्ग विकतित न होंगे बहांतक सबी महना कभी नहीं आसकी।



परधर जैसा हृदय भी पिएल जाय, इस पपदेश का प्रविधित जमी-दारों के हृदय पर भी बहुत भारी असर पुत्रा और उन्हें अपने अपछत्यों के कारण पहुत २ प्रशाताप होने लगा। व्याख्यान समाप्त होने पर महाराज भी ने तथा महाजनों के अमेवरों ने इन खोगों को यह पापी रिवाज बंद करने की कोशिस करने, के लिए सममापा, तब कितन ही लोगों ने तो पेसा करने के लिए प्रश्नमता पूर्वक हां कहा, परन्तु कितने ही जमीदारों ने महाजनों से पेसी दलील की कि आप महाजन लोग हमारे पर तिनक भी दया नहीं करते, उदार दिये हुए रुपयों के स्थाज में एक के दुने तिगुने दान ते लेते हो और लद कर्जा वसल करना हो तब भी दया नहीं रखते।

यह मुन ववश्यत महाजन लोगों ने देवी प्रतिहा की कि दर मास पति सेकदा ११) उपया से ज्यादा व्याज हम कदािय तुमसे न लेंगे। इसके उत्तर में जमीनदारों ने वयन दिया कि हम भी शिकार नहीं करने का बंदीवरत करेंगे। इसरों को क्यदेरा देने के पहिले क्यता आचार शुद्ध होना चाहिए, 'यरोयदेशे वाहित्यं' इस जमाने में नहीं बल सकता, परिले क्यते वांवरर पाव सहन करना सीको।

पदात् उन जभीनदारों तथा महाजनों में से कितने ही करसाही सरजनों के संयुक्त प्रयन्न से योड़े दिन बाद कई प्रामों के मिल करीद २०० जमीनदार द्यादर में झाये, उन्हें महाजनों की तरक



हपरोत्त पंदोदस्त होने से हजारों लागों जीवा को समयदान मिलने समा साँद सेवहाँ सोग पाप की सावि में गिरवे कई संस में स्वग्र !

इस मुलिव पृत्य महाराज भी के यहां प्रवारने से कारयन्त उपकार हुआ । तथा यहां के जोसवाल भाइयों में कुसन्य भी जिससे तीन तर्दे होगई भी जीर साधुनामीं मंदिरमानीं भाइयों में भीज सम्बन्ध में मतभेद हो परस्यर मन दुखित होगया था, परन्तु भीनाम् आवार्षणी महाराज के प्रवारने से उनके ह्याल्यात का लाभ शाह पद्यमलजी तथा शाह भूलचंदती खांकरिया इत्यादि कितने ही मंदिरमार्गी सज्जन लेते थे । महाराज भी के सदुपदेश के प्रभाव से दिरादरी में एकमत हो तीन तर्दे इक्ट्री होगई और होटे बड़े सब मनार्हों का परस्यर समाधान पूर्वक जंत हो विरादरी में कुसन्य की लगह सुसन्य स्थापित होगया ।

मौजे माक गए और उन्होंने जमीनदारों से कहा कि तुम हवाई बनवालो और उसमें जो खर्च तमे वह हम से लेको, वब लोगों ने कहा कि हमने हममें से चन्दा कर हवाई बनाना ठहरा लिया है इसलिये महाजनों से इसका खर्च न लेंगे और जो खाहेड़ भी पूज्यजी महाराज के उपदेश से हम लोगोंने होड़ी है उसका हम दरादर अमल करते हैं और करावे रहेंगे।



जवाबदारी, दोबंदाष्टि और करेंच्य विषय पर समय के अनुकूल जात्यन्त कत्तम रीति से विवेचन किया और मीमान् शोमांचंदजी महाराज ने स्थित सुनि भी चंदनमलजी महाराज द्वारा आचार्य को पहेचदुनी ओहे बाद समयोचित क्याख्यान दिया या । इसमें पूज्य भी भीताक्षजी महाराज के सनुषम क्दार गुणों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी । जाचार्य भी शोमाचंदजी महाराज ने स्वयं पूज्य भी भीताक्षजी का ऋखी रहूंगा ऐसा कहा था । हम भाशा करते हैं कि पूज्य भी शोमालाक्षजी साहित तथा उनकी स- अद्याय के खानु और सावक अपने सपनानुसार पूज्य भी के परि- वार पर ऐसा ही भाव रक्कों।

चलिस से जम विहार कर शीली महारान धीकानेर होकर सुन्नानगढ़ पथारें। चीर वहां सं० १६७२ के फाल्युन ग्रुज्ञा ६ की ग्रुक्तवार के रोज भीमान् पनेपंदलों संपत्नी के बनाये हुए मंदिर में बीकानेर निवासी शीयुत पीरदरमलली को दीसा दी। चापकी कत उस समय सिर्फ २० वर्ष की यी। चापका ज्ञान बढ़ा पढ़ा या तथा वैराग्य मी चत्यंत चल्छ प्रया। दीसा तेने के पहिले चन्होंने बहुत सा द्रुप्य दान पुरय में सर्व किया या। चीर दीसा महोत्सव में भी इलारों रूपये रापे किये थे। बीकानेर के भी बहुतसे भाई इस स्वत्तर पर प्रयारे थे चीर संदिरमार्गी भाइयों ने भी चनुकरदीय भाष्ट्रभाव दर्शाया था। इस समय











इत्यादि के हतु रे वहराना चौर दूसरे साधुआँ पर मिन्या दोवारीपण करना यही क्या अपना धर्म है ? यह बात सीचना चाहिये, नहीं तो इसका फुल यह होता है कि परस्पर द्वेप भाव बद्ता जाता है और साथ ही अपनी मूर्ववा प्रकट होवी जावी है । आप लेगों को तो वेसा पाहिये कि सब से प्रेम रक्ते और अनुचित प्रवृत्ति से साधु भावकों की रोकें । वेरहवंथी साधु सान्त्री कहते हैं कि तुन्हारे घर से वो दूसरी सम्पदाय के साधु बाहार पानी लेगए वो तुमने क्यों बहराया ? इसलिये अब हम तुम्हारे यहां गोचरी न आवेंगे, जी श्रद तुम ऐसी प्रविक्षा लो कि वेरहपंथी श्राप्त के सिवाय श्रम्य किसी को दान न देंगे, तभी हम तुन्हारे यहां आदेंगे । ऐसा कह कइयों की प्रतिहा देते हैं। पाठक ! विचार करें कि जो साथ पंच-महावत लेकर भी राग द्वंप नहीं स्वागते और उत्तरे उसकी वृद्धि करते हैं तो फिर गृहस्थी का तो कहना ही क्या है ? इसजिये साप लोगों से यह विनवी हैं कि कुछ दिल में विचार करो गृहस्थी का अर्भग द्वार है और दया दान से ही गृहस्थातम की शोभा है, कत्याल है । महाबीर भगवान का दया दान पर ही परम उपदेश है। उसे बंदकरना जिन-वचनों वा उत्यापना करने के सनान है। इसलिंग मविष्य कालका विचार कर सब भाई सन्य स्वसं धेर विद्याकी दलति करें और जो मिध्या चाल पड़गई है उसे सुधारत यह कान जैन श्रेतान्वर तेरहपंथी सभा की हाथ में लेना चाहिये !

> प्रवापमल नाहटा, इंदासर राज्य भी बीकोनेर (मारबा



(३५३)

यक्षी के बिहार दरम्यान बीकानेर के सैकड़ों सावक स्था भाजमेर से राय सेठ पांदमलजी साहिब तथा दी० व० समोदमलली सोडा इत्यादि दर्शनार्थ आये थे।

बहे २ करोइपारियों को इन महापुरुष की पदरज मस्तक बहारे देख कनको कापमानित करने वाले किउने ही वेरहपंत्री माई कारान्त क्षात्रत हुए थे।

महापुरणें के तो पेस कह ही कीर्ति कीट की दिवास रह बरवे में धोनेट के समान है।



मव की कावश्यकता नहीं रहती, परन्तु जब जहाज मर समुद्र में आता है कीर दूबने की तैयारी में रहता है तथा पैठने वाले मया भीत रहते हैं तब ही करतान के कार्य की सरवा की सभी कसीटी होती है सबे कटाकटी के मामले में ही मनुष्य की चतुराई, अनुषव कोर विवेचना की परीता होती है और ऐसे समय ही मनुष्य अपनी महान् शिक हिसा सकता है ""जबतक हम कसीटी पर नहीं चढ़े, अबतक तुत्र शाकि सामान्त्र संज्ञागों के समय प्रकट नहीं होती बचतक हमें अपने आंतरिक पत्र का वास्तविक मान भी नहीं होता | यह शिक आपाचिकात में ही पकट होती है क्योंकि वह शिक सम्यादन करने के जिए हमें अंतरगढ़नमें पैठने की आवश्यकता है हरएक कार्य में परिलान की प्रमाल में ही कार्यकी अपना है ।

लोंघपुर के संघ के माफिक व्यावर-नर्यशहर के भी संघ ने' भी जावरे वाले संघों को सभाघान की ही सलाह दी और जव बन्होंने दूसरी पूरुष पदशी प्रकट की तब चतुर्विय संघ की सम्मति न भी ऐसा व्याव्यान में ही प्रगट होगया था और समस्त श्री संघं के संख्या पर्य मनुष्यों की सही से हमें यह मंजूर नहीं ऐसा, जिख भेजा था।

मालवा मेवाड् से बहुत दूर पंजाब में पूज्य की की काशा से विचरते कौर जनमू करमीर में एक संत यीमार होजाने ने व*हीं* बहुव दिनों से ठहरे हुए सहाराज भी मशाकालाओ रजायी जो सर इंकीक्व के पूरे ज्ञाता न से प्योर करत स्वामी होने से दूसरें की सुक्ति प्रमुक्ति में मुता जाने जैसे हलुकर्मी हैं, से हुए के सपी-शित सेज में प्यास्त्रपास के संज्ञान दिना जाने कोर पूप्य भी भी साम में दिवस होने से उन्होंने पूप्य भी की दिना झाला विषे ही यह पह स्वीकार करने कुत साहस किया।

इस पर विचार करने से सिकं ममस्व ही मालून होता है। इत्याद मानुष्य भूत कर बैठवे हैं, इसलिये दीपेंदर्शी साम्रकार्य ने प्राथमित को विधि बताई है। प्रवल चनुत होने पर जिन्होंने वालोयणा नहीं की वह साल ही चालानुसार काई सता विषे, परानु पूर्व परिचय के कारण कई सेन कोर कई मानक बनने वह से प्रवत्य है।

स पहराद १

सं १६७३ का चालुमांव सामायंत्री महारात्र से बीकानेर सि किया। सपरा सबस्ती ए, पर्वेशिया हुस्या। राहर के जैन कार्तिम महारा वया देशावर के दर्शनार्थ नहीं केका में साने कार्ति भावक, कार्तिकाकों की हचारों महाया की सीह व्यावचान से इक्ट्रों होने साथी पा । पूर्व भी के सद्यवेदरा द्वारा बारेयनु की बासी का दिव्य प्रकार सामायंत्र की बासी का दिव्य प्रकार समाया स्वावस्थान के हुए करता स्थान, कार्तिक स्थान कार्तिक स्थान स्थान, कार्तिक स्थान कार्तिक स्थान स्थान, कार्तिक स्थान कार्तिक स्थान, कार्तिक स्थान, कार्तिक स्थान स्थान, कार्तिक स्थान स्





तथा नंदलालकी सेइता लेखे कासाही कार्यकर्ताकों ने महाराजधी के बदार आश्रय से दिसा रोकने के लिये प्रशंसनीय प्रयस्न किया है और हिंसा परापर इकी रहे और राज्य के हुक्स का परापर खमल होता रदे धतकी पूर्ण निगाइ रखते हैं इशिलये वहां छोड़े भी मनुष्य राज्य की बाहा के विरुद्ध जीवहिंसा करने का साहस नहीं कर सका । जो नंदलालजी मेहता च्ययपुरवाले यहां होते वो राजकी आज्ञा उल्लंघन कर बकारियों का बध करने वालों की जुरूर रकाने की कोशिश करते, इस पात की खबर उदयपुर नंदलालंजी मेहता को मिलवे ही तुरन्त वे और केसुलालजी ताफड़िया जींहरी चदेपुर से रवाना हो जयपुर आये और कई दिन ठहर कर यकिरियों का वस रोकने का प्रवतन किया । नामदार महाराज वक खबर पहुंचा कर सम्पूर्ण सकलवा प्राप्त की। इस चातुर्मास से बकरी का विलकुल वय हाना बन्द होगया। श्रीमान् रायवहादुर खदासजी बालावत्तजी साहिष ने कसाईखाने को तपास करने वाले डाक्टर साहेब को सख्त करमाया था कि जो कोई शक्त बकीरयों का बध करे उन के पास से कानून अनुसार ५०) रुपये दरड मात्र ही नहीं तो, परन्तु बन्दें बरूत सञ्चा कराश्रो । इस कारण खवासजी भी मन्यवाद के पात्र हैं।

: इस चातुर्मास में दर्शनार्थ खानेवाले स्वधर्मी बैपुलों हा स्वागत करने का सन्मान सुप्रासिद्ध जोंदरी काशीनाथजी वाले



अध्याय ४० वाँ ।

सदुपदेश का प्रभाव।

रामपुरा से भीजी महाराज कुक्देश्वर पदारे । स्वाख्यान में स्व परमती बड़ी संख्या में ब्यावे थे। रहंध तथा जतादि बहुत हुए। जड़ाब-चन्द्रजी चौरवाइ ने ४५ वर्ष की कावस्या में खलीइ ब्रह्मवर्य ब्रह कंगी-कार किया। यहां दो शत ठहर कर पूत्रव की कंत्रारहा प्यारे, वहां जावद बाले माई कजोदीमसजो ने दीचा सी, वहां से पूच्य की माटकेड़ी पथारे, वहां मीयुत नानालालकी पीटलिया ने समोद महाचये वत बंगीबार विया यातवा वहां के रावजी साहेब ने शिकार लेखने का स्वान दिया। वहाँ से भीओं मनासा पदारे। वहां महेश्वरी (वैद्युव) भाई माहमति प्रदित व्याल्यान का लाम केते थे। यहां के न्याया-धीरा, मुन्सिफ साहिब इरवाहि सरकारी कर्मबारीगळ भी व्यास्यात का साम चटाते थे। मनासास महागड़ हो पूरव भी पीपलिया प्यारे। बहों मोदिरमाणी बाहवों के घर होने से २२ सम्प्रदाय के साधु बहां नहीं जाते ये हवा चन्हें चाहार पानी व चतरने वास्ते महान भी नहीं देते ये । मोत्री महाराज के सदुपहेरा से दनकी द्वेदानि शांत शेगई और दर्शंके ठाकुर छादिब ने शिकार खेलने वा स्वाम किया ।



भ्राचाप ४० वाँ ।

सदुपदेश का प्रभाव।

रामपुरा से भीजी महाराज कुक्देरवर प्रवारे । न्यांख्वान में ख परमती बड़ी संख्या में आवे में। रकंच दया अवादि बहुत हुए। जड़ाद-चन्दकी पोरवाइ ने ४५ वर्ष की अवस्या में सजोइ अध्वयं प्रव अंगी-कार किया। यहाँ दो रात ठहर कर पूरव भी कंतारहा पबादे वहीं जावह बाते भाई कवोदीयनवी ने दीवा सी, वहां से पूछा भी माटबेही पथारे, वहां शीपुत नानालासकी पीवतिया ने सजोड़ महावयं वर दंगीदार दिया यातवा वहां के रावजी साहे व ने शिकार सेलने का त्यान किया । वहां से भीजी ननासा प्यारे। वहां महेश्वरी (वैद्युव) भाई मारमिक सहित न्याल्यान का लाम केते थे। यहां के न्याया-घारा, हान्सिक साहिब इत्यादि सरकारी कर्मवारीनाय भी व्याख्यांन का साम बठाते थे। मनासास महागड़ हो पूज्य भी पीपतिया पघारे। बहाँ माँदिरमार्गी माइयों के घर होने मे २२ सम्प्रदाय के साधु वहा नहीं जावे में समा उन्हें साहार पानी व उत्तरने वास्ते मकान मी नहीं देवे ये । मात्री महाराज के सदुपदेश से उनका द्वेबानि शाव हेनाई और बहुकि ठाडुर छाहिद ने शिकार खेलने का त्यान किया।



ही जावद पयारे ; जावद में सेंग का उपद्रव या, परन्तु पूज्य श्री के पदापेंग करते ही उनके पवित्र परग्रवमल से पवित्र हुई भूमि में से सेंग भगगया | चौर शांतिरेची ने अपना साम्राज्य जम। दिया | जावद निवासियों पर इसका इतना कांधिक प्रभाव पड़ा कि सेनमर्नी चौर अन्यस्मी पूज्य भी की मुक्त कंठ से अशंसा करने सरों।

रामपुरा से जावद पधारते समय पूज्य भी के सदुपदेश से राह के अनेक प्रामों में तथा जावद में जो जो उपकार हुए, उनका संदित सार निसंदित है:—

- १ संस्थान बहेड्री के ठाकुर साहिब प्रतापसिंहजी यहादुर ने कई प्रकार के शिकार के सीर्गंप लिंगे तथा उनकी यही ठकुशाइन साहिया ने साजन्म प्रसादर्ग प्रव संगीकार किया।
- २ प्राम मोरवण में कोसवाल झावि में धीन वह थाँ, वे सीमान के सपरेशामृत के सींबने से कुषम्य मिट सम्पूर्ण एकता हो गई सीर किवने ही कुव्यवनों का त्याग हुया ।
 - ३ मोदी प्राप्त के राजपूत लोगों ने जीवहिंशा तथा मार्ट द्रव्य पान न करने के त्याग किये।

झध्याय ११ वां।

डाकन की शंका का निवारण।

तिन्हाहेहा में बहुतसी खियों के जबर दाकन होने का मिरवा कलंड बहुत समय से था। बहेमी लोग जनमें बरते और कोई भी की उनके साथ लानपानाहि का व्यवहार नहीं बरती थी। पूर्व भीके निन्हाहेहा प्रधारने पर कता बात पूज्य भी को जात हुई और किसी मकार इन पर से यह कलंड सूठे तो ठीक ही येसा वन्हें जला। माम के लोग बहुते कि कहाबित जाकारा में से देवता साएल मबट हो भूमि पर चा यह बहुते कि व बाह्यों टाक्स नहीं है को भी कावन वा जो बलंड बनके सिरवर है, वह बहुति हूर नहीं हो सकता,। परन्तु परम प्रतापी एज्य भी की चपूर्व वपदेशानृत की भारा ने यह बेलक भोडाला।

ब्याखरान में साधुमार्गी, मेरिरमार्गी, दैप्पन इत्यादि की पुरुष बहुत बही कैदया में बपितत दोते से, तब मीली महाराष्ट्रने भीका देखकर ऐसा बचन चीर ममादेख्यादक भाषण दिया कि बचका चार्युत चावर कालाल लोगों पर हुमा चीर वर्गों दिन के बच कियों ने बन बाह्मों के साथ चारपानादि वा न्यवहार





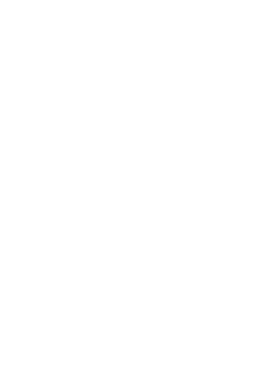


















भी बाहर जैगल से खागए, उनकी उन वकरों पर हारे पड़ी, इतने में प्रेमा खटीकने कहा कि ये जानवर न महें तो ठीए हो, यह बहकरें प्रेमा दोनों बकरों को से नोहरे के आगे सड़ा रहा । शावकों को सबर मिलते ही भीयुत नंदलाल जी मेहना ने आकर प्रेमा से कहा कि इस राह से पकरे ले जाने की मनाई है, तू क्यों लाया ? सर-बार की खोर से बाजार में तथा महाजन खोर प्राझगों की वस्ती धाकी वित्तियों में से किसी भी मतुष्य को बकरे मारने के लिये ले जाना मना है। इस वर से बन दोनों बबरों को हुता फसाई पास स ल नगरनेक के वहाँ भेज दिये। जो बकरे नगरमेठ के वहां चले जाने हैं उनके शान में कड़ी हाली जाती है ये चकरे मारे नहीं जा सकते । इन बढरों की सागरे कर दिये ऐसा उधर मेबाइ मालवा में बोलते हैं। धर्मर किये हुव बक्ता की रहा दा प्रवन्ध राज्य की कौर से होता है। मांमान भेदन देखर ने इनके जिन जभीन, मदान, मनुष्य भीर रार्च इत्यादि का पूर्ण अवस्य कर रमका है। महाराणा चादिय इतने कविक द्याल और प्रजाबासन हैं कि वे सपने या ध्वपने सम्बन्धी जनों के या राज्य के घाटे जि-उने वह सोहरेरार के लिये कामरे का बराबर स्वमल हो इसकी पूर्ण चिन्ना रसते हैं। मेबाइ के रेबीडेस्ट साहिब कर्नन बायली के हो भेड़ हदयपर की धानमही में ब्यागये, बनको भी यहां के महा ज्ञती वे बायदे गुद्धाविक गुद्दा लिये चौर नगर छेठली के पाम भेज











इह इन्दें रह इर हिए या। कोगड़ काल की ने सहही प्रकारते पर एक इसल की महाने कीर प्रसार काइनाव रहाने के नित्रे होता सर्वेश हेता जारेम हिला जिल्हा ग्रुप परियाम पर दूका कि निकारिक गाँउ होकर केहरे सेंगों के साथ जगा-मान हेंगया!

- १ सहरों के तराब में केई महाने न वहरें और नकी।
- र क्लेक दशक्षा भीरकम्बन्सा हे रोड डॉन्स्सिंग ही है
- इ. गावर, महत्तर और बैगाय रटा करिक महस्रेहिसी भी दिन जीवहिंसान हो !
- १ कामान् में एवं उद्दर्वे मंद्र है क्षेत्रे बाहर न निवते ।

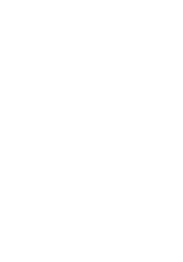
सार्क रहें होते ने भी दे सह होते है साने सुन्द ही गरह ने नाहा ही होने वही में दुग्म हुए हीने में बह राष्ट्र भानेह आपना भी र महत्त्वर भी की महत्वराई महत्त्वर पुढ़ि की मुहत्त्वर ने परीम क्षते होते हम सबस्य पूर्वा पहा पढ़ि की महत्त्वर होने हैं। भी राम नेक में स्टेग हमका है कार्यु होते हैं।

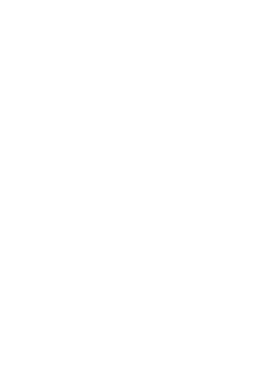








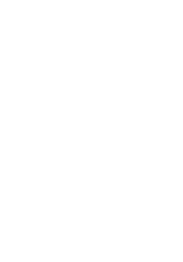
















गत्य और कादम्परी आदि के रासिकों में जीवनपरित्र का पूर्ण आकर्षण नहीं होता है, लेकिन तोभी गुणान्वेपी संसुक्य तो इन जीवन परित्रों के सानन्द से स्वागत परते हैं।

दुवरी का अनुकरण करना यह मनुष्यी का स्वभाव है इस-तिए प्रजा के सामने धागर धाध्यात्मिक धीर पारमार्थिक मीवन दिताने वाले महा क्यों का भरित्र रक्या जाय तो इससे लाभ ही है। सकता है, चारत नायक के गुण प्रदेश करने का जनता की इन्हा होती है और खाने शुलों के साथ तकता करके खन्छ। वुरा समन कर पाठक इतन होने की बोधीश करने हैं, इस राति स अवन्य रित्र इसले व से परले व नह सम्ब के मार्ग दिखाने के ल सुरुव दिएक र व म देन' है के सह बेर रे जीकन प्रतिन न्द्रा साच्या अबाद मा चा अकाश होकर देहा समान बन्ना होता है कर का स. क. चारत शाम कार सहिता है। ग्रीरायकाइनी क the the transfer of the street and the section A major made in the contract of the contract of the contract of



गरुप क्षीर कादम्मरी आदि के रासिकों में जीवनपरित्र का पूर्ण भाकर्षण नहीं होता है, केकिन तोभी गुणान्वेपी सत्पुरुप तो इन जीवन परित्रों के स्थानन्द से स्थागत करते हैं ।

दसरों का अनुकरण करना यह मनुष्यों का स्वभाव है इस-तिए प्रभा के खामने धागर धाध्यात्मिक और पारमार्थिक शीवन थिताने वाले महाप्रयो का परित्र रक्खा जाय तो इससे लाभ ही है। सकता है, चारत्र नायक के गुण प्रहण करने का जनता की इन इंक्टि और अपने मुखीं के साथ तुलना करके अच्छा रूप समस कर पाठक उत्तन हाने की को शिश करने हैं, इस रीति से जीवनचरित्र इसले किसे परले कितक सम्ब के गार्ग दिखाने के ल । सन्वा कि श्रार का काम देता है। श्री महाबीर के जीवन चारेन परने संधार्मन शांक के जिकाश हो कर देहां। समान क्रम होता है अप अप का का अपनन्त शास का नान होता है । शीरामचन्द्रजी क रत्ते रत ६८च १४ एक पञ्च जन अपरा एक राजराज्य क्याकर है ग्रहात् र इसके राज्य होता है। सहस्य (प्राप्तद्वाक चलारत से अक्षार्य) र भारत भागल में किया है, रहा पता प्रीहरू के ता ताचार्य स मान्य के किन्द्र प्रशासिक कर के अध्यय र रहे।







कर सके और राजा महाराजा भी चापके चाल कनत में शिर सहाने में बानन्द मानने लगे | इन पूज्य शी की गंभीरता, भीर षद्द विचारमय गइन मुख्यमुद्रा, श्रात्य किंतु मार्भिक वयन श्रीर विचार में शिद्धांत पर तथा कर्म छेत्र में साध्य सिद्धि पर, बनका अभेध, धारंड् व धन्छतिन प्रकाह और उनकी धनुवं कार्यशक्ति, और इपद्रवासे चाप हुए छस्त्र दुःख से सन्तम हें कर पार उनस हुका वनक विश्व अवन कौर वनका कागाय मिलिम व, तथा च्या मुक्त सारासका इन स्थव वाली का स्मरण जिल्हे पुरा २ होगा पुत्रय स क अब क सन्दर्भ क्या यह यह ता हत हो। सम्म से क्षा बर्ग, सन्दर्भन वाच वाध्य में क्षानुबा महोन्द्र है। अपने पर जी अभ्यास के के नाता पर श्वर साप्ताप का हालाववाद करता है। बहुद मान १ । ११६० साल हु दुनक का सरीपक्ष करें। the Kill of the Park when the fire or extra extra consistence of the constant of



लेक्नि इसी विकास वे इसके प्रयास को देखकर वे साई साइव से कारता संगद इसे देदिया कीर इसके कार्य में सहातुम्हित दिखाई, बनकी इस महद्वया कार हात्सवा प्रगट करते हमें दर्प होता है।

इस कार्यमें भार भी सबरेदनद जारबंडी कार्यस्त की हमें महायश नहीं मितती तो इस कार्य की सकता सायरही होती, वे भार सरीर तथा परिवार की परवाह नहीं करते हमें हो हुई सहर-यश की प्रविशा को पातने में जीर इस परिवा को जावपंत्र बनाने में जी भारतभेग हिने हैं उस जाभामील से इस उन्हें जावनी सार्यकता में भारीहार वरी के जाहिर कर इस पुस्तक में उनके नाम जीहने में जानन्त्र मानेते हैं।

पूर भी से परम मनुपारी शतकवानी परिवत नहागत भी सनवस्त्रती सामी द्या और सुनि महागानी ने पुस्तक की मुसी-भित करने में भी भन उटापेट्ट उनसुनिसानी के तथा हमारे सुनक्षी भी भीनाम् के उसीनी भी बतवन्त्रसिंहती साहत बगैरह शुनेन्द्रपुढ़ी ने साथेगी सत्तर देवर हमारा प्रशस्त बरत बनाये हैं उन समी के भेरे पर परम वरवार हैं।

क सभी में अप श्री में कविदर अपूत मिल्हानाता सती इतप्तराम कवि एस, पाने इसे पुन्तक की वसे ह्यात तिस्त्रने की ह्या कर प्रत्न की विरोत पवित्र प्रतार्थ हैं। इस बदकार का नीव क्षेत्रे हमें परन हमें दिरोत पवित्र प्रतार्थ हैं। इस बदकार का नीव क्षेत्रे हमें परन हमें होटा है।















संख्या आखिरी मानी जाती है लेकिन श्रीलालजी महाराज के लिय परार्थ संख्या भंकमाला की मेरू नहीं थी, किन्तु वीच का दी मणका थी, जिस वक्त छाप संसार को आश्चर्यपहित करनेवाला राजस्थान के इतिहास से बीर द्रष्टांत का वर्शन फरने लगते थे इस वक्त सभा जनों में अद्भुतता छा जाती थी, यति मुनिक्यों की रासाक्यों से जिस यक्त काव्य द्रप्रान्त कहते थे खौर घोर खंधेरी रात के मध्य भागमें इयेली के ऊपर से हाथी की संद ऊपर पेर रख कर शंकेत के स्थान में जाने वाली धामिखारिका का शाब्दिक चित्र खींचते थे, उस वक्ष थोताओं को जितना ही कान्यश्रवण से आनन्द होता था उतना ही व्यभिचार के ऊपर विषाद भी होता था । छाधु जीवन की तपश्चर्या-दिखाने वाले वे सनातन धर्म से भिन्न जैन अंग्फ्रीत खड़ा करनेवाले और सोने की खान के समान फील मुफी की गहनना भरी ज्ञान गुफा दिखाने वाले ऐसे संसारिकों में महात्मा गांधी और संन्या-सिक्यों में पुत्रव शी १००८ श्रीलालजी महाराज ही दिस्त पहे। संखारी की अवेचा संन्यासी में उप विशेष होना नो एक प्रकार का फुर्रत का नियम ही है, जैसाही देह रंग, वस ही इनका यस-सयम रुरी भाग्मरंग भी घरे हुए थे, देह और देही की खाल स्तिचे सिवाय ये दोनों भिन्न नहीं होते, वैराप्य तो नशो के व्यन्दर रक्ष के समान और हृदय की धक्धकी और स बना नी जीवन का श्रासं च्छ्वास ही समभता था । बहुतों को तो श्रीलाल ती महाराज किसी



संस्या आखिरी मानी जाती है शेकिन भीलालजी महाराज के लिये परार्थ संख्या भंकमाला की मेरू नहीं थी, किन्तु बीच का ही मणका थी, जिस यह आप संसार को बाह्ययपिटत करनेवाला राजस्थान के इतिहास से बीर रष्टांत का वर्शन करने लगेत थे इस बहा सभा जनों में बाहमुनता हा जाती थी, यति मुनियों की रासायों से जिस वस काव्य हुपान्त कहते थे खीर पीर खंधेरी रात के मध्य भागम इपेली के अपर से दाधी की संद अपर पर रख कर राकित के स्थान में जाने वाली काभिधारिका का शाब्दिक चित्र समिते के, उस बक्र थोताची को जितना है। कान्यशक्य से धानन्द होता था वतनाही स्यभिषार के उत्पर विषाद भी होता था । साधु जीवन की सप्यर्था-दिसाने दाले वे सनादन पर्म से भिन्न जैन अंग्ट्रीव सदा करनेवाले चौर सोने की स्वान के समान की समुक्ती की गहनता असी ज्ञान गुपा दिलाने बाले वेथे छंसारिकों में महात्मा गांधी और छंन्या-सिकों में पृथ्य भी १००८ शीलालकी महाराज ही दिख पहे। थेशमें की चपेदा संन्यासी में हर विशेष होना हो एक प्रकार का इरात का नियम ही है, जैसाही देह रंग, बेसे ही इनका यम-संयम रुशी आतमरंग भी परे हुए थे, देह और देही की खाल खींचे शिवाय ये दोनों भिन्न नहीं दोते, बैराग्य हो नहीं के चान्हर रहा के यमान और इरद की घडककी और छाधुटा हो जीवन का खाती: रमुचार ही सममहाया । बहुती को तो भीतालकी महागुक्त किसी



















के करवहारों को धोड़ा बहुत यह सब बारा समान सन्त हटाये हैं और इटावेंगे, क्षेत्रिन इन सबों में इस सांख से पन्द्रमा तो क्षिप्र एक हो देखा. इस्लामी पंक्षि को तथा पारशी लाख्युंसी की हो दिरोप नहीं देखा है लेक्टिन सनातनी प्रदानमाती, चार्यसमानी वियोसीकेट, मुनिकेंग्ड, जुनिटेरियन, प्रेमितिटेरियन, इंग्लिसपर्प वैद्योतिमानमान साधु मेन्दासी धर्मप्रवास्त पादरियों का पश्चिय चापिक किया है, बड़ोड़ा में मनावनियाँ का झनलक्या रूप पांडत पुरव हो एवह राज का भी वरिषय है कि से सफी की कितना की सुखरे ६ । इरके समस ने हर नरहीर महराज हा प्रवयनसी राजा है बंदर्व से बहु महोपाद्याय सुरक्त श्रीयक्ष है कर न न क मी समार्थ । जुनाह सम्बद्धाद्य द्वान । रास्त्र द्वार है कारण्यु भर शतादा चार्यु का साहर सामा क्या दा । आहेसह हाहे । र रहेश राज्य कर नर हो साल महासे नदा खर देश का चा to district the second second of of he a color servicions a me o the second of the second to a general groups of a







₹७ इं।	राजस्थान में चाहिंसा धर्म का प्रचार	२२२
२३ दा	एक मिति में पांच दीसा	₹३७
२२ वा	मौराम्ड्र प्रति प्रयाप	₹₹
२३ वा	साठिनाबाद के सातु मुनिराडों का किया हुच्या स	स्यत २४०
२४ वा	राजरोट का विरस्मरणीय चातुर्मांच	£88
२५ दा	परीपनार के उपदेश का झजब अंतर	3.4.5
२६ या	सौराप्ट् का सफत प्रवास	२७०
२७ हा	मीखी का मेगल चातुमील	२७३
६= वा	मैरिवी में तपथरी महोत्सव	3=3
२६ वा	पार्रिय	₹= &
३० वा	गाँठेयायाड का मिन्नाय	₹₹=
1991	मैं.लवी जीवदमा का बकील तरीकि	3.5
३२ वां	बिजयी विहार	288
३३ वां	संप्रायको सुन्यवस्था	₹₹•
३४ वर्ग	कामध्याका विजय	३२ द
३४ वा	टर्नपुरना श्रापृतं उल्लाह	₹₹• *
३६ वॉ	स्टेड़ा संध	₹¥•
३७ वर्ग	यतीमें रपदारक विहार	358
३= वं:	शी संपन्नी भरत	125
३६ वॉ	जपपुरका विजयी चातुर्मीम	1 z =
४ • वां	मदुपदेशका कशार	359
४१ दो	बाचरोवा बहुम दूर	3 6 4
ब३ दो	डदयपुर के महाराज नुमारका सामह	300
कर्त सा	भागाँचा सा बारुपैक नेथारा	3 > 3
वंड यूरे	राजवाराच्या का सन्तंत	3 2 2







पूज्य प्रभावाष्टकानि

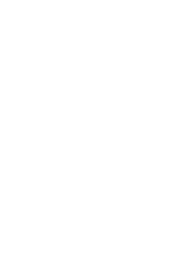
सेवक—रातावधानी पंटितः श्री रवचंद्रजी स्वामी।

नमस्काराष्ट्रकम्।

वसंततिलकावृत्तम्।

मंगुद्रमेपमधरं मरतस्वभावम् मोषार्यनापनपरं प्रधिवप्रनावम् । त्रव्यप्रसारमीयामिवदुःग्यद्यदम् भोनातव्यद्यपिषरं निवसं समानि !

भ वर्षः — मनवन् रिति से हाइ सेवम के जनते प्रश्न रामाद में ही कापात सरम, मोस्न मधी च हहा दुरण है नावते म महा जिल्हा, हेता हैतावारों में जिल्हुत दाणित तमा व्याप्ती, हैं र तारों का मधार कर करेबा सीकों के दुश्या है स्वयन की तमा













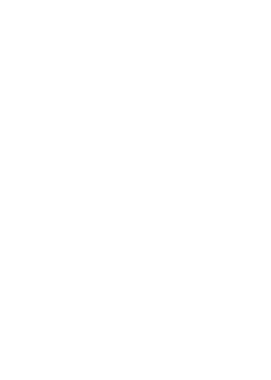




















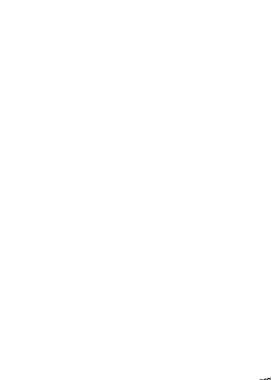








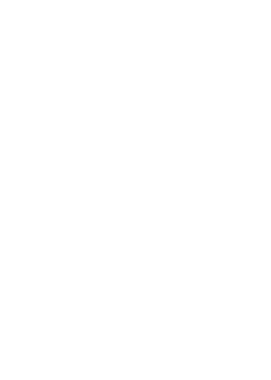












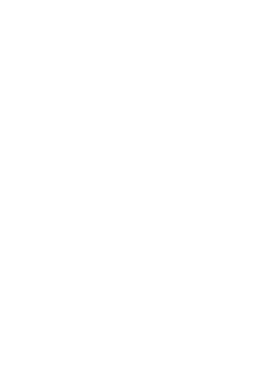


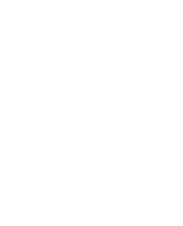














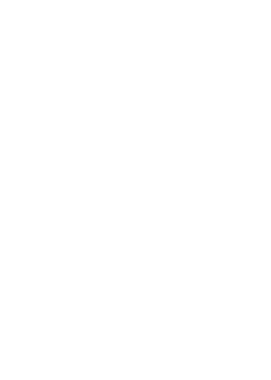










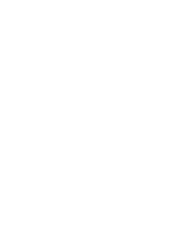
















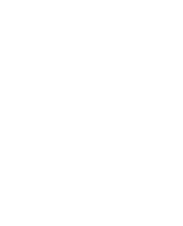




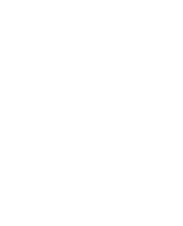








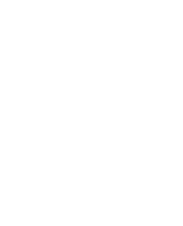












आर्थाती के सहवास से उनने धार्मिक-सान में पृष्टि की टिजनेक-तत प्रताल्यान चारों स्कन्य उनकी जिन्हानी के अन्तिन कर्र रवें नकरहे | सामु साध्विमों के प्रति उनका अनुपन पूच्य भाव था। यह आहार पानी बहराने के समय कराचिन छुद्ध अस्ताता हो । जाता तो वे उस दिन आहारे न करता थीं सारांस इन सती सांची । स्वी का चरित आतिसय स्तुतिपात्र था, स्तुनिपात्र ही नहीं परन्तु भक्तिपात्र भी था।

भीनती चांदकुंबर बाई ने क्षशुभ स्तन सूचित एक ऐसे पुत्र रा प्रमव किया कि जो पवित्रास्मा, धर्मास्मा, महास्मा और वीराना के

क्षे भीतातती को माता के गर्भ में उत्पन्न हुए तीन कर महीने पीते थे कि एक समय माती स हिया चांडनी में सोई थें।



शीलावजी बालक थे तब चनकी माता चन्हें साथ लेकर यानकं में मामाताजी तथा गेंदाजी नामक विद्या और विशुद्ध बरिय बाह्य स्रवियों के पास शास्त्राध्ययन करने के लिये निरन्तर श्यां करते। थीं । उनके पवित्र संवाद का पवित्र कासर उनके हृदय तर बाल्यावस्था से दी गिरने सग गया था । उस समय टॉक में पूर्व भी तुबमचन्द्रजी महाराज की सन्प्रदाय के मुसाधु छपस्वीजी धौपनाजालजी (पूज्य भीचौधमलजी के गुरु भाई) स्था गंभीर-मलकी ग्रहाशज विशालते थे। चपने पिता के साथ हनके पास भी जाने का कावसर शीलालजी को कभी २ मिलता था । पनालालजी महाराज बढ़ बात्मार्थी, सुपात्र, समय के झावा और विद्वान कापु थे । एक से कताकर ६१ प्रवस्त सक के थोक उन्होंने किये थे । इन दौनी सलुद्रयों का सत्ममागम भी श्रीकालजी के जीवन को कार याभिमुख वरने में महान् आघर भूत तुः ।।

यास्याध्या से दी साधु और आयोशी की और कामिन प्रेमभाव की कानुवन भतिभाव या। जब के बोच वर्ष के से तब कीर बालकी की स्थान की तथ्द श्रीकालकी भी ऐसी रामन करने से कि कवंद की भीकी कलाते, निर्देश की युक्तियों के बाल कलेते. गृह पर बार कांभने, दाश में शास के बदल बागण तेने और अक्ष्य यान कांचने ऐसी हाथ में शास के बदल बागण तेने और









प्रशहरण इन महापुरुष के जीवनचरित्र में स्थान स्थान पर दृश्यमान हैं।

श्रील लगा का स्वभाव यहुनहीं कोमल सीर प्रेम पूर्व होते थे उनके बालस्त्रीहर्यों की सख्या भी स्विक थी। उनके साथ दनका

वर्षांव भहाई। वदार था। श्रीलालजी के वस्त्र गुणों जो हार मिश्रम्य द् पर जादूमा भागर कानी भी बच्द्र राजनी सीर गुज़ एक्सभी गोग्यास थ दांगे उन के सम्स मित्र थे। श्रीलालजी के बरागने दन, दोगों मियों के हत्य पट पर गद्दी हात सभी भी और इसींके उन्हें लेगी उनक साथ थमार परियाग कर आस्त्रोत्रति गांचन करने जो हर सकत्र किया थ'. परन्तु पीदे से बच्द्र राजनी की जात्रान मिन्ने में धर्मा नरह समोगों की प्रतिकृतना होने से दांचा न ले सके धर्मर गुज़रमकानों न श्रीलालाभी से साथ ही दांचा मी लेगालकी के प्रति .

देनेहा कारपन्न प्रथमान था।

रहन के भीनालमी के सदारवायों करें इनना पारंत में कि
जब वे रहन दोड़कर पासन हुए तह व्योगों में प्रश्न लाकर रूपन करने नाम या बनके भित्र पत्रका विद्योग महन नहीं कर सम्प्रेय-करने सार्थानहा, कर्नववरायाचान, कीर प्रेम माथ नमाय के उनमें सिमी का इदय प्रमिन्न दोना था। परन्तु करें विदेशकर प्रशिम्न करने वाला सार्य उत्तर स्वाहात था। बीलालमीयों इदय दुनना





क्षपिक क्रोमेल था कि वे किसीका दिल दुवे पैसा एक शब्द भी वहते हरते थे खाँर फचिन् उनके कोई शब्द या किशी प्रवृत्ति से दूसरों का दिल दुख गया ऐसा भाव है।ते ही वस्काल जाकर उनसे चमा प्रार्थी होते थे, ये शास्त्र सद्गुण उनकी बीर माता की तरक .से उन्हें प्राप्त हुए थे । श्रीलाल जी की ऐसी बदार प्रयुत्ति से उनका कि धीके साथ वैर भाव न था. राजुता थी तो सिर्फ मनुष्य के रारीरमें मित्रकी वरह रहते हुए शत्रुका कान करने वाजे आजस्य स्वी रात्र से थी-भीलालजी का चनागुण उनकी महत्ता बढाता था. इतनाही नहीं बिंतु ऊपर कहे छानुसार वशीकरण मंत्रकी आवश्य-कता भी पूरता था। इस उत्तन गुण द्वारा थे परिचित ज्यक्तियो पर विजय प्राप्त कर सकते थे। (त्रमावशीकृते लांके, त्रमया कि न-सिध्यति !) अर्थात् यह संभार समा द्वारा वशी है अतः समा द्राराक्या सिद्ध नहीं हो सकता ? अर्थात सव मनःशामना सिद्ध होती है ।

सं. १६३२ के भाद्र शुक्त ४ के रोज जयपुर खंतर्गत हुं नामक प्राम निवासी बानावज्ञजों नाम के मुआवक की पुत्रों म कुंवर बाई के माथ धोलालजी का सम्यन्ध विचा गया। उस मन ग्रीलावली की उस ६ वर्ष की खीर मानकुवर बाई की उस ४ वर्ष की स्थे।



मुन्दे ही देखाल के होनांच दिस्तित होगये और खिंद खातुरल के एप गुरुषी हे दर्शनार्य स्वाहय गए।

मारदार में घरराजा के दाय मारनकार के माथ दूमरी भी और रह बस में लपेट बर बांधन की अथा अचलित है बसने सर्द ने दाने भी होते हैं सई मचेता होने के खाप हानिसालों का सचेत वानु सहित संघर्टी नहीं कर सके हो भी भाष्टि के सादेश में जाये हुन धीलन्दा सा हृद्य गृह के बारत सर्ग करने का विदेश न रवात सका । दरराज ने सबेच बस्तु महित बाउने तुम है पाना बना का मन्त्री किया इस अपनाय (!) वे कारण संध्य का राहर भारे पह है प्राप्त पहारहें एकलम देने रागे, नदानप्रधातः महाराष्ट्र में बहा कि साम इनके भागिमान, धर्मदेस सीर उत्ताह की कोए मिन्ह क्यान देखी और परमाल की विराण स्पान की मा राजे । इस पराप कोगी की प्रकेश है। सांप्रवित कीर प्रसान यो सम्बेच्या या कृत यो प्रदा यका गरे । इस दक्ती है जी है के प्रदेष कर कर लगह रहा धारण हारात विद्या

भीत गरी है सम्म समय चुनि सागरी है क्षेत्र जाता है। कार्य क्षा भीताओं है जोड़ बादु नागु गतनी वसून हुई है। बाद बातारे तब में राजि है। बारो हरण जानार में बात दें, बहु बीद दारों है हरवब्बत बहु इस्सीवार हो। इस्सी दी । इस् ्(ट्रि:) जनम के शुग संस्कारों के प्रभाव से बाजवय में ही बेगाय के धाज अंदुरित हुए थे और जिन बार्लास्पी समृ जन का बार र

स्मित होने से अब वह वैशाय पुत्त विशेष पक्षिति हो बहु गया भीर उसका मूल भी गहरा पेठ गया था नो भी अतिन्हा से बही की आजा चुप रह कर शिरोधार्य कश्ते रहे | उनकी यह अप्रति शास्त्र चुरु रह कर शिरोधार्य कश्ते रहे | उनकी यह अप्रति

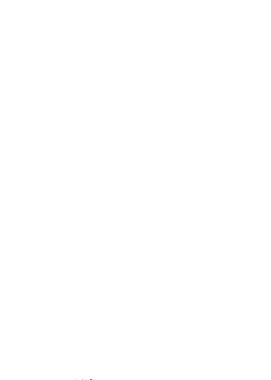
कि व्याह न करता है। क्या वृश या ⁹ परन्तु कर्म के अवल-कायरे के आमे सबने (मर मुख्यना पड़ता है और प्राकृतिक संबै-कृतियाँ सर्वदा देत्यक हा राजा ह । श्रीमती मानकुंत्रर बाई के क्षेत्रमु स मार्स भी इसी प्रकार प्रकट दाना विभिन्न निर्माण कियाँ होंगा ! श्रीमती को श्रीमनी चारक्तर बाई जेमी हाशिचिता सास के पाम में उत्तम उपनेश (शिक्षा) सभ्यातन करने का सुवीर्णे प्राप्त दुव्या और पश्चित्र आंत्रन प्रशीन प्रश्निता है। छ: सर्प नह सैयम पाल पनिसंप इल स्टब्स्य स्वयस्य काम आध्य प्राप्त हुचा, यह भी इसी प्रवृत्ति स पाँच्या म हका है ये अनुमान करना सनुवित है हैसा कोई कह संबंधा ? दा ! श्रीलालंबी का हत्रय उस समय इस से रंगा हुआ के और ज्ञानान्याम में उन्हें अपरिभित्त विपास ही बह बात निविधाद है परन्तु तीका लेने का हड निश्चय उस रामय था या नहीं यह निश्चयामक र्शन म नहीं कह सकते।





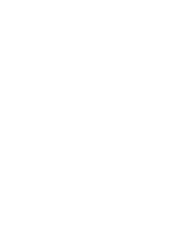




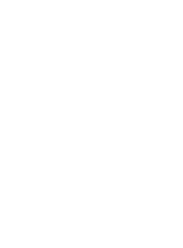












हो भोग दो हुई बङ्फती महालियां कदाधित उनके दृष्टिगत होतीं। इदं इन्द्रियों के बदा न करने थाले विचारों को पुष्टि भिलती थीं।

सुर्यास्त पहिले पहुंचने की तेशी में नीचे उतरतें सामने ही हुल भाड़ दिखते, फैला हुझा पराग मगख को सर करता, परन्तु हुटे हुए अंकुर, रिस्ती हुई कलियां, फूने हुए फूल और नीचे गिरे हूप, मिट्टी में मिले सुम्हताये हुए पुष्प जीवन की बाल, युवा, प्रोंदा फौर युद्धावस्था तथा जीवन मृत्यु का प्रसत्त चित्र छटा करते कार शांजा प्रकृति की समस्त कलाएं देखते, पास के पत्थर पर बैठ लाते थे। प्रत्येक पत्यर, प्रत्येक पान और भूविहारी प्रत्येक पत्ती, माना स्वार्थमय शौर परिवर्तनशील संसार का नाटक करते हाँ ऐसा माल्य होता था । समीप में बहते हुए महते की मानी जीभ आई हो उस सरह पत्यर के साथ का विवाद इस नाटक में संगीत का कार्यक्ती था " जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि" इस नैसर्गिक नियमानुसार ये सब दश्य और सब घटनाएं श्रीजी की वैराग्य की है। शिचा देती थी।

प्रकृति की रचनाओं ने मस्तिष्क के परमासुओं पर इतनी प्रवस सत्ता जमा ली थी कि राइ में भी वे ही विचार स्कृरित होते रहते थे। चाशा यही रागवार में क्षेत्र हुए प्राणियों की प्राण्यियों वृष्ट है। यह एनुस्य के मार्शनिक प्रदेश में प्रिष्ट हो भविष्य के लिये नहें देश देश देश हैं । यह प्राप्त के चाया स्वयं देश हैं । इस प्राप्त के हैं । इस के ट्रिक्ट में भी भी की प्रभवन्न मान्य कर के दूर्ण में गैना ल ट्रेक ले चाये, कम समय कर को क्या १० १३ वर्ष में गैना ल ट्रेक ले चाये, कम समय कर को क्या १० १३ वर्ष में वर्ण व्यव्या के स्वयं के साम का हर या सन्दर्भ कमा गया चीर कर्ष कर कर विकास हम साम का हर या सन्दर्भ कमा गया चीर कर्ष कर कर विकास हमा का हम या स्वयं कर स्

(60)

यक ही विचार आधानन देता था। ये ऐसा मानते थे कि, इनकी बहु के यहां ज्ञाने पर इनके विचारों में परिवर्तन हो। जायगा ।

इमी आशा में वे बोंडी दिन दिनाने लगे।

स्पर्यो प्राप्ता सफल डाने के स्वेन संस्था हुए। घर १००० स्थापी प्रमुखे सिम तो इसका प्रोक्ता करना प्राप्त न कि , घर १००० स्वर्ग करना कि ति है। इस प्रमुखे स्थानिमा प्राप्तिक है वा सभीट के रूप नित्र है। इस प्रोक्ता का नवा परिपास हरता है तथा जीसी के बुद्धान दक्ष रूप हतार लिये ये इनमें से नीचे के वचनामृत का स्नरण वे दारम्शर केंचा करते थे।

प्रियास्तेरो परिमान्तिगडसदशो पानिकमटो यमः स्वीयो वर्गो धनमभिनवं बन्धनमित । सदाञ्मेष्यापूर्य व्यसनिवत्तसंसगीविषमं भवः कारगिई तदिह न रितः काणि विदुषाम् ॥ -

भाषायं—संसार में खियों का स्नेह घुंखता के बंधन जैसा स्था भटकते हुए गोधे जैसा है । जपना हुटुन्बी वर्ग यमराज के समान, सहनी नई जात की बेड़ी के समान है और संसार जप-वित्र बस्तुओं से लीन दु:खराई शीनों के संसर्ग जैसा भयंकर है । यो संसार यह सबसुब कारामह हो है और इसीलिये विद्वान् मनुष्यों की शीति इसके किसी स्थल पर भी नहीं नवर आही ।





ऐसा मधुर संगीत किताब कालापने लगे। सूर्व नागवण लिकिस्पें बट बुकों की भेद सीली के मरतक बर विजय ताल पहिराती हीं ऐसा भाम होने लगा, मुद्रि देवी ने भीली के साथ महातुस्ति दिस्तोन के लिये ही यह बदबस्य क्यों न रबी हो है

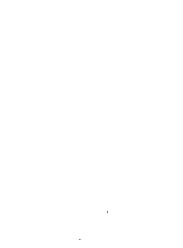
कता ! रेमा मांगतिक शब्द ! रेमा अपूर्व प्रत ! देमी दिन्य मंत्रिमा किया विद्युद्ध जीवन ! यस यम में पैसे ही पावेश जीवन दिराद्धेता. यही बत्दास्त्रपद्म सार्व पहल पर्छना स्त्रीर जन समाज को भी इसी मार्ग पर ची चुनां जिसके हिये मेरा हुद्द्ध विकहर रहात है। इसके दिये भी यही निर्मय सीर कत्यास्त्रारी मार्ग मोर्चन । क्रावंड इझवर्ष, यही मेरे जीवन की क्षमिलाया हो । रेंप्रेस्टानिक मुठों की काव मुक्ते कनिक भी इपहा नहीं, इतिय रित्म का दियर भी क्या हुने दिवासम हुछ हुई महिन होता है. में चार दियाँ का दमन हर बाद्कारा, संदम भैगीकार बर्मना महाबारने। बागुरा बाँचेन बर्मनाः प्रमु साध्यान धर्मता कार बस के आता है गए करनी काला से दवराजता। बद्ध वय की जनवनार्त हवोर्डिनंद कहताला को से कार्यन कहाँसे पादता कारता मीर रायत में प्रवाद दे का दिख्य प्रकार है पाछला। विदय बाबला की पर्यष्ट कार यहप्रकी लेल्ट्र रामाणा में में कार्यके गरीह कार्यकी र्रोदेश कीर एक की परिवाह वहीं होते हुया बाँच के करनार्थ हेर

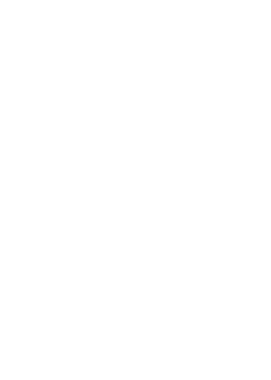


राखंदर को के कर करे केने है जिस हर दे करे जिल भी स्टब्स्य हुए तम बर्देल स्टब्स्य में सर के सन नहाँकी हे कर हर लिये। इन होई हरू की हुछ हेन में जारेंडा बरदा मा पत्तु इस्ते मन्हेंस हाई के हह भी बतल र लिहरा या। बस्ते पति की बैहन्यहित सन्दे हुद्द को नोच आही की १ वह रू दे भदेती रहते हर २ दिकामात में दुंदाते भीर दिन का चर हिस साह प्रसन करना तदा दिन २ दुकि न्दुकिये हुन्छ करका शिविषात्र बनना ये बराय सोचने में ही प्राय: वे घरना सब समय रपतीत करती थीं । " विनय पही नहा वर्रीकरण हैं " बहु नह-मंत्र बाढ़े ही बात ने इन्हें हिया दिया था, इनीहिये वे हर उनह दिनर, मंद्री द्वारा परि दा मन प्रकृत बरने का प्रवह करती की परनु भीको हो प्रायः इष्टेंद दूर ही रहना पहन्द करने हैं।

विशेष कर वे प्रयष्ट् इरेली के प्रयष्ट् स्थान पा है। सेने, कविन्द्र सार्थालय करते और आदिक समय पहने लिखने या अमेनुस्त ने ही स्पर्धालय करते थे। येमा होने भी उमकी पत्री को यह जानाना भी कि धीरे ने पति की मिल की दिक्षते ता कहेंगी। उनके मानुनी भी प्रायः पही आधानन हेते रहते थे, परम्तु आत या अमान्यान सिने के प्रयाप्त पर्देश पर की हुई प्रतिकृति कारण शेली के दिक्षण, की प्राप्त पर्देश पर की हुई प्रतिकृति कारण शेली के दिक्षण, की स्वार्त में दिक्षण की स्वार्त में दिक्षण की स्वार्त में दिक्षण की स्वार्त की स्वार की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार्त की स्वार

proper .







मान हुं बर बाई पति के पास का खड़ी हुई और नम्न भावपुत दीन वाली से, हाथ पकड़कर लाई हुई जबला की खोर खाभिटाए से देखने की प्रार्थना करने लगी । परन्तु काम को किन्पाक फल समझने वाले और प्राप्त की छाहुति देवर भी शिवल वत के सरच्छा की प्रविद्या लेने वाले हटब्रवधारी महानुभाव शीलालजी ने नीचे नयन रख मौनगारण घर लिया। युवती के सौजन्य, सौंदर्य, वाक्पट्रवा श्रीर टावभाव उनके हृदय पर एकान्त होते भी कुछ असर पैदा न कर सके । एकान्त में सी के साथ रहना, वावीलाप करना, इसके करुण वचन सुनना, उमके दावभाव या अंगीपांग देखना प्रस्ति प्रधानियों के तिये आनिधक्त और अवत्यनीय है ऐसा सोवकर भीजी ने त्वरा से निक्ज भागने का निश्चय किया और उठ खेड़ हर. परन्तु नीचे उत्तरने की पत्थर की सीड़ियों की राह रोककर मानकुंबर धर्द खड़ी थां, इसलिये कीजी सीड़ी के इसरी छोट चांदती के दूमरे संड में जल्द २ जाने लगे।

ह्रय रा भार कम करने के लिये प्राय प्रवास से साम बड़ाने और उन्हें भग न लाने देने का निश्य कर बुवती उनके दोसे २ कोमन पांच से पत्नी और शोली का हाय परहने के लिये जनना कोमन करवाप पड़ाया। अपना बहां हान जो जिना ने पति की हथाने के समय हाथ में कीपा भा बहां हाम पति की किर से परहने का निनय करने पर परता की जोर स्माहदा है। रह





इसी बाद जहाँ की का निवास हो यहाँ महाबारा का रहे ने विक कारी नहीं। श्री देखें कालिक सूत्र में बहा है कि :— इत्थापायिडिन्छिम्न कर्म नासं विकर्षियं। १००० आविवाससर्थ नार्स समस्यारी विवरुष्ठय ॥

जहा दिराला वसहस्स मुखे न मूसमार्थ जसही पंतरधा के समेन इत्यीतिलयस्स मज्ये न वंगयारिस्स समी नियासी॥ सर्थ—जहां विज्ञा रहता हो वहां युदे का रहना कोक निर्दी

द्धयं—जिमके हाय शाद दिस भिन्न हैं कान कीर नाक भी बट हैं कीर मी वर्ष की बुद्धिया है ऐसी की द्या भी न्रस्पारी की सहवास न करना पाहिये ! जहां कुक्हरपीयस्म निषं कुललको मर्य।

एव सु वंशयानिस्म, इत्यिक्तिमहो सर्थ ।। इत्यं-अंधे कुक्कुट के दचने को हमेरा। विद्वा का सब बहुता है वैसे ही सदायारी को स्त्री को देह से सब करनत होता है।

ं श्री बीर प्रमुने पदित्र जिलागम में ब्रह्मचर्य की भूगी २ प्रसोग की दें भीर ब्रह्मचर्य के भग करने को क्रापेक्ता मरना मला रेमा बागुकों को सन्दोधन दे कहा है। शोकों भी गृहस्य के वेप में सामु हो थे।

कामान्य कौर विषयनुत्रक मनुष्यों को यह गुजान्य पहुकर मीयता प्रतिहें, प्रधानाप करना पाढिये कीर खपनी क्षात्मा के हितामें इन महास को सरमान्ति का बनुकरण कर माफल्य जीवन करना पाहिये? विषयों के गुलान न मन मन इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना की सन्ति। पाहिये सौर पेका करने के लिये क्षेत्रक प्रधार के नियम निश्चय कार्य कर जीव की लिये में भी वे पाहने पाहिये।



अध्याय ४ घा

वैराग्य का वेग।

षपर्युक्त घटना के बीतने के थोड़े दिन पञ्चात् भीजी ने व्यपनी माता के पास से विनयपूर्वक दीका के लिये शतुमति मौगी। माजी के कोमल हृदय पर ये शब्द वजायात जैसे प्रहारी हुए तो भी इनने धैर्प धारण किया कारण ऐसे ही मतलव वाले शब्द वे जाज से पहिले कई समय पुत्र के मुख से सुन चुकी थीं इस समय वनने इतना ही कत्तर दिया कि " संसार में रहकर भी धर्म, ज्यान क्या नहीं हो एकता ? इमारी दया न आती हो तो हुछ नहीं परन्तु इस विचारी के ऊपर तो तुम्के कुछ दया लानी चाहिये। इसका जन्म दिगादकर जाना यह महा अन्याय है। फिर भी अगर तुम्मे दीसा लेना है वो मेरा वचन मानकर थोड़े वर्ष संसार में विवा। " इतना कहते २ वनका हृदय भर गया और आंख में से आंसु गिरने लगे । शीजी ने अपना टढ निश्चय दिखाते हुए कहा कि " माजी ! आप कोटि उपाय करे। वो भी में अब संसार में रहने वाला नहीं हूं। मुफे अब आज्ञा देखों तो संयम आराधन कर अपनी आत्मा का कल्याण करूं। आयुष्य का स्य भरका भी विश्वाच नहीं है।"

माजी के कहने से-इस बात:की खबर नाध्वाकजी की और

किर सेठ हीरालालजी को हुई । सेठ हीरासालजी ने भीलालजी को युकाकर कहा कि, खबरबार ! दीकां का किसी दिन नाम भी लिएा है वो । आज से तूने साधु के पास भी किशी दिन नहीं जाना । साधु तो निठहो बैठे २ लड़कों को चढ़ा सारते हैं। " इन शक्तें से श्रीलालजी के हत्य में बहुत दुःश हुआ । बन्होंने बोलने का शयश तो किया, परन्तु कुछ बोल न सके । अपने दिता के बड़े भाई हीराक्षात्रजी की चाला का उनने कभी ब्लंबन नहीं किया याती बनके सामने बोलना भी धरहें द:साध्य था। सेठ दौरालालजी ने माथूनालजी से भी कहा कि " इसकी बहुत संभात रखना और

साध के पास इसे बिल्क्स मत जाने देना "। हीरालालजी सेड की सखत मनाई होने पर भी भीकानजी गुप्रशिति में अपने गुरु के पास जाने लगे | सद्गुरु का वियोग ये त सह सके। सरसंग में कोई चताकी चाकपंछ शक्ति रहती है। शीजी की उत्तम झानाभिजाया भीर सरसग के व्याकर्षण के समीप क्षेत्र है।राजालजी की कोर का सय कुछ विनती में न था।

वक दिन भीती ने परमत्रवापी पृथ्य भी प्रद्यसागरत्री अ

🗴 इन महापुरुष का जीवन-मरित्र गुवावती में दिया है।





महाडी सम्मूरबन्दली तथा मगनहालली महाराज विराहते ये इनके दर्गन क्षित्रे साने की मगनतालयी महाराज कि यो विद्यमान कारावें भी अबाहिरलातकी महागक के ग्रुक में उनकी सबस्यव राने की चनुरम सीर सीट सार्क्योंनी के देख मीतावजी **धानम्हास्ययं हुए और इनकी सेवा में थोड़े दिन रहना निते हैं।** केंग्रा बनता हो दिया सोपने शंगे, परन्तु माई की इच्छा के कारत के दुनरे दिन लावर चाले। वहां भी देलाँकें सहाराज प्रमुद्धि मुनिराण विरालते थे, बनके दरान विषे और किर दोनों भाई टॉब कारे । नामुहातकी का कारते होटे भाई (मीडी) पर बात केम था। इन्हें हरछ ए जुदा रखना ऐसी बनकी सास इब्हा सी। इमीतिये राह में भीती भी गर्ची मन्ताइन करने के लिये दे बन्दी महत्व प्रश्ने के दर्शन हमा दनदी वाही कवल बरने बराने बन्धते ये । इस समय गापुलालकी के भीर २० भीटी की १४ वर्ष की बग्न की ।

टॉड बार्च प्रसम् भीडी काहर वी हदेती में बहेते रहेते भीर पटन पाटन टमा मर्भागुद्दान से बीदन सार्थेद करते थे। कहे सेवर कामाह समस्यामा है। या से सामाहित सारके की दलकी बकत

के सम्माद करने की देनी ही होती बीची नहाराज को भी प्रम की गई की कीट कह प्रवाही समयज्ञादकी महाराज की कीट से ही निशी हुई है देवा के कहा करने जे }

({ **{ to** } }

नरह किमी भी युक्ति प्रयुक्ति से या चन्तमें बढ़ाम्कारसे भी संसारमें राउने

की थी। जैनसाम्त्र का पेमा कायदा है कि जबनक वहाँ की काळा म मिले सवयक विधान न हो। सके। भीजी ने बहुत के प्रयम्त रिये, परन्यु काला नहीं मिली। इसमें भीजी को बहुत दुश्य हुआ। और ऐमा निश्चय किया कि सब नी किमी दूर देश में जाकर सन्त महत्त्व की देशा कर जैन सूत्री का कश्याम कर काम्महित सन्ता । परिता

अयवृर का रल स बेट सुनमन कांडवाकार की बोहर चले गए और

बना को मानुभाद सामां शासन नमा । भीभी का निजय मुण्यु इस्ति बार्क लिया का प्रश्नात नथा । त्रार्थाक की कर्याभूत इस्ति सुक्त का रणार्था - रा । त्रार्था के सामि भीव इस्ति सुक्त भी पर्याप्त न । राग्या क्याने हैं देशी समझ इस्ति सुक्त भी प्रश्नात का स्वर्णात करते हैं देशी समझ इस्ति भार्मी प्रश्नात का सहार्था । त्रार्था सामार्था स्वर्णात इस्ति भार्मी प्रस्ता सहार्था । त्रार्था सामार्थी स्वर्णात

श्रीची ज टक क्षणा पत संघाणाका गण बन संगिता था हिला हिली खानने देश भी हुट्टी ज्याक दनक लगा सहिला साह रसितिये इनके प्रवास समय में इनके खुटुमंत्रीजनों ने ऐसी पिन्ता-मस्त स्थिति में ऋषने दिन निर्शनन किये. यह जाने देखिये।

र्क्षाओं टोंक से स्वाना हुए उसके दूसरे ही दिन इसके भाई नाधृतालजी उनकी तलाश में निकले और जयपुर स्टेशन आये परन्तु क्षय किथर जार्क यह राह उन्हे नहीं सुक्ती : बहुत सीच दिचार के परचान उन्होंने निरंपय किया कि जहां २ विद्वान सुनिराज विराजवे होगें वहां जाकर दपास करना चाहिए | ऐसा छोच वे खशनर, नवेशहर, रतलाम बीमानेर, नावार शोधपुर, दिली, जागरा जादि २ वई शहरों में घूमे, परन्तु किसी भी स्थान पर भाई का पता न मालन हुआ। फिर निराश हो पर आये। माजी प्रमृति को भी श्रीलालजी का पता न मिलने के समाचारों से बड़ा हुर्से हुवा नापृलालको से रोज पार्रे और पत्र हिस्तना प्रारंभ किये यों दो एक महीने वीते परचान् एक समय माजी ने सजज नयनों से नाधुलालजी को कहा।

स्विति का कहीं पता न लगा पेमा पह कर तूं हु। यात घर में देता रहता है यह ठीक नहीं यह सुन ६२ नायूनान हो का इस्य भर काया। मातु की को प्रोत उनका अनुस्तित पूरर मान्य य उनका दिल किसी भी तरह से ना दुस्तान। यह उनका हुन मिन्द भा इसिये मातु की के ये शब्द करीप हुन हुन हुन हुन के कि

दूंदने निक्ले दूसरे ही दिन स्वाना होकर कई शहर और मामें में होते हुए नागोर आये। नागेश में इन्हें एक चिट्टी मिली कि जो टॉक से सेठ दीगतालती के पुत्र सदमीवंदती की लिसी हुई थी। उसमें जिया था कि नामद्वारा में सुनि भी धीयमलकी नहा-बाज विराजते हैं वहा शीजी है। इसलिये हुम वहां से नायडारा जाओं । इस पत्र के पाते ही नायुलालजी नायद्वारा की और रशना

इए। राह में क्पासन मुकाम पर पंठ मुनि भी चौधमसूत्री महा-राज के दर्शन हुए और क्यासन में ह्यांस करने से मालूम हुआ कि टोंक से लदमीचन्दर्भ नाथद्वारा काये वे कौर भीजालजी की खुला ले गए हैं। यह सायर सुनकर नायुलाल की भी वहां से सीचे

(११२)

टोंक चाये। एस समय भी भीजी बाहर की इवेसी में करेजे रहते ये और से कहीं भग न आय, इसलिये वनके पाम मास मन्त्य रक्ये गर थे। इनके शिये भोजन भी वहीं पहुचाया जाता था । साति की

इसीई में भोजन करने जाना हनने हमेशा के लिये बन्द कर दिया था । एक साधारण कैहै। की तरह उनकी रियति थी । अब २ व्यवसर मिलता तब २ वे व्यवनी मात्रश्री और भाई की दीशा की भाजा देने के लिये गार्थना करते थे। आपस में कई अमय अधिक रममय सुसन्ताद भी दोता था । शांजी की मान्यता

(११३)

क्सिने के तिये चाहे जैसी सचीट मुक्तियां भिदाई जाती हो भी उनका प्रस्नुचर सीजी पहुत उत्तम रीति से देते ये। मोइ की उप-ज्ञान्तता और उत्तम्प दे कि से मेरी मेरी मोइ की उप-ज्ञान्तता और उत्तम्प काला में स्थित प्रज्ञापना प्रकटाता है। निमोंही पुरुषों के लामने प्रकृति हमेशा नानावस्था में ही राष्ट्री रहती है। सत्य उन्हें कही हूं दने नहीं जाना पहता। वे स्वत: ही सत्य की सालान मृति रहते हैं। धीजी महाराज ने मोइ—सिपु को कई क्षेश से प्राधित किया था, इसलिये उनकी मित क्षति निमेत्त हो गई थी और यही कारण था कि, भीजी के उपदेशात्मक और नाभिक राज्य प्रहारों से माजी के मन पर गहन क्षत्तर होता था; परन्तु सेठ हीरालालजी की हेच्हा के प्रतिकृत में निश्चयात्मक रीति से कुछ भी कहने की हिम्मत न कर सकती थीं।



श्रम्याय ५ वां-

विन्न पर विन्न ।

येथी संकटमबी हालत में दो एक वर्ष व्यतीत होगव । श्रीलालजी नी नगर १७ वर्ष की हुई। आजा के लिये उनके सकत प्रयत शिष्तक गए कीर दिन पर दिन कथिक सस्ती होने लगी ! साध मुनिशामों के दर्शन, शामा भवता और पठन पाठन में उनके इंड्रानी जार्गी की क्योर में दोते दूर विध्न करें कविशय कामहा दीवर ! बित अपनाध केंद्र में जाल भगना यह यहाँ का आन्याय अब हत्यें ाँदर्शा नाष्ट्र सहत न है। गरा । अपनी स्वतंत्रता जपहरण होते वल सीत्री के दिल में अधिक योड सबी । सत्य कहा है कि "मुस्यू धार्म। को धशनि में लिये बाइर निक्शने के प्रधम आपूर्ती करत: बशा की बसन बनाना चाहिय " । एक दिन सुबह शीलकर्म से नियुत्त होने के मिस वे फर्पी मंति में सीचे चाये। इस समय नस्त ठड पह रही थी। तो भी हुई कपड़े लते न निये ककत एक चादर डाज ली और इसी इनि

में वे टीक स्थाय स्थाना हुए। एक दिन में २२ कोस की किंवि सीक्षित पार कर शाहपुरा के समीय देश माम पहुँचे। भूस पर्धा



है। शिवशासमी भागवाल भीजालाजी तथा बनके इंट्रामीजनी से

पूर्णनया परिधित होते से सब हाल जानते. में हैं हो किं बन्दोंने दूसरे दिन एक इंट दिनाय कर बीजी. की सांसे कुछा हो कि ही तरफ रवाना किया और जनक स्वीयत मार्ट्सारे हैं त्वरण टॉक में रहने की है। दिश्यत की 1 तथा इंटबासे हो में सानमें ती ही से कहा कि तुम रन्दें टॉक प्रदूषां का नहीं मार्चें तानी गीति से कहा कि तुम रन्दें टॉक प्रदूषां का नहीं मार्चें तानी गीति है। से स्वीय नाम निलेगा | उसी दिन साम को भीजी टाक पहुँचे | जिलेगा | उसी दिन साम के अधी साम निलेगा | तिम के से मंग इबकी साम निलेगा | तिम के से मंग इबकी साम निलागों की निलेग हो में सुकें साम के स्वाय निलेगा के से महा साम के सिलागों के स्वाय निलेगा के स्वाय निलेगा की में सिलागों के स्वाय निलेगा के स्वाय निलेगा में सिलागों के स्वाय निलंगा कर साम मार्गें में सिलागों के सिलागों के सिलागों के सिलागों के स्वाय निलंगा कर समझा भी सिलागों के सिलाग

सीति ज्यह यह बील द्रा करता तो साम के उद्देश हैं। जा स्वाहत ही कि स्वय हु इसीक निर्देश ता मात्री (स्वर करता है। कि स्वाहत ही कि स्वय स्वत किया है। तर स्वर करता है। कि स्वय स्वत किया है। तर स्वर करता है। कि स्वय स्वत किया है। तर स्वर करता है। तर

मुक इस बरद पड़ी क् चेत माने हो हमीरन । . । बहु र देशन होता

बहुता है और तुम भी नडबंगर याने हो ..





त् चतुर है इसीके समफ ले। जीर मेरी दया चाती हो तो मेरी जांकों के सामने रहकर चाहे जितना धर्म ध्यान कर। तुक्ते में कमाने को नहीं कहती। प्रभु की दया है जीर भाई जैसा भाई है तुक्ते कुछ दुःख नहीं देगा।

श्रीज्ञी—माजी ! घागे पाँदी मुक्ते यह पर छोड़ना पड़ेगा ही घौर लम्बे पांव पसार कर परवश दूमरों के कन्यों पर चट्ट इस हवेली से निकलना सो पड़ेगा ही । तो घमी ही खड़े पांव से श्वबंगत मुक्ते इस बंदीखाने में से छूटने हो घाँर सिंद की तरह न्वतंत्र विघरने हो तो क्या गुरा है ? !

श्री मृगापुत्र ने खपनी माता से कहा है कि: --

वहा किंपागफलाएं परिखामो न सुंदरो । एवं भ्रचाय सोगाएं परिखामो न सुंदरो ॥

भी उत्तराप्ययन सूत्र, १६ %।

किंपाक वृत्त के फल देखने में बड़े सुन्दर हैं परंतु परिएाम भयंकर है उसी तरह संभार के मुख भीग भीगते मिष्ट हैं परंतु परिएाम भयंकर दुर्गति में लेजाने वाला है । भी कीर्विधर मुनि ने भी खपने संसार पद्म के पुत्र मुक्तेशब्रकुमार की कुटुम्ब सीर



े सहराति एम् ब्यापी कार्यी सप्तार पाँत के देशता 🖰

ी भागीत निकास गर्भ परितर्वयन्ती सेराध शहर हह शहर्यन्त बेहस् । सातु परिवर्शत भित्र प्रश्तिकारमी सोहानसाप्यहित्सापरगीति भित्रस् " ॥

जम बापना कीर नेता सहयों के मराज्ञा होते प्रीवसर्थ न्य मनुष्य मक्षात में पहेन्दते हैं, परिश्वा पर होता है कि, हिंदू बाले पहेंचे कन बहित्तर यह गुण्यातु यन होता काश है की शम्बन्धिक में की वह जाती है है

म भी रे क्या मानिये थि, मेरा पैसान भेटा, शास या वाह है सीना कैमा नहीं है। प्रमान कहा है मोना कैमा नहीं है। प्रमान कहा है मोना कैमा नहीं है। प्रमान कि मोना प्रमानिय प्रमान के मह कि प्रमान के सहन प्रमान कहा कि सम्मान के देना। पर भीनों पर्ने गए।

हर राज्ये के मालों खें र भाई के एन प्रविज्ञाति हैना प्रकार दिया तमके परिशास में त्रार्ट जराधय राजे की परव नगी मिल चार किसी प्रवार का परिसाह ने देना देना विभव किया

एक समय बातचीत से बीडों ने द्शीया या विशान

(244)

च्छ चर[ा] समित्रात तत्री वर बराव केम रहो। कर मेही। केष्ट चरण करवा शुक्रेत वस्तु वाहत वाह रही चहु बीही। सुंदर का तत्र ते खसा समुद काहै। कावान के पदवाती। रेकेसपी साकक काल करो परापालक में वहि चाहे मवाते।

प्रमेक प्रमुप क्या के नका जाता. विता के क्या के किनने ही सम्बरी करों भनार में रहते के जिले प्रश्नात और समय दे पर क्याने के करता की हैं। इस भागों से करते कांध नहीं के । स्पृति भावत का प्रभन्न करते कांधे प्रमुख्य में रेते के बुक्त के

्रिक्टिक ही जिन्न क्याने का बाल की क्याजा प्राप्त करने के हिने कह ैं क्याज़द करने जम के फार्चा चौर मनुष्यत नक्तिन कर क्याके ं पह स्टान निवाले के हु पर्यक्त क्याज क्या क्यापर के साक्तों में

में। में के बादमा हूं कि, बाता रिमा की मार्चन नामम बेगा वर्ष

है कारत कि वे की मेरे जल्लाता भीर पानन वर्ता है। रिता की गीद में रमा हूं, माता के दूब से पता हूं उनके उद्योर से दिवतक का प्याना भी सकता हूं। ततकार की घार पर बत सकता हूं और भिन्द में कुद सकता हूं, परन्तु वतका दुरावह मेरे भेग कार्य में बायक हैं इस निर्दे साकार हूं...

सोक्यान्य दितक के तिये कहे हुए राष्ट्र यहाँ स्मारण हो आहे हैं ' मर रेड के पुत्र समी की निरास होना योग्य नहीं व्यतित समीक्ष्मान, सन्क सावस्थानतः, सन्त अहा, सक्ष्म वेर्ष, स्मारण हो हो हो की सक्ष्म स्मारण साव सहे रहने बाते न से, सह्यदा करने बाते कम दे देने बेदोलों में भी वह भारत दितक निरास नहीं हुआ, समित नहीं हुआ, विस्मार तेने नहीं तहरा, समेक संकट से परन्तु स्मार सेंच जर दर तो प्रांग ही रक्ता कात उनके पान सर हैगा। । दुश्य की रात व्यति हो का प्रांग ही रक्ता की हो पान सरें ना स्मार सेंच जर दर तो प्रांग ही रक्ता कात उनके पान सर हैगा। । दुश्य की रात व्यति हो कर प्रातन्त्रता सी होयां ।' ।

च्च समय (चं० (६४२) में पूरा की झ्यनतालको महास्य क्षेत्र में विस्तवते थे। बनवे पास कीवी शासाययन करने बसे परन्तु कीवा की माता न निती कीर काता न मिले बहांतव ोजी से हुक कम सके देसा न या (

सकतिन कीडी इतेडी में काकर कासी पूरा न

माता के पाछ छे ले तिया और अपनी गोद में दिशाया । मोहे समय कफ प्रक्रेण गाया भीर फिर गाया के हाथ में देकर शीभी भोते भ दूसकी

सारकी तरह रमारा "मार्था मोत "नेवर " इसकी और हमारी सेवाल केने का भाग तो तुष्टारा है " भीजी मीन रहे । वैशाय के दिवार ल्यूनित होने को ।

दिश्यापक " इस कोम जी एक तम्बेचन के विश्वारों का मनन करें " इस्सुक इसके नो बाब नकते, सार नेप सके हैं तो करें के हैं नहीं मुन सकता हिमी को जानाह भी तरी, यो कहाँ नेप मानव वह सभी हो सकते " सारक रोने हैं तो सोग होनी करने हैं के उसके एक स्वार होने हैं तो सोग होनी करने हैं के उसके एक एक एक स्वार जाना किए सार रोने हैं तो सोग होनी करने हैं के उसके एक एक एक स्वार जाना किए होने हैं जो करने हैं पा सोग करने हैं पा सारक स्वार जाना किए होने हो हमारी हो हो हमारी हो हो हमार हो हमारी हो हमार हो हमारी हो हो हमार हमार हमारी के स्वार सार जाना किए हमारी हो हमारी हो हमार हमार करने हमारी हो हमारी हमारी हो हमारी हमारी

. प्रकार कर्मी क्षेत्र निष्णांत्र केली संप्युत गहती हैं। तिस इरक्साओं के में विश्वक होते. के विश्व कामार में स्थान, सदी , काम्यू के प्रकार की संक्षेत्र के लिये ज्यान की सहस्यात की सावस्यकता नहीं, संगी की स्थित

मान बरावे के दिने दुनियाँ चनुर्न महीं |

---:::::::---

ञ्रधाय ६ ठा

साधु वेप ऋार सत्यायह।

ची, स्वे. मार्टन

भीति वे वैशाय का देत बहुत शांता था थीर शास्ताध्यास से समुसेरत भी मितताथा। प्रथम हो एवं देर ये रा वे समान वनका विचार था भी ना ' रूपये न प्रशायनम् 'प्रस्तु प्रयम्भियाति में नाव की से स्थ प्रथास काहर ये होने होने तर इस महासानर में नाव की प्रदेशा भाव पिता के साथार से ही प्रवाह करने तह प्रहास करने का निश्चय दिया (सानेक कायात थीर थाय सहत करने तिश्चय की हर प्रयोग रहे। इस सिश्चय का प्रविद्यान यह एक गांगी कि समायन है। इस सहायन के सहारे गांवे वारों ने ही करें बीर-धने तायक का नाम पाया है चक्रवर्ती के समान सम देश वर्ग किये कोर शी बहुर्विध-धंघ ने प्रीति कलश से प्रज्ञालन कर पूर्य ताज परिशया।

श्रंतिम निश्चय कर अपने मित्र शुन्नमस्त्रजी पोस्वाइ के साथ श्रीजी एक दिन टॉक से गुप चुप निक्रन गये और अपनी पूर्व

पिरिचित शिव रसिक पहाड़ी को देख उसके मममावे कामृत्य सर्वों को याद कर दीज़ा लिये विता टॉक में पग देश ही नहीं यह निज्ञय किया। यद गूगा विज्ञय कुछों को सद्यक्त यह सेदेशा प्रकृतिक कार्यों सर्वों हारा भवने शुद्धवित्रयों को पर्दू नाते को कह कर से रानीपुर्त (मूंती केट) की तर्वा प्रकार में स्वाद राज्य कि से गण्युलासों में सम्ब बनसे माता गुज्ञस्त्रवाने की मात्रवानुस्तानां की बहु बनके पीक्षे पीक्ष रानीगर सद। बसा पुग्य स्वतानां की स्वाद स्वाद से

थे । पूज ताज करने पर विदित हुन्छ। कि, वे दोनें। यहां आय थे परंतु यह रात रहकर चले नए हैं। यह समाधार सुत सब बढ़ां से

रवाला हुए । राइ में स्वयर मिली कि, एक जाले के नीचे दोनों जर्मों ने स्वयं धायु के पेप पहिने हैं स्वीर मापु के भंदीपकरण के कोट की सरक गए हैं। यह घटना संब १८४४ में मगसर कर में पटी। किर भीनी की मालु भी प्रभूति सब कोटे स्वाब बड़ों भी पता

न बला । फिर निराश हो सब टॉफ बाये नारों ओर पत्र व्यवहार

शुरु हिया तद ऋदर निक्षी कि, समयुग (मानपुग) में मुनिकी विश्वनतालबी विस्ततालबी और दलदेवबी महाराज दिसामते हैं उनके पास वे अभ्यास करते हैं।

यह सहर पड़कर नायुशासको वया गुजरमसको के आई हरदेवकी ये शेनों सने काहे दिवा साने को रामपुरा गए परन्तु के वहां न ये सहर मिसने से वे सुनहेत (इन्हीर स्टेट) गए वहां एक हरवी के मकान में शोनों सामु के वेप में नजर आये। उन समय शीकी सदुपदेश सुना रहे ये मोशाओं की संख्या १०० से १५० भनुष्य के करीन थां। सदुपदेश पूर्व होने कक शोनों आगग्तुक सुव कैठे रहे। व्याख्यान समाह होने पर बन्होंने कहा।

" हमारी दिना साला के हुमने यह वेष पहिन लिया, से। हीड नहीं किया, रूद हमारे छाद टॉड बली " उसर में उन्होंने दरा 'क्षण पीछे तो साविंगे नहीं। हपावर साला दो तो हम केटी की सेवा ने रह करेंगे और हमारे हालाभ्यास में मी नृद्धि हो। सवेंगी। यह दिवना मयो मक्छन निकलने की साला नहीं है, वर्ष मोह के दश हो सन्तराय कमें क्यों योंग्वे हो।

नायुक्तकाती ने कहा में जाय एक समय टॉक जावें जाय कहेंगे बैना करेंगे में । यहां बहुत कहा सुनी हुई । सीक्षी तथा गुल-रवतकी ने जाका देने के लिये जामह किया कौर उनके भाइयों ने इन्हार किया सौर दोनों को टॉक के जाना निश्चित किया।



कारक समुदाय सहित भीजो तथा सुजरमलली मृदा साहित के सापित के बीक में खड़े रहे। कहें देगकर सुदा काहित ने साहात की कि में खड़े रहे। कहें देगकर सुदा काहित ने साहात की कि मुन दोनों इनके साथ टॉक लाओ इनके पाम टॉक स्टेट का बार्ट है तुम नहीं जाओं है है सपदें से विरंपलार कर मुन्हें टॉक पहुंचारा लाया।

दर मुन क्षिति न राने काले सायावदी कीलालको पग पर पन पड़ा एक पांत्र से राहे होगदे कीर सूच सादित से कोले कि:—



है महान में चते गए प्राय: एक प्रहर तक भीती एक पाँव से छो?
रहे, संव में नाधूनातानी हो जगर बुताबर स्वा साहिम ने कहा,
"माई! इस मतुष्य हो हम टॉक नहीं पहुंचा सकते, इन्होंने चोरी या
ऐका होई गुन्हा दिया होता तो हम चाहे जैसा घर सकते थे, परंतु
साध हा देप पहिनना हुद गुन्हा नहीं इस सिये तुन्हें योग्य जाये
देशा करके ले जाओ और हमें इस छंद से जलग रक्को 1

नायुनात्रको निसक्त हो भीकी के पास आपे और घर जाने के त्रिये नम्नता से प्रार्थना की वब भीकी ने कहा "आप मोहनीय कमें को हटाकी कि, जिससे यह सब संवाप मिट लाय !

ष्यने भाई को बहुत समय तह पह पाँव में पाँड़े देखकर माणूतातती गरुपद होगर और बहा कि, बाव प्रपने स्थान पर पबारें और साहार पानी करें। किर हम बार्वाताप करेंगे प्रधान को भी वर्षे एक वहां से प्रवास हो। वस हमत्री के पर पर लहां पहले से उद्देश्हर ये बावें | येवच पानी वया गौचरी लावे प्राहार पानी कि प्रधान सायूनातली में सीली से बहा कि, बामी टॉक से पिट्टी पाई हैं बसमें कियते हैं कि, पि. बुंबरीतातली का क्यार क्रमाया है हम हिसे बाद भीडी को सेकर लन्द बाकी |

भीजी में बहा ' सभी टोंड साने की इसता नहीं, सार सारा हैंसे दो डीक है नहीं को देसी हो स्थिति के हम दिवरने रहेने, परं



हुई। उनके साम के ज्ञान संवाद में भीजी को भाषार ज्ञानद भाषा भीर क्रीकेक द्रान सम्पादन होता था ।

रामदुरा का चातुमांस पूर्ण हुए प्रधान मालावाद कोटा प्रभृति को भोर हो वांचा महाला पुरुष माथोपुर पथारे। पाठको को विदिश्य होगा कि, माथोपुर में शीली का मोसाल या। बीर उनके मौसाल एक का बमीनुराग कथिक प्रशेतनीय था। सीली को कैसे २ परि-स्ट सहन करने पहे यह सब वे लानते थे। सीली के मामा के पुल करमाँचरजी (देववएजी के पीत्र) माथोपुर निवासी मायापंदणी पारवाद प्रमृति सीली तथा गुजरमललीकी लाला के लिये दोरीगि की टॉक कावर दनके कुटनियमों को नाना विधि से समना दीए। की

प्रयम भीकी की मानु भी पांदर्श्वर काई की करन करने पर करोने करा कि, क्टू को (भीकों की अपीमिनी). पृक्षने दो। कनकी कोर में क्या कक्ष मिलता है।

मारी में दिर पुत्र वर्ष को बुलावर पूछा है, दीला की काता देने में बुग्हारी करा राय है है मानकेंदर काई में दिनय ट्या भैनेपूर्वक करर दिया " कादने कमार में रहने के लिये जिटने प्रयत्न हो। सबे किदे परानु यह निष्कृत गर । बाद की कादने की हिटलेंदियाँ कहते करते करलेंद होती हैं इसलिये काद की परमार्थी में हिटलेंदियाँ







भीनी को दीवित हुए पश्चान् भी विशानलालजी नदाराज से माप्तालजी ने दिनय की, कि चाप भीजी के साथ टॉक प्रधार कर दमारी मातुर्थी के दर्शन की व्यक्तिया पूर्व करों । मदाराजने कहा जैसा भावसर ।

उत्प्रधान् महाराज साहित टॉक प्रयोर कीर वहां एक है। राष्ट्र नह इरोन दे हाहोती की कोर विहार किया कीर वहां से मालरा-पाटन प्रयोरे !

धंवर् १६४६ का चातुर्माध भाकरायादन किया। वहां धर्म का बहुत वयोग्र हुका, परस्तु भीकी महाराज के गुरु के भी गुरु की कीश्वाद करने काला महाराज के गुरु के भी गुरु की किशान काला महाराज की तु को बनके कानाहि गुर्हों को क्रिश्चिक करने बाले कालाम भूत से बनका इस चातुर्माध में स्टर्मवास होताया इस काल्य मीजीको बहुट दु:स हुका। परस्तु जिहसी की क्रियरता मीट का खंगार का खंगार का सामने काले हुएत्ट बने बहुन करने के लिये करिक्स होगार कीर दीर वाक्यों की मतहम पही से इस पात की भरने हमें।





सारवान्ययन में कलान्त कारोगी हुआ। शीवी अविरत सीति से सारवान्ययन काने लगे। शानमें आधिक वन्नति की। इनकी ज्याख्यान हैती भी क्वन कोर जाकर्षक होने से आपकों में भी सानकीय और धर्म भावना रहने लगी।

चातुर्मास पूर्व हुए बाद रामपुरा से विहार कर शीदानोड़ मुद्दान पर पंडित मुनि हुई चौयमलजी महागज विरानते थे वहाँ पधारे और अपना धामिप्राय कहा । टॉक मीयुत नायू रासजी वस्य को भी यह खबर भिलते ही वेभी कानोड़ काये और शीलो महाराज की इच्छानुसार उन्हें अपनी नैजाय में तेने के लिये शीमान चौयमलजी महाराज को आज्ञापत्र लिखा दिया, तर उन्होंने अपने बड़े शिष्य वृद्धिचंद्रजी महाराज के शिष्य बनाकर शीजी महाराज की व्यपनी चन्प्रदाय में से लिया। यह घटना हुंग्या (मेबाड़) मुद्दामपर संवन् १२४७ के मनसर शुक्ता १ शनिवार की हुई। तलझान वे भीमान चौयमत्तरी महारामधी साताम विचाने लेगे। यहां उनकी सातिक राक्षिका कथिक विकास हुआ। ज्ञानी गुरुके समागम से सुत्र ज्ञान ने आशावित बन्नति ही, निश्विचार चारित्र पातन से वे गुरु के भीविषात्र होकर लोगों में प्रवनीय और कीविं के बेलिमह सहश होयए। " सासंगति: क्यद कि न करोति प्रसाम ?"

चं. १६४६ का चातुनांस सद्गुरुवर्ष शीचौधनलली नहारात के साथ कानेए में किया ।



इह दरमं न कर सहा और सापुकों के पैथे तथा निर्भयता की क्षों के का यह समय निर्दित्र समाप्त हुझा । इस युगमें भी पारित्र इस खरना प्रसाद तिर्थेचों पर दिखा सकता है, जिसके अनेक इदाररस पूच्य भी से जीवन में मिलेंगे ।

धंबत् १६५० वा पातुमांच श्रीमान् पौधमलजी महाराज के परएश्वत के समीप रहकर जावहमें किया। श्रीजी के समागम तथा सर्वोध से जैन प्रजैन इत्यादि लोग हर्षित हुए प्रौर शानशाद्धि कर क्रिकेटचररावण की।

संबन् १६५१ वा पातुर्मास निम्बादेदा (मालवा) संबन् १६५२ वा होटी साददी (मेवाद) भीर सं० १६५२ वा पातुर्मास आवद में दिया। मी जी नदाराज पार्तुमास या रोपकाल जहाँ २ विसालते ये पदां वहां के लोग मनके स्परिमित सान निर्मात पारित्र वावपुत्रता इत्यादि सामागरण गुर्हों से मुग्य बनवद भीजी वी मुक बंठ से प्रशंसावदे थे। दिन पर दिन बनवा दिनस परा देश देशान्त्रस्थ में विस्टिरित होते लगा ।

'सागर दर गंभीरा।

धेरत् १६५३ में ब्यानीजी की द्वारीमक्षणी महाराज के साव भौजी कराराम राज्या दे समुद्रात दयरे | वहां मेंचे समाजार



इन्हों महापुरप की मेवा में उपस्थित हुए तो वन्हें १ सागर समान गेभीर हो कोगे 'ऐसी गुभाशिप दी कीर वह यो है यहुत सगय में सफल भी हुई । सतन सता का मेवन करने वाले महापुरुषा के वचन करावि निष्कल नहीं जाते । योग दर्शन के प्रखेता पत्रज्ञालि सुनि (जिन्हों ने हरिभद्र सूरी की मार्गानुसारी कहा है) कहते हैं कि—

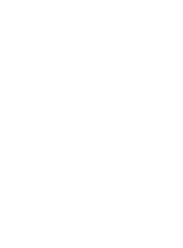
" सत्यप्रविष्टायां क्रियाफलाश्रयत्वम् "

स्वार्य: - (साथक योगी के पित्त में) सत्य की स्थिरता होने पर किया तथा फल की स्वाधीनवा (होती है)

अर्थात् अपनी इच्द्रानुसार क्रन्य को पर्भाषमं तथा स्वर्ग तर-कादि प्राप्त करा देने का बस योगी की वाणी में सामध्ये है। सत्य जिसे सिद्ध हो गया है ऐसे योगी की वाणी झमीप, अप्राविहत होती हैं। इसितिये ऐसा योगो किसी को कहे कि, तृ धार्मिक होजा तो उनके वचनमात्र से ही वह पापी हो तो भी धार्मिक हो जाता है, किसीको कहरें कि तू स्वर्ग प्राप्त कर, तो उनके कथनमात्र से ही वह अधार्भिक हो तो भी स्वर्ग नहीं देने वाले संस्वरोंको दूर कर स्वर्ग प्राप्त कर लेता है (पार्वजल गोगदर्शन)















माम बहे पहेंच हो, दी महाबन्ता की पादा की कि मुन मेरववार निवद्यां हार्याचे विद्या करते हुए चालुपीस रणवारको करी चारते. राष्ट्रम् काराव सामग्रहात् जा साथ प्रहास्त्री हुमी गाण काम म सीप्रयाप क्षेत्र सापत्र में दे से ती में में तालांगी ही से । बेंग दानी किय करें का रहे जाप रार शिक्षित बनने की सनवी इतला की हमा है है में १६५५ ५६-५७ वे तानो च एतात पुत्र की भी तेहा है वह रत्मका विदे । पनित पुरुष दिन स्थान की अपने प्राम्य है। पर्द । बता बहे ही बही क्यान कीथेश्वादहतान है। पर समाप रणन स सहर राजा व में रिलेज था (गोर्ड) रहाराज के राहरी ताहर बा खबुन प्रदार इत्रामधानीयी है। बाह्यशाल बी देन ही। इन्हें प्रकृतकारण का हु हो र पूर्व के बीचा हो दे शहात बदक्य हुए है। ब्राह्म केंग्रीय है। देशपानरे के की बर्ज देश दर्श साथे बन गया दानों की र भीते क्या १६ के का गया करें बहुत है जाता है। जेता हुनी तों। बहर के भी दें। रिहर्स हरते दिलान्ती से बन्ते हती हती ह

ं द्यायाय १० वॉ

श्राचार्यपदारोहण ।

श्रीमान आचार्य महोदय श्री चौथमलत्त्री गहाराज की सेवा में श्रीती विराजने और अपने अमृत्य यचनामृती द्वारा जनसमूह पर व्यपार उपकार कर रहे थे इनने ही में सं० १८५७ के कार्तिक मान मे आचार्य श्री चौधमलजो सद्दाराज के शरीर में व्यापि उत्तरत हुई । श्वमासागर एसे समभाव से सहन करने थे। कार्तिक मुक्ता १ के रीज रात को १०-११ वजे ब्याधि बढ़ने लगी। श्रीजी महाराज ने पुष्य श्रीकी सेवाम तन मन, व्यवर्श किया था । उनके हाथ में नाड़ी न व्याने से वे बाहर व्यापे। क्यार भी ऋपनदासकी श्रीमात जो सदर कर वहीं पर सोए थे उन्दें वह दक्षीटन कही तर्रत से श्रीसंघ के ध्रमण्य सेट ध्रमा बहुता साहित वीतालेया नथा श्रीयुत देजपालभी मचेता इत्यादि को यह खबर देखाये। इसपरस से दोते। तथा और दिवने हैं। आवड़ पूर्व श्रीकी सेवामें बाये । सेट बायर-चंदजी साहिय में नाड़ी देखी भीर पुरुशी की आवात दे खेचनम किया तुरन्त सबेनम हो उन्होंने बन्धियन साधु भावकी दे समस प्रकट आसीयना निहतना की पुनः महात्रत आरोपण

दूर शुद्ध हुए | उस समय सेठमी श्री अनरपंदती पीतिलया शीयुत तेजपालजी इसादि शावकों ने अरज की कि " श्रीमान् ! प्रापने तो आलोयनादि करके शादि करती है परंतु अप हमें और पतिथिय संघकों किस का आधार है | उत्तर में पून्य महाराज ने करमाया कि " मेरे पश्चान् सम्मदाय की सार संमाल श्रीलालजी करें " शीजी महाराज के अनुपम गुर्जों से शादक लोग परिचित ये और इसीलिय आचार्यपद को शोजी महाराज दिपावें ऐसा वे पहिले से ही पाहते ये सवब सबने पूच्य शीकी उत्युंक आज्ञाको असानंद पूचकशिरो-धार्य किया !

दूसरे दिन कार्तिक शुक्ता २ के रोज देगदर को चतुर्विध संय ग्रकित हुआ और भीमान केठ स्वमरंचद्रजी कादिव पीतिलया ने आचार्यश्री की सेवा में पुन: चतुर्विध संपके समस् आज की कि कि लेजितासनस्य आकारा में आप सूर्यवन् प्रकास कर रहे हैं यह सूर्य विरकाल तक प्रकाशित रह हमारे हर्दय में ज्याप्त श्रतानान्धिकार को दूर करता रहे यह हमारी हार्दिक भावना है। परंतु आपक श्रीर में ज्याधि है इसीलिय सम्प्रदाय में जो मुनिराज आपकी साम जेवते ही उन्हें युवाचार्य पर प्रदान करने की कृपा कर ऐसी में धीसीय की तरफ से नम्र प्रार्थना करता हूं "इसपर से आपार्य मी ने पुरुवर्षुज सर्वदा सुगोग्य मुनिभी श्रीलालजी महाराज की मुनापार्यपर प्रदान करने का हुकम करमाया तय श्रीलालजी म



स्रोर पैलगई, संद्यादद्व सावक आविकाएँ बाइर मानों से पूज्य भी के प्रांतार्थ जाने लगीं, निरंत चड़ते परिन्हान से कार्तिक शुक्त = भी शत को पूथ्य भी कैंग्यनलकी। महाराश मांतिपूर्वक चीदारिक वेह जो त्याग स्वंग शिकार |

दूसरे दिन स्वर्धात् सं ० १६५७ के बार्विक गुला ६ के दिन सबेरे रक्तान संय सायार्थणी वा निर्धाण गद्दोस्तव करने को एवतिन इच्चा १ दुर्शन थे स्वाव हुए सान्य प्राप्तों के सावक दड़ी संयस में यद्दों १५ रिशा थे । इस समय चतुर्विय संय ने धीनात् मुक्ताचार्यकी मद्दाराज को स्वाचार्यवदासङ्ग करने के सिवे इनके गुरु की सुदि पद्दारी गरायाज में विक्षाण की।







भीतवाहे से फनशः विद्यार करते र नागोर से पूर्व भी देह प्यारे वहां के ठाकुर साहित कार्यामहर्त्तो राजोद पूर्व भी के व्याक्ष्मान में आते पूर्व भी की प्रभावसालो वाणी सुन उन्हें भविशित जानंद होता था। उनहोंने दारु, मांस हमेरा के सिये रचना दिवा था, राजिभोजन का त्यान किया, उनका जैनवर्म पर बहुत देन होगया था। उनकी नवकार महानंत्र पर जातुन कहा जन गई भी वे ठाकुर साहित प्रति दिन हाः सामायिक प्रते चे र महीन के हाः पौष्य करते थे यह सब प्रतान पार्यक्री—करून प्रतानी पूर्व भी के सत्तन कीर सहुनेश का मा।

शोधपुर (पातुनीत) से० (६४७ का पातुनीय को बहुत में किया इस पातुनीन में पूथ्य की की अमृतदाग करने से अन्तर कर कर हुआ है। स्वकार दुआ । वैप्युव भगीतुवादी कावा १०—३० वर हुआ है। के अपूर्व करदेकातुत का पात कर जिन्हरीतुनकी को जिन्हें साम कर कीपुन गुलादक्षकी। अम्बास को इन्हरी कावा है। बेने ।

लाहरा - पीपास में जिएन का मी गाउँ की मामन महीने में भीनाय पुविदेशकी नारणक के मान कुछ भी कहर पुत्रोहें हैं पूर्व भी के परिचल की पान करने के दिना हैंका की पाय हुन भाई निरोत्तालों की मानकृत माने के भी महीनक मानक का है है है जो हुन।



(१६५)

दत्तक पुत्र को भी द्रव्य के इक के साथ २ इस सद्गुए का भी हरू प्राप्त हुआ है।

इस पातुर्मास के दरन्यान एक बच्छावर नाम की वेरया ने पूच्य भी के सदुरदेश से वेरयायुत्ति का विल्कुत त्याम किया था तथा वह भाविकायुत्ति धारद्य करं पवित्र और भर्ममय जीवन ज्यतीत करने लगी थी कि, जो अभी भी विद्यामान है।

यीकानेर के चातुर्मास के पश्चान् पूच्य सी ने लोधपुर की तरफ विदार किया । वहां भी सुञ्जातालां महाराज का समागम हुझा परंतु किसी आचार्य भी की इच्छा के विरुद्ध ने प्रथक् विचरने लगे। इस कारण से भीमान् के हृदय में जावरे वाले सेती को अपने साथ शामिल करने की प्ररुद्ध ! किर वहां से वे क्रमशः विदार कर मेवाइ में प्रथरे चद्दयपुर संघ की कई वर्षों से चातुर्मास के लिये विनन्ती भी इसलिये से ० १६५६ का चातुर्मास इदयपुर में किया ।



श्रष्यया १२ वाँ

अपूर्व--- उद्योत।

पूरव भी का चातुमांस दोने के कारल बदयपुर संघ में बात-न्दोत्मव हा गया पहिले कभी किभी स्थान पर पश्चीशरंगी खान-यिक होने का युत्तान्त नहीं सुना धा । वह वधी धरमी यहाँ वर हुई इस संबर-करणी में ६२५ वहवाँ की चपहिंचति की चावश्यकता होती है। लोगों का परसाद इतना चाधिक बड़ा था कि, चिनौह निवासी मोहसिंहणी सुराना ने एक ही बासन पर एक साथ १५१ सामाधिक हिये । एवं दिन शत खड़े रहकर सामाधिक का समय इवतीत किया। इसी भाति चरीजालुकी महता ने १३१, तथा कन्हे-बालालमी भंडारी ने १३१ मानाविक खा रहकर किये और झति त्रसाइ-पूर्वक पश्चीसरमी के उत्पर सामाधिक की पचरमी सथा नवरंगी की । इस चौमाने में १००० अठाइयाँ हुई थीं। इस्रोड शिवाय सेकड़ों रहंध तथा कत्य प्रकार की भी बहुतसी सुवश्चवां हई थी।

कई खटीकों (कथाइयों) ने इमेशा के लिये जीवहिंवा इस्त्रे का स्वाग किया। इस प्रकार स्वाग करने बाले खटीकों में से किरोर, गोकल परधा, और नन्दा ये पारों भाई तथा दूसरे भी कई सटीक और उनकी स्त्रियाँ, साधु मुनिराजों के पाछ उनके ज्यास्थान (उपेदरा) मुनेन ख़ाती भी। पूज्य श्री के उपदेश से फसाई पने का धन्दा होइने के परचान किरोर खादि की खार्थिक- स्थित खच्छी होने से बहुत सुखी हो गये थे। यर्तनान समय में भी ज्याज बहुत सम्रा हुंडी पत्री का धन्दा करते हैं, जीर बाजार में उनकी साख (पेठ) इतनी बढ़ गई है कि, उनकी हजारों उपयों की हुंडियाँ विक जाती हैं। इनके सिवाय दूसरे भी कई नीच (शुद्ध) लोगों ने खाजीवन मांस, मदिरा का उपयोग करना होड़ दिया और किर्तन ही घन्यमवावतम्यी जैन-धमीवलम्यी हो गये।

गोचरी करने के हेतु पूज्य श्री स्वयं जाते ध्यार सागुदायी गोपरी करते थे | जन्य धर्म (जैनेतर) तथा धीनावस्था बाले मतुष्यों के यहाँ जाकर मणी तथा जीकी रोटी 'वेहर, जाते थे | शास्त्रों में जिन जिन जातियों के यहाँ का खाहार महण करने की खाला है उन उन के यहाँ से खाहार ले जाने में पूज्य श्री छवने मन में जरा भी संकोच नहीं करते थे |

इस वर्ष भी बाहर से सैकड़ों स्रोग पूज्य शी के दर्शनार्थ आवे थे। बन समों के भोजन आदि का प्रवन्त संप की ओर से भजी भाँवि होता थी।



शिवल सेकेटरी के पदंपर रहकर स्वयं महाराखा साहित शी फते-बिंहजी महादुर के समस्र मुकर्मों की पेशों की है, और अब ३ वर्ष से शी पूर्व १००० पूर्व शी शीतालजी महाराज के १६ वर्ष के सत्संग और सहपदेश से निशुत्तिपरावण-जीवन व्यतीव करता हूं।

किशनगढ़ नद्दाराज के सम्बन्धी (कुटुम्बा) सरदाराधिहजी नामक एक राठाड़ राजपूत जो कि, वैष्णवधर्मावलम्बी थे छौर विरक्त दशा में रहते थे। वे योग विद्या के पूर्ण अध्यासी थे। में उनके पास चर्यपूर सुकाम पर, योगाभ्यास करने के हेतु संवत् १९५३ में जावा था एक दिन उनने मुके सामने के वर्गीचे में से मेंहरी के माद का फूत तोड़कर ले जाते देखा | उसी समय तुरंत ही आवाज देकर मुक्ते युलाया और कहा कि "तुपने हाती के उत्पर से यह फूत किस तिये तोड़ा ? यदि कोई बुम्झारी अंगुत्ती काटकर लेजाय वो नुम्हें कितना दर्द हो ? क्या तुम नहीं जानते कि, जिस प्रकार तुन्हारे शरीर में दर्द होता है, इसी प्रकार यूज में भी जीव होने से उसकी दर्द होता है ?" इसके सिवाय उन्होंने फुल में के जसजीव (चलते फिरते) भी प्रत्यत्त रूप से मुक्ते बर्वजाये और कहा कि "मुक्ते मालून होता है कि, तुमने दिसी जैन साधु महात्ना की संगति नहीं की होगी इसी कारण से ही मूर्त के समान इन जीवों को कट पहुंचाते ही" | मैंने यह सुन







यो पनको पूजा थी के प्रवेश से बेराग्य प्रवत्त हो गया; इस कारण रनने तथा जावरे वाले एक गृहस्य भीषुत हीराचन्द्रजी ने पूज्य शी के पास ' हीला ' तेले का निश्चय किया ।

चानुर्मास पूर्व होते ही संवत् १६६० की मंगमर विदि ३ के दिन कम दोनों को पविराज भी शामलदासली की बाड़ी में कड़ी पूग पाम के साथ दीला देने में कार्द्र | दस प्रकार का दीख़ामदो-स्सव दुवसे प्रथम क्द्रपपुर में कभी नहीं हुका था |

श्विद्देश होराजालकी पूर्व भी के पास दीहा के ते हैं, ऐसी खबर निलते हैं। भीमान निरदर्ग सूर्व महाराष्ट्रा साहिद ने छात पूर्व छ पश् दार्था के ला सेने बाने को पेटने के लिये, तथा एक हायी काने स्वत-में के लिये, तथा मददारी पात हायदि सरदार में से मेल दिये तथा मददिश्व हैं। पहेंदी दोड़ाने के लिये इसम हो थान मछ मज है मेल दिये।

गीतुन देशातायाणी रामहिया हाथी वर देंठे सौर हुमरे हीश भारति जानेरे बाते वाहारी से देंठे । दश हाथी निशास समेन साले भारती जानेरे बाते महायों की भीड़ हाथी हुई थीं। भीतुन हीशा-शाली तारहिया से रायों थी एक देती स्वयने बात शर ही थीं। वे हर्स से हुई। सशस्त दर भीड़ से बेंदने जाते थे। शहायान महाम दूस प्रकार दें देती को बदिन साम कर दशहा कर स्थाने हैं।



" महाराज ! में चासपास के गामों में से बकरे खरीद छरले, ध-दयपुर के खटीकों के हाथ देवता हूं, मेरा यही धन्दा है; किन्छ खाज से में जीऊंगा वहां तक यह धन्दा नहीं करूंगा "। &

बहां से पूज्य श्री कानोइ पघोर । कानोड़ के रावजी साहिय ने कानोड़ पट्टे के गामों में जहां जहां नहीं, नाले भीर वालाव हो वहां भीर क्सी मकार उनका सालसा गाम ' कुरानी ' के पास जो -नभी है वहां मण्डी मारने की हमेशा के लिये मनाही कर दी उस साला की चाज तक पालना होती है । इसके सिवाय पूज्य भी के कपदेश से कानोड़ में ५० के लगभग ' १७ घं हुए।



#इस मार परिले टट्यार वाले जीतमक्षजी घटा भी हमके। पहते थे कि, अपरोक्त कटीक ने यह पंत्रा दिल्हल छोट दिया है।



प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया और श्रीधा मार्ग पहड़ा ! यह दुरामह महीं किन्त चारम श्रद्धा का एएन्त है पृत्र्य भी के बाय भाठ साधु थे। उनमें से श्राधिदांश साधुओं की उस दिन दवनान था। किसी किसी ने केवल छाज (मही) पीने का भागार (सूट) दर्बा या । योदा मार्ग व्यवीमन करते दी पदाहाँ में रखता भूल गये न्हीर दूसरी पगहंदी से पड़ शये । ज्यों ज्यों आगे बड़ते गये त्यों ह्यों महत ही भयायना कीर घना जड़ल काने लगा ! दिसक पशुका की पादवंकियें (पैरों के बिन्ह) द्राष्ट्रियोवर होने सर्यों, ,सिंद वाप इत्यादि के वतान भेदी शब्द शुवगोपर (सुनाई देना) होने लगे, इम कारण एक छाधुने पुत्रव शी से कर्ज की कि " महा-हात्र यह जतुल सब्बुच ही महाभयहर है।" महाराज ने कहा 4 माई अपन साधुओं को किस बात का दर है ? भय तो उसे होना चाहिये हो मृत्यु को अपने जीवन का अन्त सममता हो, शारीर के विनारा के साथ में भाषना नाझ मानवा हो अथवा मृत्यु के पश्चात है जो इन की मय और खापदा का स्थान मानवा है। ! जो सद्गुर है अवाद से जिनवाणी का ठोक ठीक रहस्य समस्त्रा दो एसको जाँरन और मरश में छुद्र भी न्यूनाधिकवा नहीं समसना माहिये। जीते की पाशा भीर मरने का सय इन दोनों को जला अस्म करके विवर्त में ही अपने संयम-जीवन की सच्धी कसोटी है। माया मयता को इवा में देंक दो और रहता कारण करें।



(राहि) दोना पादिये । अपने कार्य की सिन्न करने वाली राहित के सदिव निरुवय करना पादिये ।

मही के वर्तनों को पके करने के किये सुवर्ण को हार कुन्दन होने के लिये, और धातुओं को आकृति के रूप में आने के लिये अग्नि की खाँच सहकर उसनें से निकालना पहता है। इस दृष्टान्त से अनेकों विषय की बाते विचार सकते हैं। साधुलोग आसा—अद्धा याने और मन को दृद्द रहाने बाते हों तो निचारा हुआ कार्य पूर्ण कर सकते हैं। आधि, ज्याधि और क्याधि के हास बने हुए धर पोंक साधुकों को विल्कुत समीप दिशाति हुए गांवों के वीप में, अन्छे दिन में विहार करते हुए भी, साथ में मनुष्य रहाना पड़ता है यह निवंतता का नम्ना है।

विशुद्ध संगम के प्रभाव के घटरय-धान्दोतनों द्वारा महाते पर भी इतना खाधिक असर पड़ता था कि, सूर्य की उच्छता से संरक्षण करने के लिये बाइतों में भी स्पर्धा (ईपी) उत्तक होगई थी (पाने भासमान में बाइतों के जानागमन का ग्रांग नहीं हहता क्षी हावा बनी रहती थी) और छुपइसी (मन्यान्द के समय) में सीत्त बायु का खानुभव होता था और जंगली जानवर भी लिप छुप कर महात्माओं के दर्शन से इतार्थ होते थे । यहुरस्ता बसुन्परा । भी तार्थकरों के समोसरण में बाय, सिंह, बबरे, कैंडे-

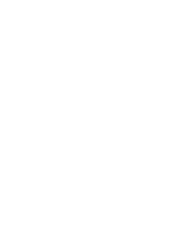


अपंचाय १४ वाँ

जन्मभूमि में धर्म जारति।

टॉड (चातुमीं) मेवाइ में हे क्यराः विहार बारे हुए कोटें, रोकर टॉड पथारे कीर संवत् १६६१ विक्रमी का चातुमांस अपनी सन्मानि टॉड में किया। यहां प्रमे का कात्यन्त बहोत हुआ। अपनेंट से दीवान यहादुर केठ टम्मेश्मलजी साहिश लोडां आवार्य थी के दर्शनार्थ टॉड पथारे थे। ये बहां के नवाब साहिश को बेंट करने को गय, उस समय नवाब साहिश के समझ आवार्य भी को देवी अनुवन बायो, जीर उद्यानिस गुर्यों की मुक्त केठ से प्रशंक्षा करते हुव उन्होंने कहा कि " यह रत्न आपकी ही राजधानी में" क्यम हुए होने से जैन शतिहास में टॉड का नाम भी स्वर्योद्धरों में साहित होगा,। यह सुन कर नदाव साहिश सत्यन्त हार्यित हुए और उन्होंने भी पून्य भी की प्रशंक्षा की !

पूज्य श्री की प्रपूर्व प्रशंसा सुनकर स्नान साहित महत्त्रद इन्द्रस्य स्थान पूज्य श्री के पास स्नाने संगे स्वीर उनके हृदय पर श्रीमी के क्षांरत का इतना प्रभावीत्यादक असर पड़ा की, उन्होंने







मीर राजा परसर सहान्भूति रखते हों यह दोनों के कल्यांण के लिये भावरयक है। एक व्योपारी बनिये का युवा पुत्र, परमार्थ पब पर कहां तक प्रयास कर सकता है यह प्रयत्न भातुमव होने से हृद लोगों की मंदनी बातें किया करती कि " पुरुषों के प्रारक्ष के भागे पत्ता है, उसका यह प्रत्यत्व प्रदर्शन श्री पृत्यत्री महाराज्य हैं। रिक्ष्य के शिखर पर बच्छेने किरते हुए भीतालजी में भीर हम समय के पून्य भीतात्रजी में 'कोड़ो और कुंत्रर जैसा मन्दर पद गया या, इस समय वह र राजा महाराजा भीर नवाब रिसयां के रिक्षर के प्योर ताल के पैरों में मस्तक मुकाते थे।

जिस व्यक्ति की इजारों लाखों मनुष्य मस्तक छु कोत हों, वैधी राज्यवेशी व्यक्तियां जिस समय एक वाण्क युवक के पैरों की रक्ष भयने मस्तक पर पढ़ाने की करना नीगाग्य समझें इस समय पक्ति की मात्म न होने वाली बनावाजी की अपूर्तता सिद्धः होती थीं।

एक चानुमवी बात कहता है कि 'मदा गिरिस्ट्रज्ञों पर परि-भ्रमण करती है, इस कारण काकी राष्ट्र-मयोदा बहुत बड़ी होती है। धान्य मनुष्य जिस नस्तु का देवन में घासमये होते हैं बड़ी वस्तु भ्रद्धावान् मनुष्य की क्षिणेच होती है। इससे जिस कार्य का प्रयस्त करना दूसरें का अम्मतन प्रजीत होता है एमी



में बाले सांतुद्धों को ही में गेरे सांतु मान सकता हूं। यदि इस व्यमीता को कोई उन्नेंबन करे तो उनके साम समापारी के छे-बन्ध को मह बरने में में तिनक भी संकोष न करूँ इसका कारक यह है कि, जिस कर्वक्रम के लिये कुटुनियमों सीर संसारके सम्बन्ध को होड़ा है उस कर्वक्ष्म में सन्तराय करने बाले का साम मीरि सम्बन्ध त्याका है। परस्पर प्रेम पूर्वक संयम समाप्रात हो गया।

चित्र रेशि से विद्यारें से मास्म हो कि, सहकार की भी सीमा हो सकते हैं। साम्त्र की प्रतिष्ठा कोर पारित्य के काद्यें जब तक क्षत्रत रहें दव तक ही सहकार सम्भव रह सकता है, स्त्यान उनकी हर पूरी होते ही क्षत्रहकार ही कावरणक है कार्ता पर पत्यर बाँधकर क्यार समुद्र नहीं हैर सकते । किस हेत्र म्याय कौर कौनमी नीति साधने से सहकार या अमहशार करना पड़ता है इसका गम्भीर विचार किथे विद्याप किभी प्रकार भी कानुमान नहीं कर सकते । भारी कौर स्ववस्थित झासन के विना प्रगति क्षत्रम्भव हो है । किसी भी कार्य में काल्यवस्था सुनी, कंपा सुपी कौर गहण्य बहुआ गई। विच प्रचारक चेप रोकने का बचन रामकार स्वाप क्षत्रहकार है । समाधारी यह बहुआर का मार देखने का समीनेटर यंत्र ही है ।

श्रीर से सापु होने के साद ही मन से भी सापु हो । मलब् सुंदाने के साद ही मन को भी मूँदा हुआ। सम्मेतनो त्याग का शुरू







हुनि देस महते हैं। उनके कारीम नहने से वे सामान्य महान्य को कार्याय हो। क्षेत्र भी हुन द पहार्थी पा कानुभव वर सबते हैं। प्राष्ट्रीन निवसों को स्वयं समझते पर्य समझते का उन्हें पूरा कवकारा भिलता है उनको नवयं सपनी ही कार्या का विभागत ही करने का है। हिन्तु की सम्पन्नाय के लिहालन पर विशालता है। कार्या पहारा के कि निवस मी प्राण्य से (जीकेंद्र, बहुत ही) प्रया करना पहारा है। मुनिया की जवाबहारी दूसरे सर्वे की प्रयोग्या सीज विरोद पर्यो है। स्वयं की कवाबहारी दूसरे सर्वे की प्रयोग्या सीज विरोद पर्यो है।

होतपुर--- पानुर्वाम) मेरन् १६६२ का पानुर्वाम पूर्व कीने ये पहुर से विधारमधर्मी, परन्तवर्मी, दिन्दू, मुक्तमान हरासे मनुष्य सदेव कीने महागत के यपनागृत का पान कर (पहन्य कर) गामुम होत से । भीर स्थाय, मनाह्यान, नवपूर्व क्या संवर-कारी कर पान पान्त करते से । कई मांनाहारी होसों ने मांच सहस्य सामाध्यान का ना न कर दिया और हमाने पानुकों हो समाहान निवासका ।

को बहुर शाहुर्व संपूर्ण शब्दे शिकात पुरुष भी सि सहस्रक्ष है इसमा के बाहुरू है। प्रविक्ष में इसमें के उन्होंने के अब कारों के सामन क इसमें के बाहुरू है। प्राय प्रधानमञ्जू हुए। जी में या संस्कृत के इसमें बहु प्रकृति में प्रविद्यालया हुए। जी में या स्वास्त्र के



अध्याय १६ वाँ

रत्नपुरी में रत्नत्रयी की आराधना ।

क्रमशः वहां से (कोटारीया नायद्वारा से) विहार करते हुए पूज्य भी रखलाम क्रम समय के लिये प्रवारे । तब उनको की संपने पातुमीस करने के लिये चारि चामक्ष्यूनैक प्रार्थना की, किन्तु वह अखीकृत हुई । चीर रखलाम से विहार करके मोजी पंचेड़ प्रचारे । रखलाम संप के कई चम्मण्य मोनक भी दर्शनार्थ पंचेड़ गये चीर वहां के स्वर्णीय केंदन टाकुर कोहिन क्ष रचुनार्थिसहली ने

& ये रहार्गिय ठाइरसाहित तथा बनके भाई लाहित वर्तमान ठाइरसाहित भी पेनॉस्ट्रजो साहित दोनों पूर्य भी पर इतना आपेक (सता पर्य मेम) भाव रखते थे कि, उन गीमानों के फोटो इस इसक में यहां पर देना शित होगा । 'पंपेट्' यह माम मार्ग में ही होने के कारण पूर्य भी का वहां पर समय समय पर पेभारना होता कीर भीमान ठाइर साहित पूर्य भी के वपदेश कालाभ बठाकर सान्त रहमाय के होगये थे । पूर्य भी के दर्शनों कालाभ जिस समय आप रहहान में काले बस समय भी लिया करते थे ।



्ति, रतलाम के बढ़े २ वयोष्ट्य भाषकों के मुख में से पुन: २ इस प्रकार के बाक्य निकलते थे कि, " भीमान् उद्यक्षागरजी गहाराज आदि महापुरुषों के जागमन और उपस्थिति के समान ही होगों के हृदय पर वम प्रभाव तथा चरकृष्ट चरमाह दृष्टिगोचर होता है"। धर्म, ध्यान, त्याग-प्रत्याख्यान करने के लिए श्रीमान कदापि किसीको भी आप्रहपूर्वक नहीं कहते थे, वसी प्रकार न किसीको मजबूर करते थे, देशी स्थिति में भी उनका उत्कृष्ट पारित्र सीर जाम राक्तियों का जाकर्वण इतना जायेक दढ़ गया था कि लोग स्वयं ही त्याग-पश्चक्खाण, धर्मध्यान, जप, तप, स्रंधादि विशेष'२ उत्साह के साथ हार्दिक- वर्गगों के साथ करने लगे । इस समय संवर करणी, धर्मजागृति और ज्ञानशृद्धि इतनी अधिक दुई यी कि.. पिहले वर्षों से उसको चौतुनी कहने में विनिक भी आतिशयोक्ति न होगी ।

इसके क्षित्राग विशेष वित्तावर्षक यात यह है कि, राज्य कर्म-चारी गण काशु महारताच्यों के सरक्षंग का लाभ गहुत कम वठाते भे, किन्तु शीमान के विशासने से उनकी चानुरम प्रशंका सुनकर राज्य के यह २ कोहदेदार, क्षतीर, उमसाद, वकील इत्यादि पूज्य श्रीकी सेवा में चाने कमें कीर उनके करर पूज्य भी का इतना चारिक प्रभाव पहने लगा कि, वे पूज्य भी के पूर्ण गुग्नमुरागर कर प्रशंसक यन गोर के ।











- दो नाहतक हो दो दिन के अन्तर से (वेले वेले पारना).

38.

वीन वीन दिन-के अन्तर से दो माइतक (वेले वेले पारना)

88

पूज्य भी ने १ आठई, २ तेला, तथा १॥ बेट महीने तक एकान्तर वपवास, तथा इसके विवाय फुटकल वपवास किये थे । भूतवन्द्रजी महाराजने ३४ वपवास का योक किया था । ३४ के पूर के दिन स्वदर्भी कन्ययमी, लोगों ने स्योपार भन्भा बन्द करके ययाशाक्त जल, नियमादि किये । कसाईखाने की ४४ दूकाने बन्द सही तथा ककेरा, तेली, कंदोई, योकी, संगोज इस्वादिकों का ज्यावार



ञ्चध्याय १७ वी

मेवाड़ श्रीर मालवे की सफलता पूर्वक यात्रा

रतज्ञाम से विदार करके भीनान भाषायाँजी भी बड़ी सादही (मेबाइ) पथारे बहां सेवन् १६६३ पौप वदा ३ के दिन भी सहसीपन्द्रभी महाराज जो कि, इस समय विदामान हैं, सनके सोसारिक भवत्या के पुत्र पसाजालजी ठचा रतनलालभी अ ये दोनों भाई तथा पकाजालजी की भी हुतास्यांजी ऐसे एक ही कुटुम्ब के वीन जनों में यन, माल, जीमन इत्यादि का दान करके प्रश्ल वैदाग्यपूर्वक दीक्षा स्वीकार की ।

माई रवनतावती था (सन्दन्ध (सनाई) हो चुका या स्तीर दिवाह होने की वैदारी थी, ऐसी दशा में भी उन्होंने दीता हे ती ! रवनताबती को कमर योड़ी होते हुए भी वे सत्यन्त मिन-भागाती, भीर बीर, गम्भीर स्तीर संस्कारी पुरुष थे, स्तीर जनकी जानगाति, भी स्वयन्त बड़ी हुई थी ! कमकी ज्यावयान शैती भी स्विक प्रशाननीय थी ! कई भावकों का ऐसा सनुमान या कि, भी हमनीपनदुओं महाराज की सम्बद्धात को यह महानुमान प्रकाशमान























बात भाषुत शोभालालजी दोशी ने पूज्य भी के पास दीहा ली. उस समय कान्छरन्स में आये हुए हजारों मनुष्य सत्सव में शामिल हुए थे। सीमान् मोरवी और लॉबर्ड़ी नरेश भी विराजमान थे. दीहा देने के प्रथम पूज्य महाराज ने करमाया कि, भाई तुम घर बुदम्य इत्यादि त्याग कर मेरे पास दीनित होने आये हो परन्तु समय का कार्य महान् दुष्कर है। अनुभव हुए विना कितनी ही बात ध्यान में भी नहीं बाती, इसलिए पूर्ण विचारकर यह छाहस करो. फिर दूसरी यह बात भी याद रखना कि, जबतक तुम पंच महामत शुद्धतापूर्वेष पालन करोगे पश्वेतक में तुन्द्रारा साथी है. सगर इसमें जरा भी दोष लगावा कि, में तुन्दारा खाय होड़ दूंगा. तुन्द्रीर और मेरे धर्म की ही सगाई है । यों पूज्य की ने सब सं-यम की दुष्करता दिखाई, इसके एतर मैं भीयुत शोभालालकी ने चर्ज की कि, महाराज भी जदतह मेरी देह में प्राण है तदतक र्भ क्षादर कावशी और काव हुने जिसकी नेशाय में टीवॉ से कन भेरे गुरदेव की ब्याहा का पालन सक्ये दिल से करता गहुँगा, किर मूख्य भी ने विधिपूर्वक शिए। शी।

शिरायों की संस्था कहाने का पूछ्य भी को किन्दुल हो।स न स इन्होंने कारनी ने बायका एक भी शिष्य नहीं किया एकहम मुहन करदेने की पद्धति से वे किन्दुली विहद्ध से । वे शिक्षा के क्लेस् करियों को कारने पान रखकर शास्त्राध्यास कर दे से । वेंशर्म





जाते हैं | दिन्द करवन्त श्रद्ध लु, यमें भेमी-चौर कास्तिक देश दे उसमें भी सब कीमों की व्यवसा पोपीस पोपा वितक बंधुकों की हराके व्यक्तिकता तो ब्रावक गजन में बाल देशी हैं। प्राचीन समय के साधुकों

के श्राम खेरकार जो बंश परम्पण से गॉमित होते आये हैं बन्हींका

(२२०) जाता है। जयदुर में येखे दृष्टान्त प्रत्यक्त देखकर लेखक पहरू

यह परिलाम है। ये पवित्र संस्कार जाउदरयमान दने रहें ऐसा अपन अंदरकारण पूर्वक चाहते हैं परन्तु अपनी इस माधना का भोक्षेपन या संदेह के बेगमें बहाते हैं 'देवारी हक' का दाबा करने बाते एक सरद से समाज को नीवा दिसाने जैसा काम दर बैटते हैं। बहुत समय में स्थित रहे ये संस्कार बनैमान समय में आव-रपक हैं येथे गहत दिवार में पैठने थे दिल पबदा जाता है परन्तु यह बात सी सरद है कि, यह मान्यवा जब आरंभ हुई होगी

पूर्व दीयवा सिद्ध करने काले रॉमें येमा प्राचीन श्वाहिश्य क्रिप्टान देवा है परम्यु मायही साथ प्रमी साहिश्य में यह काल जी जिल्ली है कि, इन वहीं का दुहरयोग करने वालों को कमाजारण सारायों से विशेष मक्षा विलगी भी | एक क्षाप्टान

मन्त्रव और एक सब कानून का आता वही गुन्हा करता है ती

तह तो मबहे चारित्र धारवन्त ही पवित्र स्पीर इस 'देवासी इह' हो

खतान मनुष्य की अपेता कानून जानने वाले को विशेष सजा भित्तवी हैं स्वार वहीं कथिक विरस्कृत होता है।

भावने समाजिक नियमों (Social Contract) के भनुसार नहीं पतने वालों के सामने सख्त कदम भरने की परवानगी है कारण इस ट्यान्त से दनरों की वलट सुनट चाल चतने की जगह मिलती है एक दो को माकी दे देने से दूमरे बाईम जनोंको इस इक की खुनारी में समाज में विवैता जल फेताने तक का अधिकार मिलता है। योग्य को योग्य मान देने में आन अपनी शदा की सीमा नहीं उलांपते । संयम और साधु-धर्म की महुमान्यता निभाने में भाषने को तिनय धर्म श्रादरना चाहिये परन्तु इस विनय से ऐसा षर्थं न नि हालना चादिये कि, इब समुदाय की चाहे जेनी चाल हो निभालेना या प्रसन्तता, वडाई, करनी चाहिये अपने देवी हक -की फुक्षोड़ के सहारे व्यर्थ घनते हुए नामधारियों की कर्न के अचल निवमी का अभ्यास करना चाहिये। सत्य सनावन धर्म जिनमें वी देव जैसे उच्च सारिवत गुए हाँ उसे ही देवी हक प्रशन करना पसंद करता है। पाय-वर्ग और आवक्त-समुदाय खरने २ कर्तव्य में अपनी २ जवावहारी समक समय और भाव को सन्मख रख जीवन सार्थक करेंगे ऐसी लेखक की हार्दिक भावना है ।



कारक वारी-क्षमृत्रधारा-दृष्टि से तृत हो अपने राज्य में नीचे जिले अनुवार ओव द्या का प्रदेश किया है।

(१) नदरात्रि में जो ब्राठ भेंसे तथा १० बरूरों का वध होता था वह हमेशा के लिए भंद किया।

व दा, हिंग ताल माता को पाड़ा १, पंतेड में पाड़ा १ - गालन देशो पाड़ा १ लक्ष्मीपुर में पाड़ा १, बरदेवरा कुन् में पाड़ा २, दर्गण काचर में पाड़ा दो यों कुल पाढ़े आठ।

बक्ता। पातानेदरी में यकरे ४, पागला के खड़े में बकरा १, रण बने के नेदें में बकरे ३, मेंतरही में बकरा १ कीर परिचा नेदरा में १ वो पक्ते कुल १०।

कुन जनवर अठारह का यत्र प्रतिवर्ण होता था वह वन्द् कर दिया गया ।

 (२) क्रमाई खाता चंद ,३) तालाव में मच्छी मारना चन्द्र (४) कम्पे में अगेन भंतर.

भीगर शिवध्या सहित की स्तिन से कमहिताल पर हो तृज्य में महिती मारी याँ गुमानियत हुई इसके हे हुए सरहारिक्षित से विश्व र करने तथा मान मन्द्र करन होगा के लो प्राप्त होता। इन्हर होल्सिएणी से स्वयी लागीय के राहों से हो रहे प्रतिकृति होते मेरे बेरेट्स हिसेलमा सिक्स



